हमारी पोथी

भाग - 5

पाठ्य पुस्तक लेखन एवं सम्पादन समिति

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बेइंतिहा मेंहरबान और रहम फ़रमानेवाला है।

दो शब्द

मर्कज़ी दर्सगाह रामपुर के भूतपूर्व नाज़िम (व्यवस्थापक) जनाब अफ़ज़ल हुसैन साहब ने गभग आधी शताब्दी पहले भारतीय मुसलमानों की नई पीढ़ी हेतु आरम्भिक कक्षाओं के लिए ठ्यपुस्तकों की एक अत्यन्त उपयोगी शृंखला तैयार की थी जिसमें बच्चों के मनोविज्ञान, ानसिक स्तर, उम्र, रुचि और सामाजिक अपेक्षाओं का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया था। अल्लाह की ृपा से ये पुस्तकें पूरे देश में लोकप्रिय हुईं और इन पुस्तकों ने छात्र-छात्राओं के मन-मस्तिष्क ौर विचारों को इस्लामी रंग में रंगने का बहुत ही उल्लेखनीय कार्य किया। वर्तमान शृंखला में नके द्वारा निर्दिष्ट पथ पर चलने का पूरा-पूरा प्रयास किया गया है। अल्लाह तआला मरहूम नाब अफ़ज़ल हुसैन साहब की सेवा को स्वीकार करके उनपर अपनी कृपा-वर्षा करे। आमीन!

पाठ्य पुस्तकों का पुनरीक्षण, संशोधन और नवीनीकरण एक सतत्, लाभदायक और ानिवार्य प्रक्रिया है। हमने भी अपनी सभी पाठ्यपुस्तकों को और अधिक उपयोगी तथा मयानुकूल बनाने के लिए इन्हें नए सिरे से तैयार करने की योजना बनाई है।

भाषा बच्चों के व्यक्तित्व के विकास का एक महत्वपूर्ण साधन है। भाषा की पाठ्य स्तकों की तैयारी के दौरान हमने इस बात का विशेष ध्यान रखा है कि भाषा-बोध के लिए ऐसी ाठ्य सामग्री उपलब्ध कराई जाए जिससे बच्चों में भाषा की सभी आधारभूत कुशलताएँ — ुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने, चिन्तन-मनन और अध्ययन की क्षमताएँ — विकसित हो जाएँ तथा नमें अतिरिक्त अध्ययन के प्रति रुचि बढ़े। हमने यह प्रयास भी किया है कि जीवन के अनुकूल ‌िषय-वस्तु प्रस्तुत की जाए जिससे छात्र-छात्राओं के अन्दर वांछित जीवन-मूल्यों, मानवीय सद्गुणों े बीज अंकुरित, पल्लवित, पुष्पित और फलित हों और उनका सर्वांगीण विकास सम्भव हो सके।

पाठ्य पुस्तकों की तैयारी के समय हमने बच्चों की उम्र, उनकी अपेक्षा तथा आवश्यकता, ाभिरुचि, मनोविज्ञान और बौद्धिक क्षमता का भी पूरा-पूरा ध्यान रखा है।

हमने अपनी पाठ्य पुस्तकों में ऐसी सामग्री प्रस्तुत करने की कोशिश की है जिससे बच्च को अपने परिवेश और वातावरण के प्रति सचेत तथा जागरूक बनाया जा सके, उनके अन्त इससे सम्बन्धित ज्ञान प्राप्त करने के प्रति अभिरुचि उत्पन्न हो और उनके कार्य-कलापों यथोचित परिवर्तन हो। साथ ही, ये चीज़ें उन्हें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से अवगत भी करा सकें।

प्रत्येक पाठ के अन्त में पर्याप्त अभ्यास दिए गए हैं जो छात्र-छात्राओं में न केव भाषा-बोध, लेखन, पाठ्य सामग्री को समझने और स्मरण रखने में सहायक होंगे, बल्कि उन चिन्तन-मनन की क्षमता और व्यक्तिगत रूप से अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न करेंगे। ये अभ्या बच्चों के ज्ञान में उत्तरोत्तर वृद्धि और विकास के साधन तो सिद्ध होंगे ही, उनकी मानसिक औ शैक्षणिक क्षमता के विकास में भी सहायक होंगे।

हम अपने उन सभी मित्रों और उन सभी महानुभावों के आभारी हैं, जिन्होंने पुस्तक व तैयारी के क्रम में विभिन्न प्रकार से सहयोग दिया है। हम उन सज्जनों के भी आभारी हैं जिनव कविताएँ, लेख, निबन्ध और पहेलियाँ इत्यादि ज्यों-की-त्यों या कुछ परिवर्तन के साथ इस पुस्त में सम्मिलित हैं। अल्लाह तआला की कृपा-छाया सदैव उन महानुभावों को सुख-शान्ति प्रदा करती रहे।

हमने इस पुस्तक को यथासम्भव अधिक-से-अधिक उपयोगी और लाभदायक बनाक सुन्दर और आकर्षक रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हम अपने प्रयास में किस हद त सफल हो सके हैं, इसका वास्तविक मूल्यांकन तो शिक्षकगण, अभिभावकों और पढ़ने-पढ़ाने रुचि रखनेवाले ज्ञानीजनों के बहुमूल्य सुझावों, विचारों और टिप्पणियों से ही हो सकेगा।

21.04.2008 | मुहम्मद अशफ़ाक़ अहम
दिल्ली | निगराँ (निरीक्षक)

विषय-सूची

पाठ - 1

विनय

हे जगदीश्वर, हे कर्तार।
तू है करुणा का भण्डार॥

सृष्टि रची, आकाश बनाए,
सूर्य-चन्द्र के दीप जलाए,
भूतल पर इनसान बसाए,
तू है सबका सृजनहार।

हे जगदीश्वर, हे कर्तार॥

तू ही सब कुछ देनेवाला,
कष्ट सभी हर लेनेवाला,
जीवन नैया खेनेवाला,
देता है सबको आहार।

हे जगदीश्वर, हे कर्तार॥

तू है स्वामी, तू है शासक,
हम हैं केवल तेरे उपासक,
त्रिभुवन के हे अतुल विकासक,
महिमा तेरी अपरम्पार।

हे जगदीश्वर, हे कर्तार॥

सत्य-धर्म का ज्ञान हमें दे,
भूतल पर सम्मान हमें दे,
जन्नत का वरदान हमें दे,
हम सबका कर दे उद्धार।

हे जगदीश्वर, हे कर्तार॥

—संकलि

शब्दार्थ और टिप्पणी

जगदीश्वर	=	जगत का ईश्वर, अल्लाह	भूतल	=	धरती, संसार, पृथ्वी
सृष्टि	=	दुनिया, कायनात, ख़ल्क़, विश्व	हर लेना	=	दूर करना
सृजनहार	=	बनानेवाला, निर्माता	आहार	=	भोजन, खाना
उपासक	=	उपासना करनेवाला	त्रिभुवन	=	तीनों लोक, (धरती, आकाश और पाताल)
कर्तार	=	करनेवाला, बनानेवाला, ईश्वर			
भण्डार	=	ख़ज़ाना	विकासक	=	विकसित करनेवाला
अतुल	=	बेजोड़, अनुपम	अपरम्पार	=	असीम, बेहिसाब, बेहद
महिमा	=	बड़ाई	सम्मान	=	इज़्ज़त, आदर
वरदान	=	इनाम	उद्धार	=	छुटकारा, मुक्ति, नजात

अभ्यास

(क) उत्तर लिखिए :

1. प्रस्तुत कविता में ईश्वर के किन गुणों की ओर संकेत किया गया है ?
2. जगदीश्वर ने कौन-कौन-सी चीज़ें बनाई हैं ?

3. 'त्रिभुवन के हे अतुल विकासक' पद में 'त्रिभुवन' शब्द का क्या अर्थ है?
4. हमारा स्वामी और शासक कौन है और हम किसकी उपासना करते हैं ?
5. इस कविता की अन्तिम चार पंक्तियों में कवि ने ईश्वर से क्या प्रार्थना की है ?

ब) इन पंक्तियों को पूरा कीजिए :

1. तू है स्वामी, ... ,
   .... ,
   .... ,
   महिमा तेरी अपरम्पार।

2. सत्य-धर्म का .... ,
   .... सम्मान हमें दे
   जन्नत का .... ,
   .... कर दे उद्धार।

ग) पढ़िए और लिखिए :

जगदीश्वर	कर्तार	सृजनहार	भूतल	सृष्टि
अतुल	त्रिभुवन	सम्मान	उद्धार	अपरम्पार

घ) जोड़े लगाइए :

उपासना करनेवाला	=	सृजनहार
खेनेवाला	=	दाता
शासन करनेवाला	=	खिवैया
देनेवाला	=	उपासक
सृजन करनेवाला	=	शासक

भाषा-बोध

(क) नीचे के वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :

त्रिभुवन के हे **अतुल** विकासक
सलीम **चतुर** लड़का है।
मैदान में **दस** आदमी हैं।
गिलास में **थोड़ा** दूध है।

इन वाक्यों में 'अतुल', 'चतुर', 'दस' और 'थोड़ा' शब्द क्रमश: विकासक, लड़का, आद और दूध शब्द की विशेषता बता रहे हैं। अत: **अतुल, चतुर, दस** और **थोड़ा** शब्द **विशेषण** विशेषण के **चार भेद** हैं : **गुणवाचक, परिमाणवाचक, संख्यावाचक** और **सार्वनामि विशेषण**। यहाँ केवल गुणवाचक विशेषण के बारे में जानकारी दी जा रही है।

अकरम **अच्छा** लड़का है।
हरा तोता पेड़ पर बैठा है।
मैदान में **विशाल** वृक्ष है।
निर्धन छात्र की मदद करो।

इन वाक्यों में **अच्छा, हरा, विशाल** और **निर्धन** शब्द **गुणवाचक विशेषण** हैं। ऐसे विशेषण संज्ञा या सर्वनाम के गुण, रंग, आकार, दशा इत्यादि का बोध कराते हैं, गुणवाचक विशेषण कहल हैं।

अच्छा, बुरा, नीला, मोटा, पतला, छोटा, बड़ा, ऊँचा, नीचा, मीठा, भारतीय, नुकील इत्यादि शब्द गुणवाचक विशेषण हैं।

ऊपर लिखे गुणवाचक विशेषण शब्दों में से किन्हीं पाँच शब्दों से वाक्य बनाकर अपने शिक्षक को दिखाइए।

कुछ और काम

1. इस कविता को याद करके कक्षा में सुनाइए।

☆☆☆

पाठ – 2

प्यारे नबी

(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

लगभग साढ़े चौदह सौ वर्ष पहले सारे संसार में ज़ुल्म और अन्याय का घोर अंधकार छाया
ा था। उस समय अरब देश की भी हालत अत्यन्त ख़राब थी। लोग एक ईश्वर को छोड़कर अनेक
ाढ़न्त देवी-देवताओं की पूजा करते और उनसे डरते थे। उनके थानों पर भेंट चढ़ाते तथा उन्हीं से
यता माँगते थे। लूट-मार, मद्यपान, जुआ तथा लड़कियों को धरती में जीवित गाड़ने का सामान्य
लन था। समाज के प्रमुख लोग अनाथों और विधवाओं का माल हड़प जाते थे। गुलामों के साथ
ओं का-सा व्यवहार करते थे। कोई बुराई ऐसी न थी, जो उनमें न पाई जाती हो।

अल्लाह तआला को उनपर दया आई। उसने अपने बन्दे को सीधा मार्ग दिखाने के लिए
रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को रसूल बनाकर भेजा। आप (सल्ल.) ने
यावालों को अल्लाह का सीधा और सत्य मार्ग दिखाया।
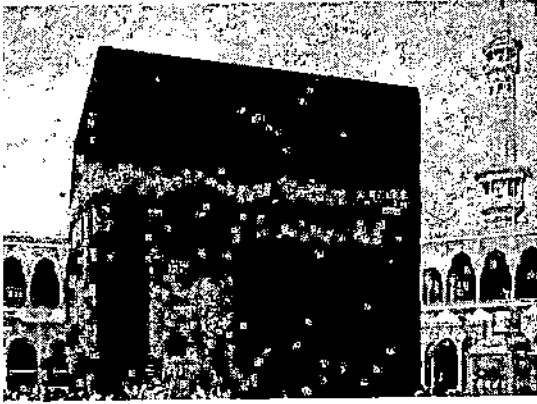
प्यारे नबी (सल्ल.) अरब के प्रसिद्ध नगर मक्का में 20 अप्रैल 571 ई. को सोमवार के दिन पैदा हुए। आपके पिता हज़रत अब्दुल्लाह की मृत्यु आपके जन्म से पहले ही हो गई थी। जब आप छह वर्ष के हुए तो आपकी माता हज़रत आमना का भी देहान्त हो गया। इसके बाद आपका पालन-पोषण आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने किया। परन्तु अभी आप आठ वर्ष के ही थे कि आपके दादाजी
चल बसे। अब आपके चाचा अबू तालिब आपके अभिभावक बने। उन्होंने पूरी ज़िम्मेदारी और
यन्त लाड़-प्यार के साथ आप (सल्ल.) का लालन-पालन किया। अबू तालिब की पत्नी फ़ातिमा
ते-असद ने प्यारे रसूल के पालन-पोषण में पूरा सहयोग दिया। वे प्यारे रसूल (सल्ल.) का हर
ाय ध्यान रखतीं। स्वयं न खातीं मगर आपको खिलातीं। अच्छे-अच्छे कपड़े पहनातीं। प्यारे रसूल
ल्ल.) ने आपकी बड़ी प्रशंसा की है।

पचीस वर्ष की अवस्था में मक्का की एक प्रतिष्ठित विधवा महिला हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) के साथ प्यारे रसूल का विवाह हुआ। हज़रत ख़दीजा अत्यन्त धनवान और दानशील महिला थीं। स्त्रियों में सबसे पहले वही ईमान लाईं। उन्होंने हर सुख-दुःख में प्यारे नबी (सल्ल.) का साथ दिया। जब आप (सल्ल.) दुष्टों की बातों से दुखी होते तो वे आपको ढाढ़स बँधातीं।
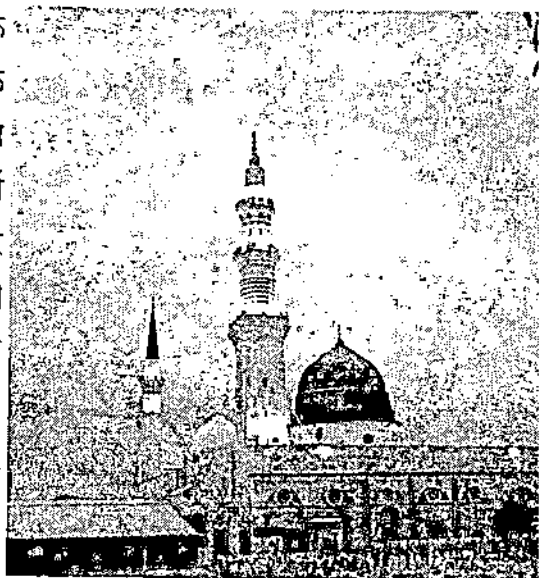
आप (सल्ल.) ने सदा सत्य का पालन किया। जीवन में कभी भी आप झूठ नहीं बोले। इस बात को आपके शत्रुओं ने भी स्वीकार किया है। इसी कारण सब आपको 'सादिक़' अर्थात् 'सत्यवादी' कहते थे। लोग आपके पास अपना सा धरोहर के रूप में रखा करते थे, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि उनका माल नष्ट नहीं होगा और वह समय पर सुरक्षित मिल जाएगा। आप उनकी धरोहर ज्यों-की-त्यों लौटा देते। इसलिए लोग आप 'अमीन' कहकर पुकारा करते थे।

प्यारे नबी (सल्ल.) की अवस्था जब चालीस वर्ष की हुई तो अल्लाह ने आपको बनाया और आपपर क़ुरआन उतारा। आपने लोगों तक अल्लाह का संदेश पहुँचाया। आपने लोगों संबोधित करते हुए कहा, ''ऐ लोगो ! अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं है। तुम केवल उसी की बन करो। किसी को उसका साझी न बनाओ। मैं अल्लाह का रसूल हूँ। मेरे आदेशों का पालन करो जिस काम से मैं रोकूँ, उससे रुक जाओ और जो मैं करूँ उसे अपनाओ। क़ियामत के दिन तुम्हें जीवित किया जाएगा और तुम लोग अपने रब के सामने उपस्थित किए जाओगे। तुममें से प्रत व्यक्ति को अपने कर्मों का हिसाब देना होगा। उस दिन से डरो। उस दिन न कोई किसी की सहार कर सकेगा, न सिफ़ारिश। अल्लाह के बन्दों के साथ अच्छा व्यवहार करो। उनके हक़ और अधि का आदर करो। तुम 'जहन्नम' की आग से बच जाओगे और 'जन्नत' के अधिकारी होगे।''

प्यारे नबी (सल्ल.) का आह्वान सुनकर कुछ लोग मान गए और कुछ ने इनकार कि विधर्मी लोग आपके शत्रु हो गए। वे आप (सल्ल.) और आपके साथियों पर अत्याचार करने ल भले लोग मान गए और ईमान ले आए तथा इस्लाम पर चलने लगे। अल्लाह ईमान लानेवालों

यक हुआ। देखते-देखते विधर्मियों की शक्ति टूट गई और सम्पूर्ण अरब में इस्लाम का डंका बज
।

प्यारे नबी (सल्ल.) बच्चों से बहुत प्यार करते थे। बच्चे किसी के भी हों, सभी आपको
थे।

प्यारे नबी (सल्ल.) से पहले दुनिया में बहुत-से नबी आए। आप (सल्ल.) अंतिम नबी हैं।
के बाद अब कोई नबी नहीं होगा। अतः अब इस्लाम के प्रचार एवं प्रसार की सारी ज़िम्मेदारी
नमानों पर है।

हम क़ुरआन पढ़ेंगे, इसपर अमल करेंगे और दुनियावालों तक अल्लाह का शुभ संदेश
गएँगे, यह हमारा प्रण है।

दुरूद हो प्यारे नबी पर
सलाम हो प्यारे नबी पर।

दार्थ और टिप्पणी

अत्यन्त	=	बेहद, निहायत	अभिभावक	=	सरपरस्त
मद्यपान	=	शराब पीना	प्रशंसा	=	तारीफ़
ढाढ़स	=	हिम्मत, तसल्ली	धरोहर	=	अमानत
विश्वास	=	यक़ीन	संदेश	=	पैग़ाम
सुरक्षित	=	महफ़ूज़	पुनः	=	दोबारा, फिर से
विधर्मी	=	काफ़िर, अवज्ञाकारी	नष्ट	=	बरबाद
आह्वान	=	पुकार, सम्बोधन, दावत	प्रण	=	अहद, प्रतिज्ञा
सहायक	=	मददगार	अमीन	=	धरोहर-रक्षक

अभ्यास

) उत्तर लिखिए :

1. प्यारे नबी (सल्ल.) कहाँ और कब पैदा हुए ?
2. प्यारे नबी के संसार में आने से पहले समाज में कैसी-कैसी बुराइयाँ फैली हुई थीं ?
3. आप (सल्ल.) ने किस उम्र में पहला विवाह किया और किनसे किया ?

4. आप (सल्ल.) ने लोगों तक अल्लाह का क्या संदेश पहुँचाया ?
5. नबी (सल्ल.) को 'सादिक़' और 'अमीन' क्यों कहा जाता है?
6. इस्लाम के प्रति हमारी क्या ज़िम्मेदारी है ?

(ख) जोड़े लगाइए :

1. मक्का	–	अभिभावक बने।
2. नबी (सल्ल.)	–	अरब में डंका बज गया।
3. हज़रत ख़दीजा (रज़ि.)	–	सदा सत्य का पालन करते थे।
4. इस्लाम का	–	प्रसिद्ध एवं पवित्र नगर है।
5. अबू तालिब	–	सबसे पहले ईमान लाईं।

भाषा-बोध

(क) विलोम शब्द लिखिए :

अंधकार, सीधा, शत्रु, सुख, जन्नत, सत्य, पवित्र।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए :

1. बरतन में **थोड़ा** दूध है।
2. **सारा** देश ख़ुशी से झूम उठा।
3. पानी **बहुत** गर्म है।
4. **जितना** हो सके, दे दो।

इन वाक्यों में क्रमशः **थोड़ा, सारा, बहुत** और **जितना** शब्द **परिमाणवाचक विशेषण** ऐसे विशेषण जो संज्ञा या सर्वनाम की नाप, तौल या माप का बोध कराते हैं, परिमाणवाचक विशे कहलाते हैं। **कम, अधिक , इतना, उतना, कितना, पूरा** इत्यादि **परिमाणवाचक विशेषण** हैं।

परिमाणवाचक विशेषण का प्रयोग करते हुए पाँच वाक्य बनाकर अपने शिक्षक को दिखाइए

कुछ और काम

1. प्यारे नबी (सल्ल.) बच्चों से बहुत प्यार करते थे। अपने शिक्षक से उन बच्चों में से किसी ए बच्चे के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए ।

☆☆☆

पाठ – 3
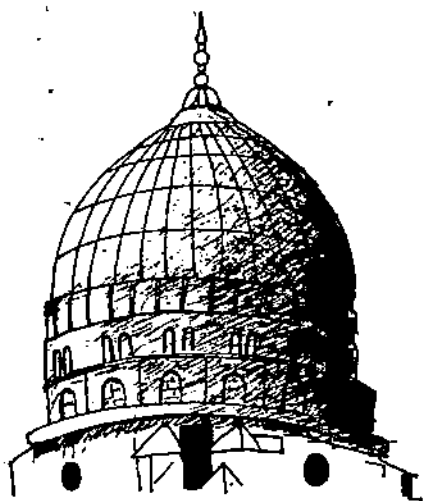
दुरूद-सलाम

नबी जी का आए जब नाम।
पढ़ें हम नित्य दुरूद-सलाम ॥

जगत् में फैला था अज्ञान,
अरबवाले थे निपट निदान,
छोड़कर ईश्वर-रचित विधान,
हो गए थे मूरख, नादान,

सिखाया उन्हें दीने-इस्लाम।
पढ़ें हम नित्य दुरूद-सलाम ॥

नारियों का करते अपमान,
गाड़ देते जीवित सन्तान,
चूसते ख़ून, न देते दान,
सताते निर्धन को धनवान,

कराए उनसे अच्छे काम।
पढ़ें हम नित्य दुरूद-सलाम ॥

बुराई फैलाते सर्वत्र,
परिक्रमा करते हो निर्वस्त्र,
पूजते चन्दा, सूर्य, नक्षत्र,
उठाते बात-बात पर शस्त्र,

डराया बतलाकर परिणाम।
पढ़ें हम नित्य दुरूद-सलाम॥

बहाते रक्त समझकर नीर,
प्राण लेते दे-देकर पीर,
डालकर डाके बनते वीर,
देखते शगुन फेंककर तीर,

छुड़ाए उनसे ये सब काम।
पढ़ें हम नित्य दुरूद-सलाम॥

ईश्वर के हैं प्यारे आप,
निछावर हों मेरे माँ-बाप,
आपका देखा अतुल प्रताप,
मिटा जग का सारा संताप,

मुहम्मद आपका है शुभ नाम।
पढ़ें हम नित्य दुरूद-सलाम॥

गिनाएँ कौन-कौन उपकार,
रहेगा आभारी संसार,
अखिल विश्व के करुणाकार,
अनाथों, दुखियों के आधार,

रिसालत उनपर हुई तमाम।
पढ़ें हम नित्य दुरूद-सलाम॥

– संकलित

ाब्दार्थ और टिप्पणी

निपट	=	एकदम, बिलकुल	निदान	=	गया-गुज़रा, निकृष्ट
विधान	=	क़ानून	सर्वत्र	=	सब जगह, हर जगह
परिक्रमा	=	फेरा, चारों ओर घूमना	निर्वस्त्र	=	नंगा, नग्न
रक्त	=	ख़ून	नीर	=	पानी
पीर्	=	दर्द	वीर	=	बहादुर
अतुल	=	असीम, अपार, अनुपम	प्रताप	=	बड़ाई, पराक्रम
संताप	=	दुख	आभारी	=	एहसानमन्द
अखिल	=	सम्पूर्ण	अनाथ	=	यतीम
आधार	=	अवलम्ब, सहारा			

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :

1. प्यारे नबी (सल्ल.) द्वारा इस्लाम के प्रचार से पहले अरबवासियों में कौन-कौन से दोष थे ?
2. प्यारे नबी (सल्ल.) ने हमपर कौन-से उपकार किए ?

(ख) केवल एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. नबी (सल्ल.) का जब नाम आए तब क्या कहना चाहिए ?
2. नबी (सल्ल.) ने किसे इस्लाम सिखाया ?
3. अरबवाले किसे जीवित गाड़ देते थे ?
4. अरबवाले शगुन कैसे देखते थे ?
5. रिसालत किस नबी पर समाप्त हुई ?

(ग) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. जगत् में फैला था ....।
2. पूजते ....।

3. .... समझ कर नीर।

4. ....के हैं प्यारे आप।

5. ....के आधार।

भाषा-बोध

(क) निम्नलिखित उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए और उदाहरणों के अनुसार दिए गए शब्दों के रूप लिखिए :

सरल	=	सरलता	समाज	=	सामाजिक
निर्धन	=	....	स्वभाव	=	....
सुन्दर	=	....	राजनीति	=	....
तीव्र	=	....	अर्थ	=	....

(ख) नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए और इनमें प्रयुक्त गुणवाचक और परिमाणवाचक विशेषणों को चुनकर अपनी कॉपी में लिखिए :

	गुणवाचक	परिमाणवाचक
अच्छे बच्चे झगड़ा नहीं करते।	....	....
काला हिरण दौड़ रहा है।	....	....
छोटा बालक दूध पीता है।	....	....
आज कम गर्मी है।	....	....
मजीद पढ़ने में तेज़ है।	....	....
वह सारा दिन पढ़ता रहा।	....	....
कितने पैसे लोगे?	....	....
फलवाला हरे, लाल और पीले आम लाया।	....	....

☆☆☆

पाठ – 4
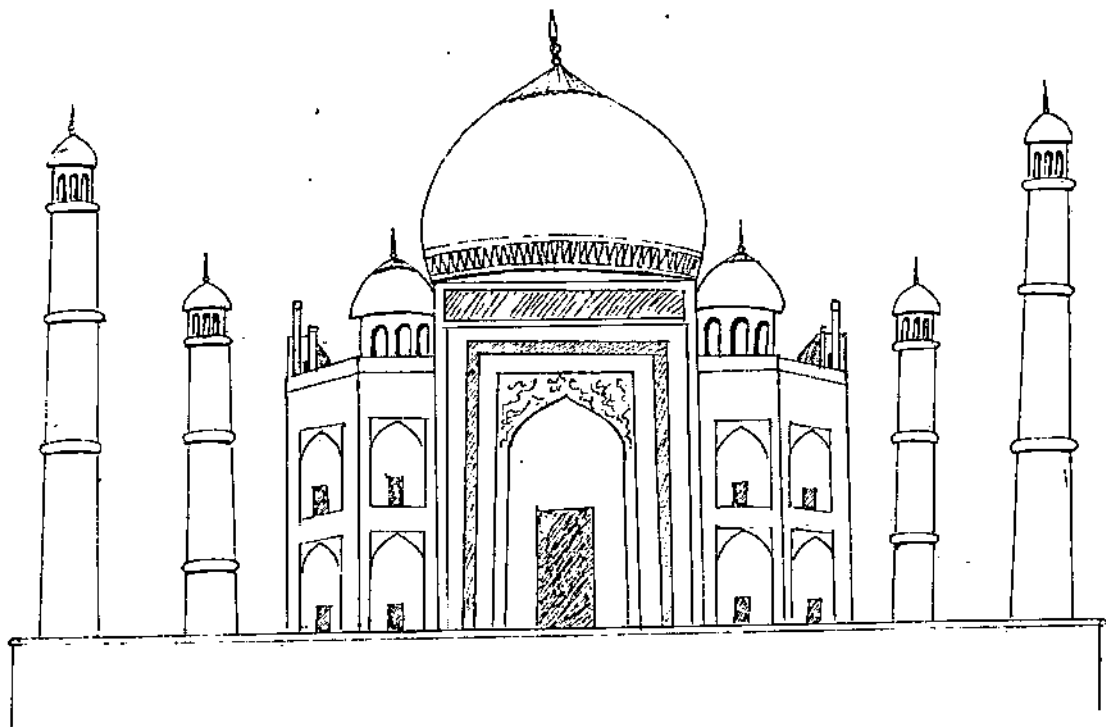
ताजमहल की सैर

शाहिद और इमरान घनिष्ठ मित्र हैं। दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते हैं। वे कई दिनों के बाद मिले
।

ाहिद : अस्सलामु अलैकुम, इमरान भाई।

मरान : व अलैकुमअस्सलाम। तुम सकुशल तो हो ? कई दिनों से दिखाई नहीं दिए ?

ाहिद : अल्लाह का शुक्र है, सब ठीक है। मैं आगरा चला गया था। बहुत दिनों से ताजमहल देखने की बड़ी लालसा थी।

मरान : (ख़ुश होकर) बहुत अच्छा! फिर तो मैं तुमसे ताजमहल के विषय में विस्तार से जानना चाहूँगा।

इमरान के अनुरोध पर शाहिद अपनी यात्रा का वृत्तांत सुनाने लगा –

शाहिद : हमने दावत नगर, ओखला (नई दिल्ली) से कार द्वारा यात्रा शुरू की। मार्ग में रुकते, ठह
और यात्रा का आनन्द लेते हुए आगरा पहुँचे। हमारे साथ कई और लोग भी थे। मार्ग में व
शुरू हो गई। वर्षा से धुले वृक्ष, लहलहाते खेत, हरी-हरी घास से भरे मैदान तथा ठण्डी-ठण
हवाएँ बड़ा आनन्द दे रही थीं। मोरों के कूजने की आवाज़ें तो हमारी यात्रा को और
आनन्ददायक बना रही थीं। यकायक हमारी नज़र एक खेत की ओर गई। हमने देखा f
हिरणों का एक झुण्ड सड़क पार करने की प्रतीक्षा में है। मैंने पहली बार हिरण देखे थे। अत
मैंने बड़ी उत्सुकता से उन्हें देखा।

हमारी कार काफ़ी तेज़ी से भागी जा रही थी। हम बातचीत में मग्न थे। ज्यों-ज्यों आगरा क़री
आ रहा था, हमारी उत्सुकता बढ़ती जा रही थी। लगभग चार घण्टे की यात्रा के बाद ह
ताजमहल के लाल पत्थर से बने विशाल प्रवेश द्वार पर खड़े थे। ताजमहल को देखकर
आत्म-विभोर हो उठा। मेरा मस्तिष्क इतिहास के पन्ने पलटने लगा। शाही शान-शौकत
रोब-दाब, रख-रखाव इत्यादि से संबंधित बातें मेरे मानस-पटल पर एक-एक करके आ
लगीं।

इमरान भाई ! यह ठाठ-बाट और शान-शौकत सदा रहनेवाली चीज़ नहीं है। उत्थान और पत
इस जगत् का नैसर्गिक नियम है।

इमरान : शाहिद भाई ! यह तो बताओ कि ताजमहल किसने बनवाया और उसके दिल में ऐसी भव
तथा सुन्दरतम इमारत बनाने की बात कैसे सूझी ?

शाहिद : इमरान भाई ! ताज को मुग़लवंश के एक महान बादशाह 'शाहजहाँ' ने बनवाया था। मुग़ल
काबुल से आए थे। मुग़लों ने भारत ही को अपना स्थायी वतन बना लिया। उनको इमारतों के
निर्माण के प्रति बड़ी रुचि थी। आगरा का ताजमहल, फ़तेहपुर सीकरी का क़िला, दिल्ली की
जामा मसजिद और लाल क़िला आदि अनेक इमारतें उन्होंने बनवाईं। उनके इस निर्माण-कार
से देश की तत्कालीन बेरोज़गारी की समस्या भी हल हुई।

इमरान : अच्छा, शाहिद भाई ! अब ज़रा ताजमहल के विषय में विस्तारपूर्वक बताओ।

शाहिद : ताजमहल संसार के बड़े आश्चर्यों में प्रथम स्थान पर है। यह आगरा के पूर्वी-दक्षिणी भाग में
यमुना के तट पर स्थित है। अर्जुमन्द बानो शाहजहाँ की पत्नी थी। उसका उपनाम 'मुमताज़
महल' था। बादशाह उससे बहुत प्रेम करता था। मुमताज़ महल ने अपनी मृत्यु से पहले
शाहजहाँ से वचन लिया था कि उसकी याद में एक ऐसा मक़बरा बनवाया जाए जो

स्थापत्य-कला का अद्भुत नमूना हो। वचन को पूरा करने के लिए शाहजहाँ ने ही ताजमहल का निर्माण करवाया था।

लगभग साढ़े सतरह वर्ष अर्थात् 1631 ई. से 1648 ई. तक बीस हज़ार कारीगरों ने निरन्तर काम किया। इन कारीगरों में हिन्दू और मुसलमान सभी सम्मिलित थे। विभिन्न प्रकार के क़ीमती पत्थर और हीरे मुख्यत: फ़ीरोज़ा, पुखराज, याक़ूत तथा सीप इत्यादि भारत के अलावा अरब, यमन, मिस्र तथा अफ़ग़ानिस्तान इत्यादि देशों से मँगवाए गए थे। संगमरमर मकराना (राजस्थान) से लाया गया था। तीस गाँवों की लगान से प्राप्त आय ताजमहल के निर्माण-कार्य हेतु आवंटित की गई थी।

गुंबद पर काले रंग की पट्टियाँ एक अनोखा दृश्य पेश करती हैं। अक्तूबर के महीने में चाँद की बारह तारीख़ से पंद्रह तारीख़ तक चन्द्रमा उनके ठीक सामने होता है जिसके कारण पट्टियों से सुन्दर और विभिन्न प्रकार की रंगीन किरणें निकलती हुई दिखाई पड़ती हैं। इन दिनों दर्शकों की अपार भीड़ होती है।

जब हम क़ब्रें देखने अन्दर गए तो देखा कि शाहजहाँ और मुमताज़ महल की क़ब्रें पास-पास हैं। दोनों क़ब्रों पर रंगीन पत्थरों को काटकर फूल एवं पत्तियाँ इस अनोखे ढंग से जड़ी गई हैं कि उनमें कोई जोड़ नज़र नहीं आता। फूलों के बीच बने हीरों के 32 टुकड़ों का जोड़ कारीगरी का अद्भुत नमूना है। पत्थरों पर बने पत्तों के चित्रों में नसें देखकर दक्ष कारीगरों के लिए प्रशंसा के शब्द मुँह से अपने आप निकल पड़ते हैं। हालाँकि ये क़ब्रें नक़ली हैं। असली क़ब्रें इनके नीचे हैं, जहाँ दिन में भी प्रकाश का प्रबन्ध करके जाना पड़ता है। ताजमहल की बाईं ओर एक विशाल मसजिद है। दाहिनी ओर उसी आकार का एक भवन पाठशाला के उद्देश्य से बना हुआ है।

मूसा नामक पत्थर से क़ुरआन की सूरा-89 'अल-फ़ज्र' के शब्दों को इस प्रकार जड़ दिया गया है कि पढ़नेवाला जैसे-जैसे ऊपर की ओर पढ़ता जाता है वैसे-वैसे शब्द छोटे नहीं, बल्कि नीचे से ऊपर तक शब्दों का आकार समान ही दिखाई देता है। संगतराशी के इस अद्भुत नमूने ने हमें चकित कर दिया। इसके अतिरिक्त अन्य दरवाज़ों और मेहराबों पर भी क़ुरआन की 'सूरतें' और 'आयतें' मूसा नामक पत्थर से जड़ दी गई हैं। प्रवेश-द्वार से ताजमहल की मूल इमारत के चबूतरे तक नहर के समान एक हौज़ है जिसके दोनों ओर पत्थर की सड़कें बनी हैं। इन सड़कों पर लोग आ-जा रहे थे। इनमें अनेक विदेशी पर्यटक भी थे जिनके हाथों में कैमरे थे और वे चारों ओर से ताजमहल के फ़ोटो ले रहे थे। इन सड़कों के पास में अष्टकोणाकार

क्यारियाँ हैं, जिनमें घास उगी हुई है। उनमें सर्व के पंक्तिबद्ध वृक्ष बड़ा सुहावना दृश्य प्रस करते हैं। लम्बे हौज़ के बीचों-बीच संगमरमर का एक चौकोर हौज़ बनाया गया है, जिस ऊँचाई पाँच फुट है। दर्शक इस हौज़ पर बैठकर ताज का आनन्द लेते हैं। हौज़ में चौब फ़व्वारे लगे हुए हैं। अब वे फ़व्वारे बन्द पड़े हैं। संगमरमर के इस श्वेत हौज़ में रंग-बिर मछलियों तथा ताज के मनोहर प्रतिबिम्ब को देखकर दर्शक मुग्ध हुए बिना नहीं रहते।

इमरान : (बात क़ाटते हुए) अब ये फ़व्वारे क्यों नहीं चलते हैं ?

शाहिद : मुग़लकाल में यमुना नदी से उनमें पानी आता था और वे दबाव की तकनीक द्वारा निरन चलते रहते थे। उन फ़व्वारों में दबाव की तकनीक वास्तव में चकित कर देनेवाली थ मुग़लकाल में और उसके बाद भारत की जहाँ अन्य सम्पत्तियों को अंग्रेज़ों ने नुक़स पहुँचाया, वहीं उन आतताइयों ने दबाव की उस तकनीक को भी ख़राब कर दिया, तभी से बेकार पड़े हैं।

हम मूल इमारत की ओर बढ़े और जूते उतारकर चबूतरे पर पहुँचे। यमुना के किनारे ऊँ चबूतरे पर गगनचुम्बी, चारमीनारों के बीच गोलाकार संगमरमर द्वारा निर्मित गुम्बद देखते बनता है! ताजमहल के अनुपम सौन्दर्य पर हम मुग्ध हो गए।

इमरान : क्या उस समय भी इतने कुशल इंजीनियर मौजूद थे जिनकी निगरानी में इतना उत्कृ निर्माण-कार्य हो सकता था?

शाहिद : हाँ, क्यों नहीं! उस समय भी कुशल इंजीनियर होते थे। ताजमहल के निर्माण-कार्य व देख-रेख शाही निर्माण-विभाग के वरिष्ठ और प्रसिद्ध इंजीनियर मुकर्रम ख़ाँ तथा मीर अब्दु करीम को सौंपी गई थी।

नक़्शानवीस रोम और समरक़ंद से बुलाए गए थे। पच्चीकार, ख़ुशनवीस, गुलतराश गुंबदसाज़ तथा अन्य कारीगर भारत के विभिन्न प्रान्तों से तो आए ही थे; अरब, ईरान, बल्ख़ बुख़ारा, इराक़ एवं सीरिया इत्यादि देशों से भी वेतन पर बुलाए गए थे। उन कारीगरों शिल्प-कला में अपनी अनुपम दक्षता एवं निपुणता सिद्ध की।

इमरान : ताजमहल देखकर तुम्हें क्या शिक्षा मिली ?

शाहिद : ताजमहल देखकर ईश्वर की महानता के सामने मस्तक झुक जाता है। उसने इनसान व कितनी योग्यता, कुशलता और दक्षता एवं कैसी अद्भुत निर्माण-कला प्रदान की है! ता

यद्यपि मुग़लों के सौन्दर्य-प्रेम का परिचायक है। इससे यह शिक्षा मिलती है कि समस्त प्राणियों का जीवन क्षणभंगुर है। एकमात्र सर्वशक्तिमान अल्लाह ही शाश्वत है। सचमुच सुन्दर-से-सुन्दर फूल भी खिलते हैं मुरझाने के लिए। इसलिए एक दिन सम्पूर्ण सृष्टि विनष्ट हो जाएगी।

ताजमहल की यादें अपने सीने में छुपाए शाम को हम अपने घर लौटे।

इमरान : अच्छा भई, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद! आपने ताजमहल के विषय में हमें इतनी अच्छी और विस्तृत जानकारी दी।

शब्दार्थ और टिप्पणी

उत्सुकता	=	प्रबल इच्छा, बेचैनी	अनुरोध	=	आग्रह, गुज़ारिश
मानस-पटल	=	मन रूपी तख़्ती	अद्‌भुत	=	विचित्र, अनोखा
वृत्तांत	=	हाल, समाचार	पच्चीकार	=	पत्थर या धातु के दो टुकड़ों में जोड़ लगाकर नक़्शो-निगार बनानेवाला
आत्म-विभोर	=	अपने में मस्त			
ख़ुशनवीस	=	सुलेखक	गुलतराश	=	फूलों की काट-छाँट करनेवाला
शिल्प-कला	=	कारीगरी, दस्तकारी	दक्षता	=	महारत, कुशलता
आवंटित	=	ख़ास कर देना, सौंप देना	अपार	=	बेहद, ज़्यादा, अधिक
चिरस्थाई	=	देर तक टिकनेवाला	पर्यटक	=	सैलानी, घुमक्कड़
भावुकता	=	संवेदनशीलता	अनुपम	=	अनोखा, अनुठा
मुग्ध	=	मोहित	नैसर्गिक	=	कुदरती
चकित	=	हैरान	आततायी	=	दुष्ट, उपद्रवी, अत्याचारी

अभ्यास

(क) उत्तर लिखिए :

1. ताजमहल कहाँ पर स्थित है ?
2. आगरा पहुँचने से पहले रास्ते में शाहिद ने क्या-क्या देखा?

3. ताजमहल किसने और क्यों बनवाया था ?
4. अक्तूबर में ताजमहल को देखने के लिए पर्यटकों की अपार भीड़ क्यों होती है ?
5. ताजमहल देखकर हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

(ख) उचित शब्द लिखकर वाक्य पूरे कीजिए :

(मस्तक, यमुना, नैसर्गिक, काबुल, प्रेम)

1. मुग़लवंश..................से आए थे।
2. उत्थान और पतन इस जगत् का .... नियम है।
3. ताजमहल .... के तट पर स्थित है।
4. शाहजहाँ अपनी बेगम मुमताज़ महल से बहुत .... करता था।
5. ताजमहल देखकर ईश्वर की महानता के सामने .... झुक जाता है।

भाषा-बोध

(क) नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए :

यह किताब किसकी है ?

वह लड़का क्या कर रहा है ?

कोई आदमी खड़ा है।

क्या बात है?

इन वाक्यों में क्रमश: **यह, वह, कोई** और **क्या सार्वनामिक विशेषण** हैं। जब सार्वनामिक शब्द संज्ञा के स्थान पर अकेले आते हैं तब सर्वनाम होते हैं और जब ये शब्द संज्ञा शब्द के पहले आते हैं तब ये 'सार्वनामिक विशेषण' कहलाते हैं। इनको **'संकेतवाचक विशेषण'** भी कहते हैं। सार्वनामिक विशेषण के भी **चार भेद** हैं :

1. निश्चयवाचक (वह लड़का, यह किताब, वे लोग)
2. अनिश्चयवाचक (कोई लड़की, कुछ बात, कई उपाय)
3. प्रश्नवाचक (कौन आदमी, क्या बात) और
4. संबंधवाचक (जो लोग, जो व्यक्ति)

नीचे लिखे वाक्यों में से निश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, अनिश्चयवाचक और संबंधवाचक सार्वनामिक विशेषण चुनकर अपनी कॉपी पर लिखिए और अपने शिक्षक को दिखाइए –

वे लोग घर गए। जो लोग बाहर बैठे हैं, उन्हें बुलाओ। कौन लड़का बात कर रहा है ?
कुछ उपाय करो। यह किताब मेरी है। कोई लड़का इधर आया।
जो किताब तुम्हारी हो, ले लो। कौन-सा काम करोगे ? कोई काम भी कर लूँगा।

निम्नलिखित उदाहरणों के अनुसार क्रिया से विशेषण बनाइए :

टिकना =	टिकाऊ	पढ़ना =	पढ़ाकू
कमाना =	....	लड़ना =	....
बिकना =	....	पालना =	....

और काम :

अपने राज्य के किसी दर्शनीय स्थल को देखकर उसका वर्णन करते हुए अपने मित्र को एक पत्र लिखिए।

☆☆☆

पाठ - 5

संकल्प

अमन दौड़ते हुए अपने घर के अन्दर घुसा। उसके हाथ में अख़बार था। वह जल्दी-से-अपनी माँ को वह ख़ुशख़बरी सुना देना चाहता था जो अख़बार में छपी थी।

"बेटे, क्या हुआ ? इतनी तेज़ी से क्यों दौड़े आ रहे हो?"

"रिज़ल्ट आ गया माँ ! आपकी दुआ से मैं पूरे राज्य में फ़र्स्ट आया हूँ।"

"जियो मेरे लाल, मुझे यही उम्मीद थी!" अमन की पीठ थपथपाते हुए उसकी भाव-विभोर होकर कहा और वे दोनों अतीत में खो गए। मैट्रिक का फ़ॉर्म भरने से एक दिन पह बातें उन्हें एक-एक करके याद आने लगीं।

उस दिन अमन बड़ी बेचैनी से अपनी माँ का इन्तिज़ार कर रहा था। माँ देर से आई। चेहरा उतरा हुआ था।

उसे देखते ही अमन ने पूछा, "पैसे मिले माँ ?"

"नहीं बेटे, फूटी कौड़ी भी नहीं मिली। मैं उन सबके यहाँ गई जहाँ पैसे मिलने की उम्मी किसी ने भी नहीं दिए।"

"चौधरी साहब ने भी नहीं ?"

"नहीं, चौधरी साहब ने भी नहीं। मैंने उनसे बहुत विनती की। कहा कि मेरा बड़ पन्द्रह-बीस दिन पहले दिल्ली से मनीऑर्डर कर चुका है। डाक बाबू कहते हैं कि दो-चार दिनों आ जाएँगे। लेकिन चौधरी साहब ख़ुद ही अपना दुखड़ा सुनाने लगे। कहने लगे कि अबकी सुखाड़ में सब कुछ बह-दह गया। हम ख़ुद ही मुसीबत में हैं। तुम्हें पैसे कहाँ से दें ?"

"अब क्या होगा, माँ ? फ़ॉर्म नहीं भर पाने के कारण परीक्षा में नहीं बैठ पाऊँगा, मैट्रिव नहीं कर सकूँगा। फिर तो चौधरी साहब के बेटे रफ़ीक़ चौधरी की बात सच हो जाएगी। रफ़ीक़ ब दोस्त से कह रहे थे कि अमन मैट्रिक पास नहीं कर सकेगा। पूरे गाँव में आज तक किसी ने मैट्रिव किया है क्या ? मैं ख़ुद तीन बार परीक्षा में बैठ चुका हूँ, लेकिन कामयाबी नहीं मिली। तो अम

क पास कर लेगा? उसे तो ठीक से दो जून की रोटी भी नसीब नहीं होती। अमन अगर मैट्रिक पास लेगा तो मैं अपनी हथेली पर बाल जमा दूँगा। मेरे लिए कुछ कीजिए माँ!''

''कुछ न कुछ तो ज़रूर करूँगी, बेटा। घबराओ नहीं; धीरज रखो। मेरा बेटा पढ़ेगा, पढ़-ढ़कर बड़ा आदमी बनेगा, इंशा-अल्लाह!'' माँ ने अमन के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

माँ बहुत देर तक इस सोच में डूबी रही कि पैसे की व्यवस्था कैसे की जाए। अचानक उसके ाग़ में एक विचार कौंधा और उसका चेहरा खिल उठा। वह घर के अन्दर गई और अपने टूटे-फूटे ने बक्से में कुछ खोजने लगी। खोजते-खोजते उसे एक छोटी-सी पोटली मिली। उसने उसे खोला। में उसकी शादी में मिले सोने के कुछ गहने थे। उन गहनों को निकालती हुई वह बोली, ''बड़ी-बड़ी ोबतें झेलीं, लेकिन मैंने इन गहनों को नहीं बेचा। मैं आज इन गहनों को गिरवी रखकर या बेचकर लाऊँगी। तेरा फ़ॉर्म भरवाऊँगी, तुझे पढ़ाऊँगी, लिखाऊँगी, बड़ा आदमी बनाऊँगी, इंशा ल्लाह! इल्म हासिल करना हर इनसान पर फ़र्ज़ है, बेटा!''

अमन अपनी माँ से लिपट गया। उसका दिल माँ की ममता का अनुपम अवलम्ब पाकर मयाबी की ऊँची-से-ऊँची मंज़िल तक पहुँचने को मचल उठा। वह बोला, ''आप बहुत महान हैं, । मैं आगे भी आपकी उम्मीदों पर खरा उतरने की कोशिश करता रहूँगा।''

– मुहम्मद इलियास हुसैन

ब्दार्थ और टिप्पणी :

व-विभोर होना	= जज़्बात से मचल उठना, भावना से ओत-प्रोत होना	संकल्प	= पुख़्ता इरादा, दृढ़ निश्चय
		अवलम्ब	= सहारा
तीत	= बीता हुआ समय	जून	= समय, बेला
रज	= सब्र	हथेली पर बाल उगाना	= असंभव काम करना
नुपम	= अनोखा, बेजोड़		
ंधा	= चमका		

अभ्यास

(क) इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. अमन अपनी माँ को कौन-सी ख़ुशख़बरी सुनाना चाहता था ?
2. अमन बेचैनी से अपनी माँ का इन्तिज़ार क्यों कर रहा था ?
3. अमन ने रफ़ीक़ चौधरी की बात को कैसे ग़लत साबित किया ?
4. अमन की माँ ने फ़ीस का इन्तिज़ाम कैसे किया ?
5. अमन अपनी माँ की उम्मीदों पर कैसे खरा उतरा ?
6. अमन ने क्या संकल्प किया?

(ख) ख़ाली जगहों को उचित शब्दों से भरिए :

(उम्मीदों, फूटी कौड़ी, अतीत, बेचकर, बाढ़-सुखाड़)

1. वे दोनों .... में खो गए।
2. नहीं बेटे, ... भी नहीं मिली।
3. अब की .... में सब कुछ बह-दह गया।
4. मैं आज इन गहनों को गिरवी रखकर या .... पैसे लाऊँगी।
5. मैं आगे भी आपकी .... पर खरा उतरने की कोशिश करता रहूँगा।

भाषा-बोध

(क) नीचे दिए गए मुहावरों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

दुखड़ा सुनाना, चेहरा उतरना, दो जून की रोटी नसीब न होना,

हथेली पर बाल जमाना, चेहरा खिल उठना, उम्मीदों पर खरा उतरना।

:) नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए :

सीमा **बड़ी** चतुर है।
बहुत छोटा कमरा नहीं चाहिए।
समस्या **अत्यन्त** गंभीर है।
देखा तुमने, **कितने** सुन्दर फूल हैं!
इतने कम पर गुज़ारा नहीं होगा।

इन वाक्यों में 'बड़ी', 'बहुत', 'अत्यन्त', 'कितने' और 'इतने' प्रविशेषण हैं, जो क्रमश: ुर', 'छोटा', 'गंभीर', 'सुन्दर' और 'कम' शब्दों की विशेषता बता रहे हैं जो स्वयं विशेषण हैं। विशेषण जो संज्ञा की बजाय विशेषण की विशेषता बताएँ **प्रविशेषण** कहलाते हैं। प्रविशेषण ान्यत: विशेषण के गुणों में वृद्धि करते हैं। बहुत, अत्यन्त, अति, बड़ा, अतीव, घोर, बेहद, महा ादि शब्द प्रविशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

आप भी प्रविशेषणवाले पाँच वाक्य अपनी कॉपी में लिखकर अपने शिक्षक को दिखलाइए।

ु और काम

इल्म के महत्त्व पर दो हदीसें अपने शिक्षक या अभिभावक से पूछकर अपनी कॉपी में लिखिए।

☆☆☆

पाठ - 6
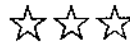
जाँच-पड़ताल

हाथों से दो काम किए, एक अच्छा और एक बुरा,
पैरों से दो मार्ग चले, एक अच्छा और एक बुरा,

यह भी जाँचा जाएगा, वह भी परखा जाएगा।
अपने-अपने कर्मों का हर मनुष्य फल पाएगा॥

क्या-क्या देखीं आँखों से चीज़ें, अच्छी और बुरी,
और सुनी क्या कानों से बातें, अच्छी और बुरी,

जो कुछ देखा और सुना, देखा-भाला जाएगा।
अपने-अपने कर्मों का हर मनुष्य फल पाएगा॥

किसी से सद्व्यवहार किया, दिया किसी को धोखा भी,
दुष्टों का भी साथ दिया, बुरे काम से रोका भी,

यह और वह हर एक क़दम, नापा-तौला जाएगा।
अपने-अपने कर्मों का हर मनुष्य फल पाएगा॥

भोजन क्या स्वादिष्ट किए, खाया रूखा-फीका भी,
रेशम-मख़मल भी पहने, पहना खादी-गाढ़ा भी,

एक समय खाया-पिया, 'माइल' आगे आएगा।
अपने-अपने कर्मों का हर मनुष्य फल पाएगा॥

— माइल ख़ैराबाद

र्थ और टिप्पणी

रखना	=	जाँचना	सद्व्यवहार	=	अच्छा बरताव
ष्ट	=	बुरा, परेशान करनेवाला	स्वादिष्ट	=	रुचिकर, मज़ेदार, ज़ाइक़ेदार

अभ्यास

उत्तर लिखिए :

1. हाथों और पैरों से लोग कैसे-कैसे काम लेते हैं ?
2. हमारे किन-किन कार्यों की जाँच-पड़ताल होगी ?
3. कवि इस कविता के द्वारा कौन-सी बात दिल में बिठाना चाहता है ?
4. न्याय-दिवस की पकड़ से बचने के लिए हमें क्या करना चाहिए ?

ा-बोध

। नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए :

मेरा कमरा आपके कमरे **से** छोटा है।

मेरा कमरा आपके कमरे **की अपेक्षा** छोटा है।

यह कमरा उस कमरे **की तुलना में** अच्छा है।

मेरा कमरा इन सब कमरों **के मुक़ाबले में** बड़ा है।

इन वाक्यों में दो या दो से अधिक विशेष्यों के गुणों की तुलना की गई है। इसे **विशेषणों की ावस्था** कहते हैं। दो या दो से अधिक विशेष्यों की तुलना करने के लिए सामान्यतः 'से' का । किया जाता है, परन्तु कभी-कभी 'की अपेक्षा' 'की तुलना में', 'के मुक़ाबले में' 'तर' और (जैसे, उच्च-उच्चतर-उच्चतम, निम्न-निम्नतर-निम्नतम) का प्रयोग किया जाता है। यहाँ इस को ध्यान में रखना ज़रूरी है कि 'तर' और 'तम' का प्रयोग केवल तत्सम (संस्कृत) शब्दों के ही किया जाता है।

'विशेषणों की तुलनावस्था' को दिखानेवाले पाँच वाक्य अपनी कॉपी में लिखकर अपने क को दिखाइए।

☆☆☆

पाठ – 7

अनमोल मोती

1. स्वर्ग माँ के पैरों तले है।
2. निरक्षर से निर्धन अच्छा, वित्त से बुद्धि भली।
3. अज्ञानी से बढ़कर कोई कंगाल नहीं।
4. ज्ञान से बढ़कर कोई सम्पत्ति नहीं।
5. विद्योपार्जन प्रत्येक मुस्लिम नर-नारी का कर्त्तव्य है।
6. जो तुम्हें रुचिकर लगे, वही दूसरों के लिए रुचिकर समझो।
7. पेट सारे रोगों का घर है। परहेज़ वास्तविक उपचार है।
8. सच बोलो, चाहे अपनी ही हानि हो जाए।
9. बड़ों का सत्कार तथा छोटों से प्यार करो, जो ऐसा न करे वह हममें से नहीं।
10. पीड़ित के श्राप से बचो।
11. कुकर्म से बचना ही महापुण्य है।
12. क्षमा कर दिया करो, तुम्हें अल्लाह क्षमा करेगा।
13. सबसे अधिक पाप उस व्यक्ति के कर्मपत्र में होंगे जो बहुत अधिक बातें करता है।
14. दया किया करो, तुमपर अल्लाह दया करेगा।
15. नेकी पर उभारना स्वयं नेकी करना है, बदी पर उकसाना स्वयं बदी करना है।

ये हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की प्यारी बातें हैं। आप (सल्ल.) अल्लाह ने हमारे मार्गदर्शन के लिए नबी बनाकर भेजा। आप (सल्ल.) ने हमें अल्लाह की इ बताई, स्वयं उसके आदेशों पर चलकर दिखाया। आपने जो कुछ कहा, जिस काम से रोका, जिस की आज्ञा दी, उन सबको आप (सल्ल.) के प्यारे साथियों ने याद कर लिया। यही स्मृतियाँ 'हद कहलाती हैं। ये हमारे लिए बहुत महत्त्व रखती हैं। नीचे लिखी कुछ और हदीसें याद कर लो।

प्यारे नबी (सल्ल.) ने फ़रमाया, "मेरे रब ने मुझे नौ बातों का आदेश दिया है –

1. खुले-छिपे हर हाल में अल्लाह से डरता रहूँ।
2. सुख हो अथवा दुख, प्रत्येक अवस्था में न्याय की बात कहूँ।
3. भले दिन हों या बुरे, किसी दशा में सीमा का उल्लंघन न करूँ।

4. जो मुझसे कटे, मैं उससे जुड़ूँ।
5. जो मुझे न दे, मैं उसे दूँ।
6. जो मुझपर अत्याचार करे, मैं उसे क्षमा कर दूँ।
7. चुप बैठूँ तो कुछ सोच-विचार किया करूँ।
8. बात करूँ तो अल्लाह की बात करूँ।
9. कुछ देखूँ तो उससे केवल शिक्षा लूँ और भलाई का आदेश दूँ।

देखा तुमने, कितने अच्छे आदेश हैं!

दार्थ और टिप्पणी

निरक्षर	=	अनपढ़	वित्त	=	धन, मुद्रा
स्मृतियाँ	=	याद की हुई चीज़ें	विद्योपार्जन	=	इल्म हासिल करना
रुचिकर	=	पसन्दीदा	उपचार	=	इलाज
श्राप	=	बद्दुआ	अवस्था	=	दशा
महापुण्य	=	बड़ा सवाब			

अभ्यास

) उत्तर दीजिए :

1. स्वर्ग किसके पैरों तले है ?
2. सबसे बड़ी सम्पत्ति कौन-सी है ?
3. प्रत्येक मुस्लिम नर-नारी का क्या कर्तव्य है ?
4. महापुण्य क्या है ?
5. अल्लाह हम पर कब दया करेगा ?
6. हदीस किसे कहते हैं ?
7. पेट के रोगों का वास्तविक उपचार क्या है ?
8. नेकी पर उभारना कैसा है ?
9. इस पाठ से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

(ख) ख़ाली जगहों को भरिए :

1. अज्ञानी से बढ़कर कोई .... नहीं।
2. .... से बढ़कर कोई सम्पत्ति नहीं।
3. सच बोलो, चाहे अपनी ही ....हो जाए।
4. दया किया करो, तुमपर .... दया करेगा।
5. .... हर हाल में अल्लाह से डरता रहूँ।
6. जो मुझसे कटे, मैं उससे .... ।

भाषा-बोध

(क) निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए :

स्वर्ग माँ के पैरों तले है। ज्ञान से बढ़कर कोई सम्पत्ति नहीं।
पीड़ित के श्राप से बचो। परहेज़ वास्तविक उपचार है।

उपर्युक्त वाक्यों के अन्त में एक चिह्न (।) लगाया गया है। इस चिह्न को 'पूर्णविराम' क हैं। सामान्य कथनवाले सभी प्रकार के वाक्यों के अन्त में पूर्णविराम का प्रयोग किया जाता है। वि का शाब्दिक अर्थ है – ठहराव।

नीचे लिखे वाक्यों में पूर्णविराम लगाइए :

मैं घर जाऊँगा वह मेरा भाई है उसका नाम अनवर है
वह पाँचवीं कक्षा में पढ़ता है शीला सुशील लड़की है
वह पढ़ती रहती है वह अपनी कक्षा में प्रथम आती है

(ख) दिए गए उदाहरण के अनुसार संज्ञा से विशेषण बनाइए :

कृपा	=	कृपालु	परिवार	=	पारिवारिक
घर	=	....	शरीर	=	....
दया	=	....	समाज	=	....

कुछ और काम

प्रस्तुत पाठ की हदीसों को याद करके उनपर अमल कीजिए।

☆☆☆

पाठ - 8
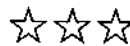
दो बैलों की कथा

झूरी के पास दो बैल थे – हीरा और मोती। दोनों में बहुत प्यार था। वे नाँद में एक साथ मुँह नते और एक ही साथ हटाते। झूरी उनके चारे-पानी का बहुत ध्यान रखता था। वह कभी भूलकर उन्हें मारता-पीटता नहीं था। पशु भी प्यार का भूखा होता है। वे भी झूरी को बहुत चाहते थे।

झूरी की पत्नी का भाई 'गया' एक बार हीरा और मोती को कुछ दिन के लिए अपने गाँव ले ने लगा। बैलों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह उन्हें क्यों और कहाँ लिए जा रहा है। रास्ते में उन्होंने बहुत तंग किया। मोती बाएँ भागता, हीरा दाएँ। इस पर गया ने उन्हें बहुत पीटा। घर पहुँचकर उसने के सामने रूखा-सूखा भूसा डाल दिया। लेकिन उन्होंने उसे सूँघा तक नहीं।
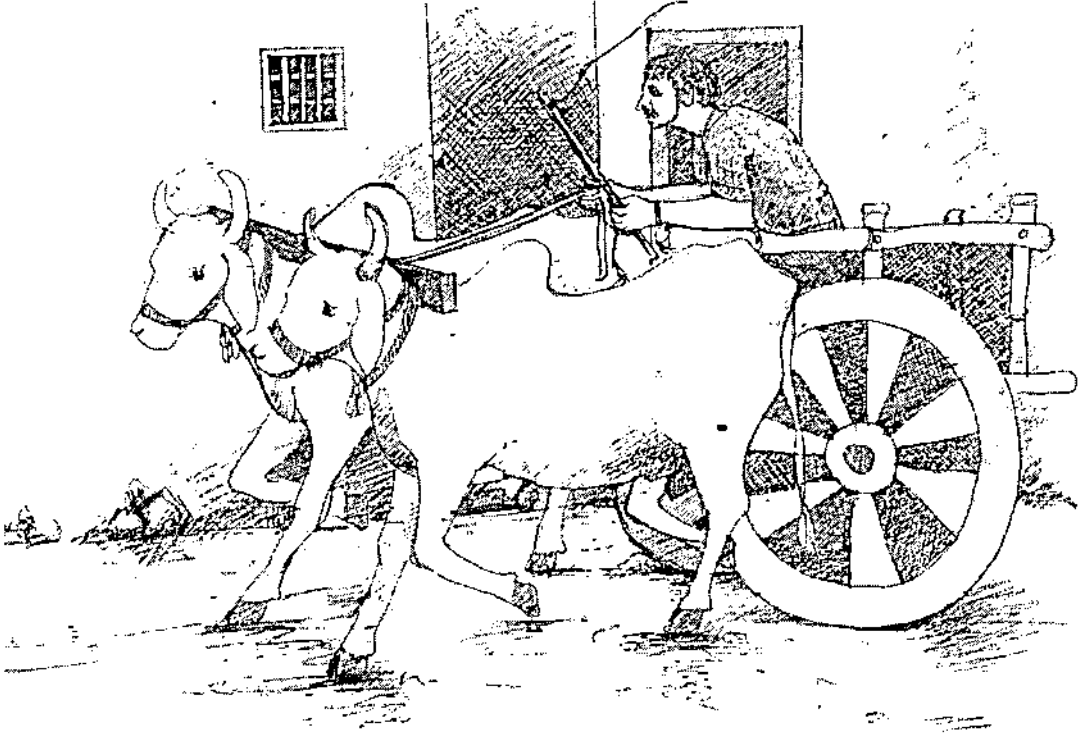
रात होने पर दोनों बैलों ने वहाँ से भाग जाने का निश्चय किया। उन्होंने ज़ोर लगाकर रस्सियाँ ड़ डालीं और भाग निकले। सुबह होने पर जब झूरी ने उन्हें थान पर खड़े देखा तो वह सब कुछ समझ

गया और प्यार से उनपर हाथ फेरने लगा। परन्तु झूरी की पत्नी उन्हें देखकर जल-भुन गई। उसने उन सामने रूखा-सूखा भूसा डाल दिया, फिर भी वे ख़ुश थे।

अगले दिन गया फिर आया। इस बार वह उन्हें गाड़ी में जोतकर ले चला। रास्ते में मोती चाहा कि गाड़ी गड्ढे में धकेल दे। मगर हीरा समझदार था। उसने गाड़ी संभाल ली। जैसे-तैसे गया पहुँचा।

अब गया ने उनसे बड़ा सख़्त काम लेना शुरू किया। वह उन्हें दिनभर हल में जोतत जब-तब उन्हें मारता-पीटता। शाम को घर लाकर मोटे-मोटे रस्सों से बाँधकर उनके सामने रूखा-सू भूसा डाल देता। वे लाचार निगाहों से एक-दूसरे को देखते रहते।

गया के घर में एक छोटी-सी लड़की रहती थी। वह बैलों की दुर्दशा देखती तो उसे बु लगता। वह रात को चुपके से उन्हें रोटी खिलाती। दोनों बैल उसके प्यार के सामने अपनी मार अं अपमान भूल जाते। एक दिन मोती रस्से को चबाकर तोड़ने की कोशिश कर रहा था, वह लड़की अ और उसने दोनों बैलों को खोल दिया। दोनों वहाँ से भाग निकले। थोड़ी देर बाद जब 'गया' को प चला तो वह भी उनके पीछे दौड़ा, लेकिन उन्हें पकड़ न सका।

अब हीरा और मोती आज़ाद थे। रास्ते में उन्हें एक साँड़ मिला। वह उनकी ओर लपका हीरा-मोती के होश उड़ गए। भागना बेकार था इसलिए दोनों ने साहस से काम लिया। साँड़ ने आव हीरा पर वार किया तो मोती ने उसपर पीछे से सींगों से चोट की। साँड़ घबराया। मिलकर काम करने बल है। दोनों ने मिलकर साँड़ को भगा दिया। मोती कुछ दूर उसके पीछे दौड़ा, मगर हीरा ने उसे द तक न जाने दिया।

दोनों अब बड़े प्रसन्न थे। आगे चले तो रास्ते में मटर का खेत दिखाई दिया। भूख तो लग ह रही थी। हरे-हरे मटर देखकर उनकी भूख और भी तेज़ हो गई। वे खेत में घुस गए और लगे मटर खाने अभी पेट भरा भी न था कि खेत के रखवालों ने उन्हें देख लिया। उन्होंने उन दोनों को चारों ओर घेरकर पकड़ लिया और कांजीहाउस में बंद करवा दिया। हीरा और मोती ने देखा कि कांजीहाउस और भी कई जानवर थे – भैंसें, घोड़े, घोड़ियाँ, गधे – सब के सब कमज़ोर और दुबले-पतले। वह किसी के लिए न चारे का प्रबंध था न पानी का। 'यहाँ कहाँ आ फँसे?' उन्होंने सोचा।

रात हुई। मोती ने हीरा से कहा कि अगर दीवार तोड़ दी जाए तो बाहर निकला जा सकता है मोती ने सींगों से दीवार गिराने का प्रयत्न किया। दो-चार चोटों में ही थोड़ी-सी दीवार गिर गई। उत्सा बढ़ा तो उसने और ज़ोर से चोटें लगानी शुरू कीं।

दीवार में रास्ता बनते ही पहले तो घोड़ियाँ भागीं, फिर भैंसें और बकरियाँ। मोती ने गधों को सींग मार-मारकर भगा दिया। उसने हीरा से भी भाग चलने को कहा, लेकिन हीरा ने मना कर या।

सुबह होने पर कांजीहाउसवालों ने देखा तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने हीरा और मोती नीलाम कर दिया। नीलामी में सबसे ऊँची बोली बोलकर एक व्यापारी ने उन्हें ख़रीद लिया। वह नों को लेकर अपने गाँव की ओर चला। मार खाते-खाते और भूख सहते-सहते हीरा-मोती बहुत मज़ोर हो गए थे। उनकी हड्डियाँ निकल आई थीं। भूख-प्यास से व्याकुल बैलों में कुछ भी दम क़ी नहीं रहा था। वे चुपचाप व्यापारी के साथ चलने लगे। रास्ता उन्हें जाना-पहचाना लगा तो न ने कहाँ से दम आ गया। वे दोनों तेज़ी से भागे। आगे-आगे दोनों बैल, पीछे-पीछे व्यापारी। मगर ब तक वह उन्हें पकड़े, तब तक दोनों बैल अपने घर पहुँच चुके थे।

बैलों को देखकर झूरी को बड़ी ख़ुशी हुई। वह उनसे लिपट गया। इतने में व्यापारी भी वहाँ आ हुँचा और उन्हें माँगने लगा। मोती ने आव देखा न ताव, व्यापारी पर झपटा। व्यापारी जान बचाकर हाँ से भागा। झूरी की पत्नी भी भीतर से दौड़ी-दौड़ी आई। उसने दोनों बैलों के माथे चूम लिए।

–प्रेमचन्द

ब्दार्थ और टिप्पणी :

नाँद	=	पशुओं को चारा डालने का लकड़ी, सीमेंट तथा कंकड़ या लोहे का बना बड़ा टब
आश्चर्य	=	ताज्जुब, हैरत
दुर्दशा	=	बुरी हालत
थान	=	पशुओं को बाँधने का स्थान
कांजीहाउस	=	जहाँ लावारिस पशुओं को पकड़कर रखा जाता है
नीलाम करना	=	बोली लगाकर बेचना
व्याकुल	=	बेचैन
दम	=	जान

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

1. झूरी की पत्नी के भाई का क्या नाम था ?
2. झूरी के दोनों बैलों के क्या नाम थे ?
3. मिलकर काम करने से क्या होता है ?
4. कांजीहाउसवालों ने हीरा और मोती के साथ क्या बर्ताव किया ?
5. इस कहानी के लेखक का नाम लिखिए ?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

1. हीरा और मोती गया के घर में क्यों नहीं रहना चाहते थे ?
2. दोनों बैलों ने साँड़ को कैसे भगा दिया ?
3. हीरा और मोती के स्वभाव में क्या अन्तर था ?
4. हीरा और मोती अपने मालिक के घर किस तरह वापस आए ?
5. बैलों को देखकर झूरी और उसकी पत्नी ने क्या किया ?

(ग) ख़ाली जगहों को भरिए :

(प्यार, झूरी, चारे-पानी, कहाँ, मिलकर)

1. झूरी उनके .... का बहुत ध्यान रखता था।
2. पशु भी .... का भूखा होता है ?
3. .... काम करने में बल है।
4. 'यहाँ .... आ फँसे ?'
5. बैलों को देखकर .... को बड़ी ख़ुशी हुई।

भाषा-बोध

(क) इन मुहावरों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

होश उड़ जाना, साहस से काम लेना, आव देखा न ताव, जान बचाकर भाग जाना।

ग) निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए :

झूरी हल चलाता है।

बैल वहाँ से भाग आए।

मोती ने दीवार तोड़ दी।

झूरी बैलों से लिपट गया।

ऊपर प्रत्येक वाक्य में कोई काम करनेवाला है। काम करनेवाला **कर्ता** कहलाता है। इस ानी को पढ़िए और दस कर्ता शब्द ढूँढकर लिखिए।

ा) दिए गए उदाहरण के अनुसार प्रत्येक शब्द के सामने नए शब्द लिखिए :

उदाहरण :

अपना	**– अपनत्व**	**दुबला**	**– दुबलापन**
शिष्य	–	अपना	– ....
मनुष्य	–	लड़का	– ....
दास	–	बच्चा	– ....
पुरुष	–	पीला	– ....
नारी	–	गीला	– ....

छ और काम

'जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए।' इस संबंध में एक हदीस अपने शिक्षक या भिभावक से पूछकर लिखिए और उसे अपनी कक्षा में सुनाइए।

☆☆☆
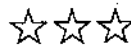
पाठ - 9

पुस्तक मँगवाने के लिए प्रकाशक के नाम पत्र

मर्कज़ी दर्सगाह इस्लामी, राम
दिनांक : 01 मार्च, 20

सेवा में,

श्रीयुत् व्यवस्थापक महोदय,
मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स, नई दिल्ली-25

विषय : वी.पी.पी द्वारा पुस्तक मँगवाने हेतु;

महोदय,

अस्सलामु-अलैकुम।

मुझे अभी-अभी आपके प्रकाशन का वृहत् सूचीपत्र प्राप्त हुआ। यह जानकर अत्यन्त प्रसन्न हुई कि आप के यहाँ से उर्दू, हिन्दी और अंग्रेज़ी में पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त और भी बहुत-ज्ञानवर्द्धक और रोचक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। मैं निम्नलिखित पुस्तकें मँगाना चाहता हूँ –

1. सच्चा दीन, भाग-1	(हिन्दी)	अफ़ज़ल हुसैन	1 प्रति
2. ज़बान की हिफ़ाज़त	(हिन्दी)	बिन्तुल इस्लाम	2 प्रतियाँ
3. बिसमिल्लाह की बरकत	(हिन्दी)	माइल ख़ैराबादी	4 प्रतियाँ

कृपया उपर्युक्त पुस्तकें वी. पी. पी. (मूल्यदायिका) द्वारा यथाशीघ्र नीचे लिखे पते भिजवाने का कष्ट करें। इंशा अल्लाह, मैं उसे तुरन्त छुड़ा लूँगा।

धन्यवाद !

प्रतिष्ठार्थ,
श्रीयुत व्यवस्थापक महोदय
मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स,
डी-307, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इंक्लेव,
जामिआ नगर, नई दिल्ली-110025

भवदीय,
जमील अख़्तर इलियासी
वर्ग-पाँच
मर्कज़ी दर्सगाह इस्लामी, दोमहला रोड,
रामपुर, (यू. पी.) पिन कोड - 244901

देश : विषय-शिक्षक छात्र-छात्राओं को विभिन्न प्रकार के पत्र लिखवाने का ख़ूब अभ्यास करवाएँ और उन्हें संबोधन-शब्द (प्रिय मित्र, आदरणीय पिताजी, आदरणीय माताजी इत्यादि), अभिवादन-शब्द (अस्सलामु-अलैकुम, आदाब वग़ैरह); पत्र का विषय, पत्र की समाप्ति, पानेवाले का पता इत्यादि के बारे में बताएँ।

अभ्यास

1. फ़ीस माफ़ करवाने के लिए अपने विद्यालय के प्रधानाध्यापक के नाम एक आवेदनपत्र लिखिए।
2. अपनी अस्वस्थता के कारण तीन दिन की छुट्टी के लिए अपने स्कूल की प्रधानाध्यापिका को एक आवेदनपत्र लिखिए।

छ और काम

1. अपने स्कूल के पुस्तकालय से एक पत्र-संग्रह हासिल कीजिए और उसे पढ़िए।

पाठ – 10

बाल-कामना

हे ईश्वर! हे दयानिधान!
मैं बालक निर्बल अज्ञान।
बल-विद्या कीजे प्रदान।।

तेरा शुभ सुन्दर सन्देश, नगर-नगर अरु देश-विदेश।
स्वामी! सहकर कष्ट-क्लेश, फैलाना है लक्ष्य महान।।

मैं बालक निर्बल अज्ञान।
बल–विद्या कीजे प्रदान।।

शूद्र, ब्राह्मण, मुग़ल, पठान; क्षीण, बली, निर्धन, धनवान।
सब हैं आदम की सन्तान, सबको समझूँ एक समान।।

मैं बालक निर्बल अज्ञान।
बल-विद्या कीजे प्रदान।।

सत्कर्मों का हो संचार, मिटे जगत् से अत्याचार।
सारे रोगों का उपचार, ईश्वरवाद चढ़े परवान॥

मैं बालक निर्बल अज्ञान।
बल-विद्या कीजे प्रदान॥

– संकलित

ब्दार्थ और टिप्पणी

दयानिधान	=	दयालु	निर्बल	=	शक्तिहीन, कमज़ोर
सन्देश	=	पैग़ाम	विद्या	=	इल्म
शुभ	=	पाक, अच्छा	अरु	=	और
कष्ट	=	तकलीफ़, पीड़ा	क्लेश	=	दुख, क्रोध
लक्ष्य	=	मक़सद, उद्देश्य	शूद्र	=	नीच, हीन
क्षीण	=	कमज़ोर, दुर्बल	सत्कर्म	=	अच्छे काम, नेक काम
संचार	=	फैलाव	जगत्	=	दुनिया

अभ्यास

त्तर लिखिए :

क) 1. बालक ईश-सन्देश कहाँ-कहाँ फैलाना चाहता है ?
2. बालक अपने आपको कैसा पाता है ?
3. सारे रोगों का उपचार क्या है ?
4. ईश्वर का व्यक्तिवाचक नाम तो केवल एक है – अल्लाह, परन्तु अपने गुणों के कारण उसे बहुत-से नामों से पुकारा जाता है। आप उसके कौन-कौन से नाम जानते हैं ? लिखिए।
5. इस कविता में बालक की कामना क्या है ?

ख) वाक्य पूरे कीजिए :

1. मैं बालक ....।
   .... कीजे प्रदान॥
2. सब हैं ....,
   .... एक समान॥

3. सत्कर्मों का ....।
.... अत्याचार।
4. सारे रोगों का ....।
.... चढ़े परवान।।

भाषा-बोध

(ग) पढ़िए, समझिए और लिखिए :

देश-विदेश	=	देश और विदेश
कष्ट-क्लेश	=	कष्ट और क्लेश
माता-पिता	=	माता और पिता
घर-आँगन	=	घर और आँगन
गाँव-शहर	=	गाँव और शहर

यहाँ देश-विदेश, कष्ट-क्लेश, माता-पिता, घर-आँगन, गाँव-शहर की जगह क्रमशः दे और विदेश, कष्ट और क्लेश और माता और पिता, घर और आँगन, गाँव और शहर लिखा गया है।

इन शब्दों के बीच योजक-चिह्न (-) का प्रयोग, जिसके बारे में आप पढ़ चुके हैं, किया ग है। योजक का अर्थ होता है जोड़नेवाला। इस चिह्न का प्रयोग सामासिक पदों या पुनरुक्त और यु शब्दों के बीच किया जाता है।

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार पर पाँच शब्द-युग्म लिखकर अपने शिक्षक को दिखाइए।

(संकेत – सुख-दुख, यश-अपयश, जीवन-मरण, हानि-लाभ, भाई-बहन)

☆☆☆

पाठ – 11

बीबी फ़ातिमा ज़हरा (रज़ियल्लाहु अन्हा)

बीबी फ़ातिमा (रज़ि.) प्यारे नबी (सल्ल.) की सबसे छोटी और चहेती सुपुत्री थीं। आपका नाम फ़ातिमा ज़हरा था। आपकी माता का नाम हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) था। आपका जन्म आपके ा हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) की नुबूवत (ईशदूतत्त्व) से लगभग पाँच वर्ष पहले हुआ था। उस समय श के लोग काबा का नवनिर्माण कर रहे थे।

प्यारे रसूल (सल्ल.) को नन्ही फ़ातिमा से बहुत प्यार था। जब आप (सल्ल.) घर आते तो ाज़े पर आकर सलाम करते। आपकी आवाज़ सुनते ही फ़ातिमा दौड़कर आतीं और आपकी उँगली ड़कर आपको अन्दर ले जातीं। आप नन्ही फ़ातिमा को अच्छी-अच्छी बातें सिखाते। फ़ातिमा भी ने माता-पिता से बड़े अनोखे प्रश्न करती थीं, जिससे छोटी बच्ची की प्रतिभा और बुद्धिमत्ता का ी-भाँति अंदाज़ा किया जा सकता है। एक बार उन्होंने अपनी अम्मी जान से पूछा, ''अम्मी जान! स अल्लाह ने हर चीज़ को पैदा किया है, क्या उसे हम देख सकते हैं?''

अम्मी जान ने समझाया, ''बेटी! अगर हम किसी को अल्लाह का साझी न बनाएँ, केवल ी की इबादत करें और उसके बन्दों पर दया करें तो क़ियामत के दिन हम अल्लाह के दर्शन करेंगे।''

कभी-कभी अम्मी जान पूछतीं, ''आज तुमने अब्बू जान से क्या-क्या सीखा?'' नन्ही तिमा तुरन्त सब कुछ बता देतीं। घर में माता-पिता की बातचीत को ध्यानपूर्वक सुनतीं और -तरीक़ों को ग़ौर से देखती रहतीं और स्वयं भी उसी को अपनाने की कोशिश करतीं। जो बात एक सुन लेतीं कभी न भूलतीं।

बीबी फ़ातिमा बचपन से ही शान्त स्वभाव की और एकांतप्रिय थीं। बचपन में भी घर से कलना आपको पसन्द न था। दिखावे की बातों से आपको नफ़रत थी। एक बार किसी के विवाह में म्मेलित होने के लिए अम्मी जान ने अच्छे कपड़े और गहने दिए, लेकिन आपने पहनने से इनकार दिया और साधारण कपड़े ही पहनकर गईं।

जब आपके पिता हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) को अल्लाह ने रसूल (ईशदूत) बनाया तो उनपर धर्मियों द्वारा तरह-तरह के अत्याचार किए जाने लगे। इससे आप बहुत दुःखी होतीं और आपकी खों से आँसू छलक पड़ते। प्यारे रसूल (सल्ल.) आपको ढाढ़स बँधाते।

एक बार प्यारे नबी (सल्ल.) काबा में नमाज़ पढ़ रहे थे। जब आप सजदे में गए, दुष्टों ने :
की ओझड़ी आपकी गरदन पर डाल दी। उसके बोझ से नबी (सल्ल.) दब गए। दुष्ट और शरारती ल
देख-देखकर ठहाके मारने लगे। किसी ने घर पर सूचना दी, तो फ़ातिमा दौड़ी-दौड़ी आईं और ब
मुश्किल से अब्बू जान के ऊपर से ओझड़ी हटाती हुई बोलीं, "दुष्टो ! अल्लाह तुम्हें सज़ा देगा।"

हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) लगभग बीस वर्ष की अवस्था में हज़रत अली (रज़ि.) इब्ने-अ
तालिब के साथ आपका विवाह सन् 2 हिजरी में हुआ। दाम्पत्य जीवन प्रेमपूर्वक बीता। बीबी फ़ाति
(रज़ि.) के पाँच बच्चे हुए, जिनमें तीन पुत्र–हज़रत हसन (रज़ि.), हज़रत हुसैन (रज़ि.) और हज़
मुहसिन (रज़ि.) थे और दो बेटियाँ–हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) और हज़रत उम्मे-कुलसूम (रज़ि.) थ
हज़रत मुहसिन की बचपन ही में मृत्यु हो गई थी। हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) की शादी हज़रत अब्दुल्ल
बिन जाफ़र इब्ने-अबी तालिब से हुई और हज़रत उम्मे-कुलसूम (रज़ि.) की शादी हज़रत उमर फ़ारु
से हुई थी। मगर हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की नस्ल सिर्फ़ हज़रत हसन (रज़ि.) और हज़रत हु
(रज़ि.) के द्वारा दुनिया में बाक़ी रही।

हज़रत फ़ातिमा ज़हरा बड़ी मेहनती थीं। घर के काम-काज में किसी से सहायता न लेती थ
चक्की पीसते-पीसते हाथों में गट्टे पड़ गए थे। इसी प्रकार पानी की मश्क उठाते-उठाते कन्धे और स
पर निशान पड़ गए थे। हर समय काम-काज में व्यस्त रहने से कपड़े मैले हो जाते थे। फिर भी वे य
कहा करतीं, "मैं अल्लाह और उसके रसूल से इस हाल में राज़ी और संतुष्ट हूँ।" राज़ी होने के इ
विशिष्ट गुण के कारण लोग उनको 'रज़िया' कहते थे।

एक बार हज़रत अली (रज़ि.) ने हज़रत फ़ातिमा के बारे में कहा कि वे जन्नत का सुगंधि
फूल थीं जिसके मुरझा जाने के बाद भी उसकी ख़ुशबू अब तक वातावरण में बसी हुई है। इसी लि
आपको 'अज़-ज़हरा' (ताज़ा फूल) कहा जाता है।

एक बार आप बीमार पड़ गईं। प्यारे रसूल (सल्ल.) देखने आए तो बोलीं, "दर्द से बेचैन
और भूख से निढाल ! घर में खाने को कुछ भी नहीं है।"

प्यारे रसूल (सल्ल.) ने फ़रमाया, "बेटी ! दुनिया की कठिनाई से न घबराओ, तुम जन्नत व
महिलाओं की सरदार हो।"

हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ने अपनी संतान का पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा बड़ी सूझ-बू
एवं अत्यन्त प्रेम से की। एक बार आपकी बेटी हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) क़ुरआन का पाठ कर रही थ
अनजाने में उनकी ओढ़नी सिर से गिर गई। प्यारी अम्मी जान ने तुरन्त ओढ़नी सिर पर डाल दी अ
कहा, "बेटी ! अल्लाह की किताब का पाठ नंगे सिर नहीं करते।"

एक बार हज़रत हुसैन (रज़ि.) और हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) में झगड़ा हो गया। प्यारी अम्मी जान दोनों बच्चों को क़ुरआन की आयतें पढ़कर सुनाईं और फ़रमाया, "बच्चो! अल्लाह तआला ड़ाई-झगड़े से नाराज़ हो जाता है।" उसके बाद बच्चे फिर कभी नहीं लड़े।

हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) अल्लाह की याद और इबादत में हर समय लीन रहतीं। खाना बनाते नय और चक्की पीसते हुए या तो क़ुरआन की आयतें पढ़ती रहतीं या अल्लाह का ज़िक्र करती तीं। कभी पूरी-पूरी रात इबादत में बिता देतीं। घर का काम-काज करते हुए भी वे अल्लाह की च्ची बन्दी बनकर रहीं। इसी लिए आपको 'बतूल' (दुनिया से कटकर ईशप्रेम में एकाग्रचित नेवाली) भी कहा जाता है।

हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) अत्यन्त दानशील और त्यागप्रिय थीं। हज़रत हसन (रज़ि.) कहते हैं : एक बार हमें एक वक़्त के फ़ाक़े के बाद खाना मिला। अब्बू जान, मैं और हुसैन खाना खा चुके । अम्मी जान ने रोटी हाथ में ली ही थी कि एक भूखे व्यक्ति ने आवाज़ लगाई, "ऐ रसूल की पुत्री! दो वक़्त से भूखा हूँ, मेरा पेट भर दो।" अम्मी जान ने मुझसे कहा, "खाना इस (भूखे) को दे दो। झे तो एक ही वक़्त का फ़ाक़ा है, जब कि इस व्यक्ति को दो वक़्त से खाना नहीं मिला है।"

एक बार प्यारे रसूल (सल्ल.) ने पूछा, "बेटी! स्त्रियों का सबसे उत्तम गुण कौन-सा है?" ाप बोलीं, "स्त्रियों का सबसे उत्तम गुण यह है कि न वह किसी ग़ैर मर्द को देखे और न ग़ैर मर्द उसे खे।"

प्यारे रसूल (सल्ल.) का स्वर्गवास होने से आपको अत्यंत आघात पहुँचा। आप हर समय ोकाकुल और दुखी रहने लगीं। अपने पिता के दुनिया से जाने के बाद आप केवल छह माह जीवित हीं। इस बीच किसी ने आपको हँसते हुए नहीं देखा। आप नारी के सभी उत्तम गुणों से विभूषित थीं।

आपका देहान्त 3 रमज़ान सन् 11 हिजरी में मंगलवार की रात को हो गया।

"अल्लाह आपसे प्रसन्न हो!"

– सलीम अहमद सिद्दीक़ी

ब्दार्थ और टिप्पणी

बुद्धिमत्ता	=	अक़्लमन्दी, होशियारी, प्रतिभा	परिश्रमी	=	मेहनती
सूचना	=	ख़बर	व्यस्त	=	मसरूफ़
संतुष्ट	=	मुतमइन	लीन	=	मग्न, डूबा हुआ

शिक्षा-दीक्षा	= तालीम व तरबियत		नव निर्माण	=	नई तामीर
दर्शन करना	= देखना, मुलाक़ात करना		स्वयं	=	ख़ुद
एकान्तप्रिय	= तनहाईपसन्द		सुगंधित	=	ख़ुशबूवाला
फ़ाक़ा	= अनाहार, भूखे रहना		शोकाकुल	=	दुखी, शोक से व्याकुल
विभूषित	= अलंकृत, शोभित				

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. बीबी फ़ातिमा ज़हरा (रज़ि.) कौन थीं ?
2. "क्या हम अल्लाह को देख सकते हैं ?" नन्ही फ़ातिमा के इस सवाल का उनकी अम्मीजान ने क्या जवाब दिया ?
3. हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) का विवाह किसके साथ हुआ?
4. बीबी फ़ातिमा (रज़ि.) को 'रज़िया' और 'अज़-ज़हरा' क्यों कहा जाता है ?
5. बीबी फ़ातिमा (रज़ि.) ने स्त्रियों का सबसे उत्तम गुण क्या बताया ?

(ख) सही वाक्य के आगे (✓) और ग़लत वाक्य के आगे (×) निशान लगाइए :

1. बीबी फ़ातिमा (रज़ि.) प्यारे नबी (सल्ल.) की सबसे बड़ी बेटी थीं। ( )
2. क़ियामत के दिन हम अल्लाह के दर्शन करेंगे। ( )
3. हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) को दिखावे की बातों से नफ़रत थी। ( )
4. हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) बहुत कम दानशील और त्यागप्रिय थीं। ( )
5. अपने पिता के निधन के बाद हज़रत फ़ातिमा केवल एक साल जीवित रहीं। ( )

भाषा-बोध

(क) इस पाठ में 'एकान्तप्रिय' शब्द का प्रयोग हुआ है। इसी तरह जनप्रिय, लोकप्रिय, शान्तिप्रिय शब्द बनते हैं। यहाँ 'प्रिय' शब्द का प्रत्यय के रूप में प्रयोग हुआ है।

जो शब्दांश मूल शब्द के अन्त में लगकर नए शब्द बनाते हैं, उन्हें प्रत्यय कहा जाता है। 'ता' और 'इक' भी प्रत्यय हैं। जैसे : सरल से सरलता, समाज से सामाजिक शब्द बनते हैं।

'ता' और 'इक' प्रत्ययों को शब्दों के अन्त में जोड़कर प्रत्येक प्रत्यय से तीन-तीन नए शब्द बनाइए।

ब) निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :

"दुष्टो ! अल्लाह तुम्हें सज़ा देगा।"
"बच्चो ! अल्लाह तआला लड़ाई-झगड़े से नाराज़ हो जाता है।"
"बेटी ! अल्लाह की किताब का पाठ नंगे सिर नहीं करते।"
शाबाश ! सारे रिकार्ड तोड़ दिए।
हे ईश्वर ! रक्षा कर।
हाय अल्लाह ! यह क्या हुआ?

इन वाक्यों में **आश्चर्यबोधक चिह्न (!)** का प्रयोग किया गया है। इसे **आश्चर्यसूचक** थवा **विस्मयादिबोधक चिह्न** भी कहा जाता है। विस्मय, शोक, आनन्द, उत्साह, घृणा, ोधन, सम्मान, शुभकामना इत्यादि भावों को प्रकट करने के लिए आश्चर्यबोधक चिह्न का प्रयोग या जाता है।

आप इस पाठ्य पुस्तक (हमारी पोथी, भाग-5) से आश्चर्यबोधक चिह्नवाले दस वाक्य नकर अपनी कॉपी में लिखिए और अपने शिक्षक को दिखाइए।

☆☆☆

पाठ-12

न्याय

अरब के रेगिस्तानी इलाक़े में दो यात्री एक साथ यात्रा कर रहे थे। चलते-चलते जब दोपहर ह गई तो दोनों एक पेड़ की छाया में आराम करने के लिए ठहर गए। उन्हें भूख लगी थी। दोनों ने विच किया कि हम लोग यहीं भोजन कर लें। वे अपने-अपने थैले से रोटियाँ और सालन निकालकर खा के लिए बैठ गए। पहले यात्री के पास तीन रोटियाँ थीं और दूसरे यात्री के पास पाँच रोटियाँ।

इतने में एक तीसरा यात्री भी वहाँ आकर ठहरा। उसके पास खाना नहीं था। वह उन दोनों यात्रियों से आग्रह करके कुछ क़ीमत के बदले उन्हीं के खाने में शामिल हो गया। जब तीनों भोजन कर चुके तो तीसरे यात्री ने अपने भोजन के बदले उन्हें आठ दिरहम अदा किए। पैसे अदा करके वह चला गया। अब दोनों यात्रियों में दिरहम के बँटवारे पर विवाद हो गया। पहले यात्री ने कहा कि हम तीनों ने मिलकर भोजन किया है। खाना दो आदमियों के पास था। इसलिए चार-चार दिरहम दोनों बाँट लें दोनों का हिसाब बराबर हो जाएगा। दूसरे यात्री ने कहा, "तुम्हारे पास सिर्फ़ तीन रोटियाँ थीं और मे पास पाँच रोटियाँ। इसलिए तुम्हें तीन दिरहम ही दूँगा। बाक़ी पाँच दिरहम मैं लूँगा।" पहला यात्र उसकी बात मानने को तैयार न हुआ।
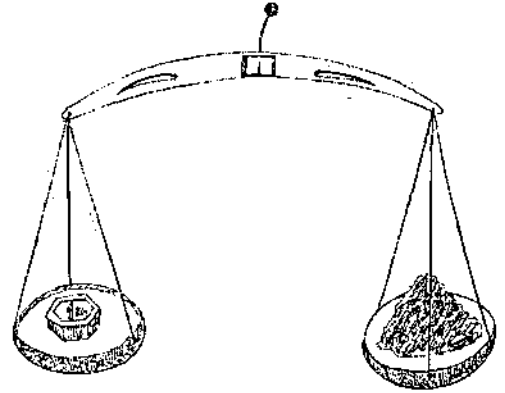
झगड़े का फ़ैसला कराने के लिए दोनों यात्री शहर के क़ाज़ी के पास पहुँचे। क़ाज़ी ने दोनों क बातें ख़ूब ध्यान से सुनीं। सोच-विचार करने के बाद उसने यह फ़ैसला सुनाया, "जिस यात्री के पार तीन रोटियाँ थीं, उसे सिर्फ़ एक दिरहम मिलेगा।"

यह फ़ैसला सुनकर पहला यात्री अवाक् रह गया। उसने कहा, "जब मुझे तीन दिरहम मिल र थे तब तो मैंने स्वीकार नहीं किए। चार दिरहम पाने के लिए अदालत में अपना मुक़द्दमा पेश किया यह कैसा न्याय हुआ कि अब तीन दिरहम से घटकर सिर्फ़ एक दिरहम मेरे हिस्से में आया।" उसक मन संतुष्ट नहीं हो रहा था। लेकिन अदालत के फ़ैसले को मानना भी ज़रूरी था। उसने क़ाज़ी से विनत

कि फ़ैसला तो हमें मंज़ूर है, लेकिन हमारी संतुष्टि के लिए ज़रा हमें समझा दीजिए कि यह फ़ैसला ब्रत कैसे है ? इस न्याय पर अन्य लोगों को भी आश्चर्य हुआ, क्योंकि अधिकतर लोग ठीक हिसाब ाए बिना अपनी अटकल और अपने अनुमान से दोनों पक्षों में से किसी एक को उचित समझ रहे थे।

क़ाज़ी साहब ने अपने फ़ैसले को युक्तिपूर्ण सिद्ध करने के लिए एक तक़रीर की। सब लोग त भाव से उनकी बातें सुनने लगे। उन्होंने कहा —

"तीन व्यक्तियों ने बराबर-बराबर खाना खाया। अत: प्रत्येक रोटी के तीन बराबर-बराबर ड़े किए गए। तीन रोटियों के नौ टुकड़े और पाँच रोटियों के पन्द्रह टुकड़े हुए। कुल चौबीस टुकड़े । तीनों यात्रियों ने आठ-आठ टुकड़े खाए। जब बाद में आनेवाले तीसरे यात्री ने आठ दिरहम दिए, उसने एक टुकड़े की क़ीमत एक दिरहम अदा की। तुमने अपने नौ टुकड़ों में से आठ ख़ुद खा लिए र तुम्हारा सिर्फ़ एक टुकड़ा उस तीसरे यात्री ने खाया। इस प्रकार दूसरे यात्री के पन्द्रह टुकड़ों में से ठ तो उसने ख़ुद खाए और शेष उसके सात टुकड़े उस तीसरे यात्री ने खाए। इसलिए तुम्हें सिर्फ़ एक हम और दूसरे साथी को सात दिरहम मिलेंगे।"

यह विवरण सुनकर सब दंग रह गए और बहुत ख़ुश हुए। एक दिरहम पानेवाले यात्री की समझ भी बात आ गई। दोनों ने अपने हिस्से की रक़म लेकर अपनी राह ली। ऐसे ही अवसर के लिए यह ावत प्रचलित है — चौबे गए छब्बे बनने, दुबे बनकर आए।

अधिक लालच करनेवाला घाटे में रहता है। अत: कहा भी गया है — लालच बुरी बला है।

ब्दार्थ और टिप्पणी

आग्रह	=	इसरार, हठ	विवाद	=	झगड़ा
अवाक्	=	चकित	संतुष्ट	=	मुत्मइन
सिद्ध करना	=	साबित करना	युक्तिपूर्ण	=	बुद्धिसंगत
क़ाज़ी	=	न्यायाधीश, जज	शांत भाव से	=	ख़ामोशी से
विवरण	=	बयान	बला	=	विपत्ति, आफ़त
दिरहम	=	चाँदी का सिक्का जो अनेक अरब देशों में प्रचलित है			

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए :

1. दूसरे यात्री के पास कितनी रोटियाँ थीं ?
2. तीसरे यात्री ने भोजन के बदले कितने दिरहम अदा किए ?
3. झगड़े का फ़ैसला कराने के लिए दोनों यात्री किसके पास पहुँचे ?
4. न्याय के पश्चात् पहले यात्री को कितने दिरहम मिले ?
5. क़ाज़ी ने एक रोटी के कितने टुकड़े करने के लिए कहा ?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :

1. दोनों यात्रियों में किस बात पर विवाद हुआ ?
2. पहले यात्री ने आठ दिरहम को किस प्रकार बाँटना चाहा ?
3. दूसरे यात्री ने आठ दिरहम का बँटवारा किस प्रकार करना चाहा ?
4. क़ाज़ी ने न्याय किस प्रकार किया ?
5. क़ाज़ी के न्याय से लोगों को आश्चर्य क्यों हुआ ?
6. पहले यात्री को लालच करने का क्या फल मिला ?

(ग) सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाइए :

- **किसने कहा ?**

1. "तुम्हें तीन दिरहम ही दूँगा।" (पहले यात्री ने/ दूसरे यात्री ने/ क़ाज़ी ने)
2. "जब मुझे तीन दिरहम मिल रहे थे तब तो मैंने स्वीकार नहीं किए।"
   (पहले यात्री ने/ दूसरे यात्री ने/ तीसरे यात्री ने
3. "तुमने अपने नौ टुकड़ों में से आठ टुकड़े ख़ुद खा लिए।"
   (पहले यात्री ने/ दूसरे यात्री ने/ क़ाज़ी ने

भाषा-बोध

(क) निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए :

शब्द	–	बहुवचन	
रोटी	–	रोटियाँ	रोटियों

नदी	–	....	....
बकरी	–	....	....
फ़ैसला	–	फ़ैसले	फ़ैसलों
टुकड़ा	–	....	....
झगड़ा	–	....	....
बात	–	....	....
घात	–	....	....

ख) नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए :

पवित्र क़ुरआन में **एक सौ चौदह** सूरतें हैं।

पाँच वक़्त नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ है।

एक दर्जन केले लाओ।

कक्षा में **सोलह** विद्यार्थी हैं।

दस लड़कियाँ खेल रही हैं।

इन वाक्यों में क्रमशः एक सौ चौदह, पाँच, एक दर्जन, सोलह और दस 'संख्यावाचक विशेषण' हैं।

याद रखिए : ऐसे विशेषण जो संज्ञा की संख्या का बोध कराएँ, **'संख्यावाचक विशेषण'** कहलाते हैं। आप इस पाठ में आए संख्यावाचक विशेषणों को चुनकर अपनी कॉपी में लिखिए।

☆☆☆

पाठ – 13
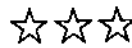
मेरा नया बचपन

बार-बार आती है मुझको, मधुर याद बचपन तेरी।
गया ले गया तू जीवन की, सबसे मस्त ख़ुशी मेरी॥

चिन्ता-रहित खेलना-खाना, वह फिरना निर्भय स्वच्छन्द।
कैसे भूला जा सकता है, बचपन का अतुलित आनन्द॥

ऊँच-नीच का ज्ञान नहीं था, छुआछूत किसने जानी।
बनी हुई थी अहा! झोंपड़ी और चीथड़ों में रानी॥

किए दूध के कुल्ले मैंने, चूस अंगूठा सुधा पिया।
किलकारी कल्लोल मचाकर, सूना घर आबाद किया॥

रोना और मचल जाना भी, क्या आनन्द दिखाते थे।
बड़े-बड़े मोती से आँसू, जयमाला पहनाते थे॥

मैं रोई, माँ काम छोड़कर आई, मुझको उठा लिया।
झाड़-पोंछकर, चूम-चूम, गीले गालों को सुखा दिया॥

आ जा बचपन एक बार फिर, दे दे अपनी निर्मल शांति।
व्याकुल व्यथा मिटानेवाली, वह अपनी प्राकृत विश्रांति॥

मैं बचपन को बुला रही थी, बोल उठी बिटिया मेरी।
नन्दन वन-सी फूल उठी, यह छोटी-सी कुटिया मेरी॥

'माँ ओ' कहकर बुला रही थी, मिट्टी खाकर आई थी।
कुछ मुँह में कुछ लिए हाथ में, मुझे खिलाने आई थी॥

मैंने पूछा, 'यह क्या लाई', बोल उठी वह, 'माँ काओ'।
हुआ प्रफुल्लित हृदय ख़ुशी से, मैंने कहा, 'तुम्हीं खाओ'॥

पाया मैंने बचपन फिर से, बचपन बेटी बन आया।
उसकी मंजुल मूर्त्ति देखकर, मुझमें नव जीवन आया॥

मैं भी उसके साथ खेलती, खाती हूँ, तुतलाती हूँ।
मिलकर उसके साथ स्वयं, मैं भी बच्ची बन जाती हूँ॥

जिसे खोजती थी वर्षों से, अब जाकर उसको पाया।
भाग गया था मुझे छोड़कर, वह बचपन फिर से आया॥

– सुभद्रा कुमारी चौहान

शब्दार्थ और टिप्पणी

मधुर	= मीठा		निर्भय	=	भय-मुक्त, बेख़ौफ़
अतुलित	= बेमिसाल		कल्लोल	=	शोर, हंगामा
जयमाला	= जीत की माला		व्यथा	=	दुख-दर्द, पीड़ा
मंजुल मूर्त्ति	= सुन्दर मूर्त्ति		चिन्ता-रहित	=	बेफ़िक्र
सुधा	= अमृत, आबे-हयात		प्रफुल्लित	=	ख़ुश
नव जीवन	= नई ज़िन्दगी		स्वच्छन्द	=	आज़ाद, मनमाना
निर्मल	= साफ़, मैल-रहित		व्याकुल	=	बेचैन
प्राकृत	= असली, क़ुदरती		विश्रांति	=	शान्ति, चैन
नन्दन वन	= कृष्ण जिस बाग़ में खेलते थे वह नन्द का बाग़ था। यहाँ उसी से तुलना है।				

अभ्यास

(क) एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. कवयित्री को बार-बार किसकी याद आती है ?
2. बचपन के अतुलित आनन्द क्या हैं ?
3. बच्ची ने सूना घर किस प्रकार आबाद किया ?
4. कवयित्री बचपन में जब रोती थी तो उसकी माँ क्या करती थी ?

(ख) संक्षेप में उत्तर लिखिए :

1. बड़े होने पर बचपन क्यों बार-बार याद आता है ?
2. लड़की किस हाल में माँ के पास आई थी ?
3. माँ को पुन: अपना नया जीवन कैसे मिला ?
4. माँएँ अपने नन्हे बच्चों से किस प्रकार बातें करती हैं ?

(ग) रिक्त स्थानों की पूर्त्ति कीजिए :

1. बार-बार आती है मुझको, मधुर याद .... तेरी।
   गया ले गया तू .... की, सबसे मस्त ख़ुशी मेरी।।
2. ऊँच-नीच का ज्ञान नहीं था, ... किसने जानी।
   बनी हुई थी अहा ! झोंपड़ी और चीथड़ों में .... ।।
3. मैं रोई, माँ .... छोड़कर आई, मुझको उठा लिया।
   झाड़-पोंछकर, चूम-चूम, गीले .... को सुखा दिया।।
4. जिसे खोजती थी वर्षों से, अब जाकर .... पाया।
   भाग गया था मुझे छोड़कर, वह .... फिर से आया।।

भाषा-बोध

(क) निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए :

'पवित्र क़ुरआन' पूरी मानव-जाति के मार्गदर्शन के लिए आया है।
'हमारी पोथी' को पाठकों ने बहुत पसन्द किया है।
'कान्ति' एक प्रतिष्ठित पत्रिका है।
रामधारी सिंह **'दिनकर'** हिन्दी के प्रतिष्ठित कवि हैं।

इन वाक्यों में ' ' चिह्न का प्रयोग किया गया है। इस चिह्न को **इकहरा उद्धरण चिह्न** कहते हैं। लेखक का उपनाम, पुस्तक का नाम, समाचारपत्र, निबंध, कविता इत्यादि के शीर्षक का हवाला देते समय इकहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

नलिखित वाक्यों में उचित स्थान पर इकहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग कीजिए :

हरिऔध सचमुच महाकवि थे।

तफ़हीमुल-क़ुरआन बीसवीं शताब्दी की सर्वोत्तम कृति है।

दावत एक लोकप्रिय अख़बार है।

हदीस सौरभ मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ की मशहूर कृति है।

अख़लाक़ी कहानियाँ बच्चों के लिए बहुत ही रोचक कहानी-संग्रह है।

☆☆☆

पाठ – 14

महान पक्षी-विज्ञानी सालिम अली

"अंकल मिलार्ड! मैंने कभी स्वप्न में भी न सोचा था कि पक्षी इतने प्रकार के होते हैं।" ये अचरज भरे शब्द थे उस नौ वर्षीय बालक सालिम अली के जिसने मुम्बई नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी के पक्षी-संग्रहालय में मरे हुए सैकड़ों पक्षियों के नमूनों को देखकर कहे थे। वह एक मृत गौरैया से संबंधित जिज्ञासा मिटाने पक्षी-संग्रहालय आया था। परन्तु यहाँ पक्षियों के विशाल संग्रह को देखकर वह अवाक् रह गया और उसकी जिज्ञासा और भड़क उठी। वह प्रति दिन संग्रहालय आकर पक्षियों के बारे में जानकारी प्राप्त करने लगा।

उस बालक का नाम मुज़ुद्दीन अब्दुल अली था, जो आगे चलकर पक्षी-विज्ञानी सालिम अली के नाम से विख्यात हुआ। सालिम अली को 'पक्षियों चलता-फिरता विश्वकोश' कहा जाता है।

सालिम अली की यह दिनचर्या बन गई कि वह जहाँ कहीं भी जाता, आकाश में उड़ते पक्षि को देखता, पेड़ों पर बैठे या आस-पास उड़ते पक्षियों को निहारता, बाग़-बग़ीचे में इन्हें तलाश कर नदी-नालों के किनारे घूमता-फिरता, पक्षियों के पीछे भागता रहता। वह अपने भाई के साथ बर्मा (म्यांमार) के जंगलों में कारोबार करने गया। वहाँ भी पक्षियों के विषय में अधिक से अधिक जानक प्राप्त करने की जिज्ञासा प्रबल रही, बल्कि प्रबलतम होती गई। इस प्रकार वह निरन्तर अपना पक्षी- बढ़ाता रहा।

समय बीतता रहा, यहाँ तक कि वह कॉलेज पहुँच गया। वहाँ फ़ादर ब्लेटर उन्हें प्राणीश पढ़ाते थे। उन्होंने सालिम अली की अभिरुचि को देखते हुए उसे मुम्बई नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी के संग्रहालय में गाइड का काम दिलवा दिया। अब सालिम अली वहाँ आनेवाले लोगों को विभिन्न प्र के मरे हुए पक्षियों के बारे में बताने लगे। परन्तु प्रायः यह होता था कि वे बहुत-से लोगों के कई प्र

उत्तर नहीं दे पाते थे। उन्होंने सोचा कि इसके बारे में सही और विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक यही सोचकर वे उच्च शिक्षा के लिए बर्लिन रवाना हो गए।

जब वे बर्लिन से पक्षी-विज्ञान में ट्रेनिंग लेकर ास आए तो उनकी नौकरी समाप्त हो चुकी थी। वे नई करी की तलाश में इधर-उधर भटकने लगे। कड़े संघर्ष बावजूद उन्हें कोई नौकरी नहीं मिली, इसलिए उनके मने आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया। पत्नी की सलाह पर अपने पैत्रिक घर में चले आए। संयोगवश, उनके घर के मने एक पेड़ पर 'बया' नामक पक्षी ने अपना घोंसला ाना शुरू किया, जो सालिम अली की नज़रों से छिपा न सका। वे सारा दिन एक नोटबुक और क़लम पकड़े बैठे ते और चिड़िया के घोंसला बनाने के काम को ध्यान से ते रहते और उसके बारे में लिखते जाते। उनके इस ीक्षण से पता चला कि घोंसले के निर्माण में केवल नर ही हिस्सा होता है। जब घोंसला आधा बन जाता है तो

दा आकर उसे देखती है और फिर आगे का काम भी उसी की पसन्द के अनुसार नर ही अंजाम देता फिर मादा उसमें अंडे देती है और जब तक बच्चे बड़े होते हैं, तब तक नर एक दूसरा घोंसला तैयार लेता है और इसी तरह ये पक्षी अपना पुराना घर छोड़कर नए घर में आ जाते हैं। ये सारी बातें बड़ी लचस्प थीं। इन बातों को सालिम अली ने अपने पहले शोध-प्रबंध में लिखा। इस निबंध का शीर्षक , 'बया के स्वभाव और क्रिया-कलापों का वर्णन'।

इस शोध-प्रबंध के छपते ही सालिम अली पक्षी-विज्ञानी के रूप में पहचाने जाने लगे। फिर वे क्षियों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के काम में ऐसे खोए कि स्वयं को भूल बैठे। वे आजीवन पक्षियों पीछे भागते रहे। इसी सिलसिले में उन्होंने देश-विदेश की अनेकानेक यात्राएँ कीं। हिमालय की र्फ़ीली चोटियाँ हों या आग बरसाता रेगिस्तान, हर जगह सालिम अली उत्साह और लगन से काम रते रहे।

सालिम अली ने कच्छ के जंगलों की भी यात्रा की थी। यह यात्रा सबसे कठिन और ख़तरनाक । वे वहाँ हंसों की बस्ती की तलाश में गए थे। इस यात्रा में उन्हें दस-दस घंटे तक ऊँट की पीठ पर

सवार रहना पड़ता था। अनेक कठिनाइयों के बाद वे उस जगह को तलाश करने में सफल हो गए, ज
हंसिनी अंडे देती थी। वहाँ उन्होंने जो कुछ देखा, उसे अपने एक निबंध में लिखा।

सालिम अली ने अपने इस निबंध में बताया कि हंसिनी के अंडे देने और उन्हें सेने
किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उन्होंने ८४ वर्ष की उम्र में लद्दाख़ की यात्रा की ३
वहाँ काली गर्दनवाली सारस की तलाश में ठंडी हवाओं के थपेड़े सहते हुए उसके बारे में बहुत-
जानकारियाँ एकत्र कीं, जो आज भी ऐतिहासिक तथा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ की हैसियत रख
हैं। फिर वह 87 वर्ष की उम्र में हिमालय की गोद में एक विशेष प्रकार की बटेर की खोज में निक
पड़े। बटेर की उस प्रजाति को खोज निकाला और उसके बारे में विस्तृत जानकारी दी। अपने जीवन
आख़िरी वर्ष में भी वे अपने हाथों में दूरबीन लिए और कंधों पर कैमरा लटकाए दिन-दिन भर ख़
छानते रहे और रंग-बिरंगे पक्षियों के बारे में नई और अजीबो-ग़रीब जानकारियाँ देते रहे। सालि
अली जब तक जीवित रहे, बस काम ही करते रहे। उन्होंने कठोर परिश्रम करके निजी अनुभव त
ज्ञान के आधार पर पक्षियों के रूप-रंग, क्रिया-कलाप, आदतों, प्रजनन-क्रिया, खान-पान, आव
इत्यादि के बारे में विस्तार से लिखा। 'भारतीय पक्षी', 'कच्छ के पक्षी' 'भारत के पहाड़ी पक्ष
'ट्रावंकोर और कोचीन के पक्षी', 'भारत और पाकिस्तान के पक्षी' इत्यादि उनकी प्रसिद्ध पुस्तकें
सालिम अली को पक्षियों के जीवन पर शोधपूर्ण पुस्तकें लिखने के कारण देश-विदेश से अने
पुरस्कार प्राप्त हुए। उन्हें देश के महत्त्वपूर्ण पुरस्कार 'पद्म विभूषण' से भी सम्मानित किया गया।

सालिम अली जब तक जीवित रहे, पक्षियों के जीवन और व्यवहार पर शोध-कार्य करते र
यह शोध-कार्य अभी जारी ही था कि मुम्बई में नवम्बर 1892 ई. को जन्मे इस महान पक्षी-विज्ञ
का देहान्त 20 जून 1987 ई. को हो गया। आकाश में उड़ते हुए अनगिनत पक्षी हमें सदा इस पक्ष
विज्ञानी की याद दिलाते रहेंगे।

शब्दार्थ और टिप्पणी

विख्यात	= मशहूर	दिनचर्या	= रोज़ाना का काम
निरन्तर	= लगातार	संयोगवश	= इत्तिफ़ाक़ से
निरीक्षण	= जाँच, ग़ौर से देखना	आजीवन	= ज़िन्दगी भर
अवाक्	= आश्चर्य चकित	अभिरुचि	= दिलचस्पी

संघर्ष	= कड़ी मेहनत, जिद्दोजुहद		परिश्रम	= मेहनत
विश्वकोश	= वृहद जानकारी का कोश, इंसाइक्लोपीडिया		प्राणीशास्त्र	= जीव-विज्ञान
			प्रजनन-क्रिया	= जन्म लेने की क्रिया
आर्थिक	= धन से सम्बन्धित		प्रकृति	= स्वभाव, फ़ितरत
पैत्रिक	= पुश्तैनी			

अभ्यास

क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए :

1. सालिम अली का पूरा नाम क्या था ?
2. सालिम अली ने उच्च शिक्षा कहाँ से प्राप्त की ?
3. बया नामक पक्षी की प्रजाति में घोंसला बनाने का काम कौन करता है ?
4. सालिम अली पक्षी-विज्ञानी के रूप में कब पहचाने गए ?
5. सालिम अली की कौन-सी यात्रा सबसे कठिन थी ?
6. सालिम अली को भरत देश में कौन-से महत्त्वपूर्ण पुरस्कार प्राप्त हुए ?
7. सलिम अली की दो पुस्तकों के नाम लिखो।

ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :

1. सालिम अली क्यों विख्यात हुए ?
2. मुम्बई के पक्षी संग्रहालय में सालिम अली को नौकरी कैसे मिली ?
3. सालिम अली की लगन, जिज्ञासा और कड़ी मेहनत से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?
4. महान पक्षी-विज्ञानी सालिम अली का देहान्त कब, कहाँ और किस आयु में हुआ ?

भाषा-बोध

क) **संबंध** और **एकत्र** में इत लगाने पर क्रमश: **संबंधित** और **एकत्रित** शब्द बनते हैं।

नीचे लिखे शब्दों में **इत** लगाकर शब्द बनाइए :

सम्मान	=	लिख	= ....
रच	=	चित्र	= ....

पुष्प	=	....	फल	=	....
कथ	=	....	पठ	=	....

(ख) निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए :

सलीम पाठशाला गया।

अकमल पढ़ रहा है।

तनवीर स्कूल जाएगा।

यहाँ पहले वाक्य में **क्रिया हो चुकी**, दूसरे में **हो रही है** और तीसरे में **होगी**। पहला वाव **भूतकाल** का, दूसरा वाक्य **वर्तमानकाल** का और तीसरा वाक्य **भविष्यत्काल** का है। भूतका क्रिया का वह रूप है जिससे बीते हुए समय में क्रिया के होने का ज्ञान होता है। इसी तरह वर्तमानका क्रिया का वह रूप है जिससे वर्तमान में क्रिया के होने का ज्ञान होता है और जिस काल से भविष्य होनेवाली क्रिया की काल-संबंधी सामान्य अवस्था का ज्ञान हो, उसे भविष्यत्काल कहते हैं।

अब आप कोष्ठक में निम्नलिखित वाक्यों के काल का नाम लिखिए :

मैं जाऊँगा। ( )

वह गया। ( )

रहीम खाता है। ( )

वह पढ़ेगी। ( )

करीम स्कूल जाता है। ( )

उसने खाना खा लिया। ( )

सीमा खेलती है। ( )

हलीमा खाना पका चुकी। ( )

असलम कुरआन पढ़ता है। ( )

अजय कल आएगा। ( )

☆☆☆

पाठ – 15

पवित्र क़ुरआन

विश्व के स्रष्टा अल्लाह ने आरंभ से ही
य के मार्गदर्शन के लिए अपने दूत (नबी)
। उनपर अपनी किताब अवतरित की। उन
ाबों में ईश्वर के आदेश होते थे। मनुष्य के
न बिताने के नियम होते थे, उन नियमों के
ार पर समाज का गठन होता था। बुराइयाँ
अत्याचार मिटाए जाते थे।
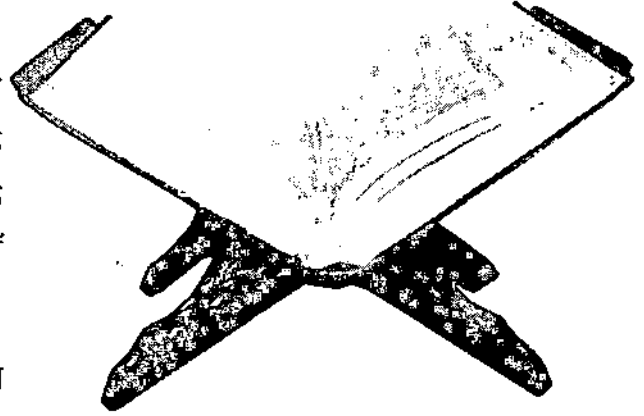
परन्तु मनुष्य कालान्तर में अपनी बुरी
ाओं का अनुसरण करके फिर बुराई के
पर चलने लगते। वे ईश्वरीय किताबों में मनमाना परिवर्तन कर डालते। इस प्रकार संसार में कोई
रीय ग्रंथ सुरक्षित न रहा। चारों ओर अंधकार और अंधविश्वास का साम्राज्य छा गया। अल्लाह
मानव पर दया आई। प्यारे नबी हज़रत 'मुहम्मद' (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को उसने
ना अंतिम नबी बनाया। उनपर क़ुरआन अवतरित किया और धर्म को पूर्ण किया। उसने अपनी
से क़ुरआन की सुरक्षा की भी व्यवस्था कर दी। अब क़ुरआन सारी मानवता के लिए पथप्रदर्शक
क़ुरआन आप (सल्ल.) के मक्का और मदीना के निवास-काल में 23 वर्ष तक थोड़ा-थोड़ा
तरित होता रहा। इसकी भाषा अरबी है। यह लिखित किताब के रूप में अवतरित नहीं होता था।
के प्यारे नबी (सल्ल.) को जिबरील (अलैहि.), जो कि एक प्रतिष्ठित फ़रिशता थे, स्पष्ट शब्दों में
आन का कुछ अंश सुनाते। वे जो कुछ सुनाते वह एक प्रभावशाली भाषण के रूप में होता था। प्यारे
उसे याद कर लेते और उसी क्षण लिपिक (लिखनेवाले व्यक्ति) को बुलाकर उसे लिखवा देते।
आन लिखने के लिए एक दर्जन से अधिक लिपिक निर्धारित किए गए थे। उनमें से कुछ लोग अपना
य निश्चित करके हमेशा प्यारे नबी (सल्ल.) के साथ रहते थे। अवतरित अंशों को भाषण के रूप
यारे नबी (सल्ल.) लोगों को सुनाते। भाषण में लोगों से सत्य मार्ग पर चलने का आह्वान होता
। सत्य और असत्य को तर्कों और प्रमाणों द्वारा खोल-खोलकर समझाया जाता था। बुद्धि और
वेक से काम लेने के लिए लोगों को प्रेरित किया जाता था। लिपिक क़ुरआन के अवतरित अंशों की

कई-कई प्रतियाँ तैयार करते और उन्हें मुसलमानों में फैलाते। वे उन्हें याद कर लेते। क़ुरआन विभिन्न अंश प्रतिदिन नमाज़ों में कई बार दोहराए जाते। इस भाषण की सत्यता, शैली और मोहकत लोग बहुत अधिक प्रभावित होते थे। इसी कारण विरोधियों ने आपको जादूगर और शायर क विरोधियों के आरोपों का खंडन भी क़ुरआन ने सशक्त ढंग से किया। क़ुरआन के पठन-पाठन प्रचलन बहुत तेज़ी से हुआ। इस प्रकार क़ुरआन के पूर्ण होते-होते सारे अंशों को अधिकांश मुसलम ने कंठस्थ कर लिया। ऐसे लोग क़ुरआन के हाफ़िज़ एवं क़ारी कहलाते। प्यारे नबी (सल्ल.) को पूरा क़ुरआन याद था। नमाज़ों और भाषणों के अतिरिक्त समयों में भी वे क़ुरआन की तिलावत (पा करते और मुसलमानों को भी इसपर उभारते। क़ुरआन के पढ़ने और समझने में जो सबसे श्रेष्ठ होता उच्च पद और प्रतिष्ठा पाता। प्यारे नबी के जीवन के अंतिम दिनों में पूरा क़ुरआन लिखित रूप में उ हज़ारों व्यक्तियों के कंठस्थ रूप में सुरक्षित हो चुका था। तब से आज तक उसके पढ़ने और याद क का क्रम जारी है। मुद्रण-कला का आविष्कार होने से पहले भी क़ुरआन की हस्तलिखित लाखों प्रति हर युग में तैयार की जाती रहीं। उनमें से बहुत-सी उत्तम प्रतियाँ विश्व के विभिन्न संग्रहालयों पुस्तकालयों में सुरक्षित हैं। आज भी क़ुरआन ही संसार में सबसे अधिक पढ़ी जानेवाली और प्रकाशि होनेवाली पुस्तक है।

क़ुरआन का संकलन प्यारे नबी (सल्ल.) के संरक्षण और उनकी देख-रेख में हुआ। न (सल्ल.) अलग-अलग समय में अवतरित होनेवाले अंशों को ईश्वर के आदेशानुसार निश्चित स्थ पर रखवाया। क़ुरआन के अन्दर मात्र ईश्वर की वाणी है। उसमें प्यारे नबी या किसी अन्य व्यक्ति एक शब्द भी नहीं है। प्यारे नबी (सल्ल.) के उपदेशों, आदेशों और शिक्षाओं को अलग से संकलि किया गया है जिन्हें हम 'हदीस' कहते हैं।

क़ुरआन के वाक्य अथवा वाक्यांश को 'आयत' कहते हैं। आयत कभी तो एक पूरा वा होता है और कभी वाक्यांश, और कभी दो या तीन आयतों को मिलाने से एक वाक्य पूरा होता आयतें कहीं बहुत छोटी एक-दो अक्षरों की और कहीं बहुत बड़ी, एक या आधे पृष्ठ पर फैली होती कई आयतों के समूह को सूरा (सूरत) कहा जाता है। हर सूरा एक पूर्ण इकाई होती है अर्थात् अ कथन और उद्देश्य को पूर्ण करती है। क़ुरआन में कुल 114 सूरतें (अध्याय) हैं। इनमें कुछ छोटी अ कुछ बड़ी सूरतें हैं। सबसे छोटी सूरा 'अल-कौसर' तीन आयतों की और सबसे बड़ी सूरा 'अल बक़रा' 286 आयतों की है।

बाद के समय में विद्वानों ने तिलावत (पाठ) की सुविधा के लिए क़ुरआन को तीस भागों विभाजित किया है। हर एक भाग 'पारा' (खण्ड) कहलाता है। तीस भागों में होने के कारण इ

ोपारा' भी कहा जाता है, क्योंकि फ़ारसी में 'सी' का अर्थ 'तीस' और 'पारा' का अर्थ 'टुकड़ा' या
ण्ड' होता है। इससे यह सुविधा होती है कि प्रतिदिन एक-एक पारा तिलावत करके एक माह में पूरा
ुआन समाप्त कर लिया जाता है। क़ुरआन को प्रतिदिन तिलावत करने और एक माह में पूरा क़ुरआन
त्म करने की ताकीद प्यारे नबी (सल्ल.) ने की है। इसके अतिरिक्त क़ुरआन में एक और
भाजन-चिह्न है जिसे 'रुकूअ' कहते हैं। नमाज़ों में तिलावत की सुविधा के लिए ये चिह्न डाले गए
नमाज़ में एक रिकअत पूरी करके घुटनों पर हाथ रखकर झुकने को 'रुकूअ' कहते हैं। क़ुरआन में
ूअ का चिह्न इसलिए है कि नमाज़ी उतने अंश पढ़कर रुकूअ करे। हर रुकूअ के अन्दर कुछ आयतें
ती हैं।

आयत और सूरा का विभाजन अपना स्थायी महत्त्व रखते हैं। पारा और रुकूअ चूँकि प्यारे नबी
ल्ल.) के बाद सुविधा के लिए अपनाए गए हैं, अत: इनका विशेष महत्त्व नहीं है। इसलिए क़ुरआन
। कुछ प्रतियों में उन्हें नहीं दर्शाया जाता है।

क़ुरआन की शैली अत्यंत मनोरम है। इसमें अत्यन्त सम्मोहक शैली में किसी बात का वर्णन
के लोगों की बुद्धि और विवेक को उद्वेलित किया गया है। कहीं प्रचंड शैली में भयंकर स्थिति का
न किया गया है, ताकि अचेत लोग सतर्क हो जाएँ, अपने अंतिम परिणामों के प्रति सजग हो जाएँ।
इतना प्रभावकारी है कि कठोर हृदय भी काँपने लगता है। कहीं प्यार और स्नेह की ऐसी वर्षा होती
कि पाठक ऐसा महसूस करता है कि वह दयानिधि की गोद में बैठा है। थपकियाँ देकर उसे समझाया
रहा है। उसका हृदय भाव-विभोर हो जाता है। इस प्रकार मानव की विभिन्न मन:स्थितियों को
र्श करता हुआ क़ुरआन उसके हृदय में उतर जाता है। मानव यह सोचने पर विवश हो जाता है कि
रआन जो कुछ कहता है, हमारे हित के लिए ही कहता है।

क़ुरआन मूल रूप से न्याय की स्थापना चाहता है। वह ईश्वर की पहचान और उसके प्रति
नव के कर्त्तव्य को स्पष्ट करता है। क़ुरआन समाज में माता-पिता, परिवार, पड़ोस, राज्य और पूरी
नवता के प्रति मनुष्य के कर्त्तव्यों की व्याख्या करता है। यह मानव-जीवन का उद्देश्य बताता है और
ाय-स्थापना की प्रक्रिया में अंतिम परिणामों की आवश्यकता से हमें अवगत कराता है। क़ुरआन की
क्षाओं के अनुकूल एक लम्बी अवधि तक संसार के बड़े भागों में शासन-व्यवस्था चलाई गई।
सकी सफलता और समाज के विकास का इतिहास मौजूद है। क़ुरआन की शिक्षाओं द्वारा
ख-शांति, विश्व-भ्रातृत्व, न्याय, सहानुभूति और मानव-सेवा का वातावरण संसार में उत्पन्न होना
तिहास की अविस्मरणीय घटना है।

शब्दार्थ और टिप्पणी

अवतरित	= नाज़िल, उतरा हुआ	कंठस्थ	= हिफ़्ज़, याद
संरक्षण	= हिफ़ाज़त	विभाजन	= तक़सीम, बँटवारा
सतर्क	= सावधान, होशियार	अविस्मरणीय	= न भूलने योग्य, यादगार
प्रभावित	= मुतास्सिर	वातावरण	= माहौल
प्रक्रिया	= काम की विधि या क्रम	अवगत	= आगाह होना, जानना
अनुकूल	= मुताबिक़, मुवाफ़िक़	भ्रातृत्व	= भाईचारा
अनुसरण	= पीछे-पीछे चलना	अंश	= टुकड़ा, भाग
लिपिक	= लिखनेवाला	आह्वान	= पुकार, सम्बोधन
तर्क	= दलील, प्रमाण	विवेक	= शऊर, समझ
प्रेरित	= प्रेरणा-प्राप्त, उत्साहित	मोहक	= मोह लेनेवाला
व्याख्या	= विस्तृत वर्णन	सशक्त	= मज़बूत, ताक़तवर
संकलन	= एकत्र करना, संग्रह	वाणी	= बोल, कथन
उपदेश	= नसीहत	सीपारा	= तीस टुकड़े
विवरण	= बयान	प्रतियाँ	= जिल्दें
मनोरम	= मन को रमानेवाल, मनपसन्द	प्रचंड	= अति उग्र, भयंकर
अचेत	= बेहोश,बेख़बर	सजग	= होशियार, जगा हुआ
स्नेह	= प्रेम	दयानिधि	= दया का भंडार
मन:स्थिति	= मन की हालत	मुद्रण-कला	= छपाई की कला

अभ्यास

(क) नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए :

1. क़ुरआन मजीद किसपर अवतरित हुआ ?
2. पूर्ण क़ुरआन कितने वर्षों में अवतरित हुआ ?
3. संसार में सबसे अधिक कौन-सी पुस्तक पढ़ी जाती है ?
4. क़ुरआन मजीद किसकी वाणी है ?
5. 'हदीस' किसे कहते हैं ?

6. 'सीपारा' का अर्थ समझाइए।
7. क़ुरआन मजीद के अंशों को नबी (सल्ल.) तक लानेवाले प्रतिष्ठित फ़रिश्ते का क्या नाम है?

(ग) उचित शब्द लिखकर वाक्य पूरा कीजिए :

1. क़ुरआन मजीद की भाषा .... है। (फ़ारसी, अरबी)
2. मुहम्मद (सल्ल.) को अल्लाह ने .... नबी बनाया। (प्रथम, अंतिम)
3. क़ुरआन मजीद की शैली अत्यंत .... है। (मनोरम, नीरस)
4. क़ुरआन मजीद में कुल .... सूरतें हैं। (141, 114)
5. क़ुरआन मजीद मूल रूप से .... की स्थापना चाहता है। (न्याय, मनोरंजन)

घ) उत्तर संक्षेप में लिखिए :

1. अल्लाह ने हर ज़माने में अपने दूत (पैग़म्बर) किस लिए भेजे?
2. क़ुरआन मजीद में कुल कितनी सूरतें हैं?
3. सबसे छोटी सूरा कौन-सी है और उसमें कितनी आयतें हैं?
4. सबसे बड़ी सूरा का नाम बताओ। उसमें कितनी आयतें हैं?
5. क़ुरआन मजीद में कुल कितने पारे हैं?
6. रुकूअ किसे कहते हैं?

भाषा-बोध

क) निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए :

(i) प्यारे नबी (सल्ल.) के उपदेशों, आदेशों और उनकी शिक्षाओं को हदीस कहते हैं।
(ii) पवित्र क़ुरआन माता-पिता, संतान, परिवार, पड़ोस, समाज, राज्य और पूरी मानव-जाति के कर्तव्यों की व्याख्या करता है।
(iii) रुको, मत जाओ।
(iv) रुको मत, जाओ।

उपर्युक्त वाक्यों में ' , ' का प्रयोग अनेक स्थानों पर किया गया है। इस चिह्न (,) अल्पविराम (Comma) कहते हैं। अल्पविराम का अर्थ है थोड़ी देर के लिए ठहराव। यह ठहराव उत ही देर के लिए वांछित है जितनी देर 'एक' के उच्चारण में लगती है।

निम्नलिखित वाक्यों में अल्पविराम (,) का प्रयोग कीजिए :

सलीम अकरम तनवीर और ताहिर मुम्बई गए।
नहाओ खाओ आराम करो फिर पढ़ने जाना।
नहीं-नहीं मैं ऐसा नहीं करूँगा।
भाइयो और बहनो मुझे आपसे कुछ ज़रूरी बातें कहनी हैं।
खाओ मत उठो (खाने से रोकने के अर्थ में)।
खाओ मत उठो (खाने का आदेश देने के अर्थ में)।
पढ़ना है तो पढ़ो नहीं तो सो जाओ।

पाठ – 16
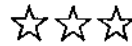
कबीर के दोहे

साईं इतना दीजिए, जामें कुटुम समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय।। (1)

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।
जाके हृदय साँच है, ताके हृदय आप ।। (2)

दया दिल में राखिए तू क्यों निरदय होय ।
साईं के सब जीव हैं कीड़ी कुंजर दोय ।। (3)

जहाँ दया वहाँ धर्म है, जहाँ लोभ तहाँ पाप।
जहाँ क्रोध तहाँ काल है, जहाँ क्षमा तहँ आप ।। (4)

कबीरा गर्व न कीजिए काल गहे कल केस ।
ना जानौ कित मारिहै क्या घर क्या परदेस ।। (5)

सज्जन जग में कौन है, किसको माना जाय ।
जो चाहे सबका भला, सज्जन वही कहाय ।। (6)

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर ।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर ।। (7)

दुख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय ।
जो सुख में सुमिरन करें, दुख काहे को होय ।। (8)

कुटिल वचन सबसे बुरा, जारि करे तन छार ।
साधु वचन जल रूप है, बरसे अमृत धार ।। (9)

शब्दार्थ और टिप्पणी

साईं	=	मालिक, स्वामी, ईश्वर	जामें	=	जिसमें
समाय	=	समा जाए	काल	=	मृत्यु, मौत, कल
क्रोध	=	कोप, गुस्सा	निरदय	=	निष्ठुर, कठोर
दया	=	कृपा, रहम	कीड़ी	=	चींटी
जीव	=	जीवधारी, प्राणी	गर्व	=	अभिमान
कुंजर	=	हाथी	केस	=	बाल
गहै	=	पकड़े	मारिहै	=	मारेगा
कित	=	कहाँ	सज्जन	=	भला आदमी
सीतल	=	शीतल, ठंडा	अमृत धार	=	अमृत की धारा, आबे-हयात
तन	=	शरीर	आपा	=	अपनी बड़ाई
बानी	=	वचन, बोली	सुमिरन	=	याद, उपासना
पंथी	=	राही, रास्ता चलनेवाला	छार	=	राख, भस्म
कुटिल वचन	=	टेढ़ी बात	कुटुम	=	परिवार

अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :

1. संत कबीर ने ईश्वर से कितना माँगा है और क्यों ?
2. जहाँ दया, लोभ, क्रोध, क्षमा है वहाँ क्या-क्या होते हैं ?
3. सुख में ईश्वर को याद करने से क्या होता है ?
4. कवि के अनुसार सज्जन कौन कहलाता है ?
5. खजूर के पेड़ की क्या विशेषता है ?
6. कुटिल व्यक्ति और सज्जन व्यक्ति के वचन में क्या अन्तर है ?

ब) ख़ाली जगह पूरी करो :

1. दया दिल में राखिए तू क्यों ....होय।
   साईं के सब जीव हैं कीड़ी कुंजर दोय ॥

2. कबीरा गर्व न कीज़िए काल गहे कल केस ।
   ना जानौ कित मारिहै क्या...... क्या परदेस ॥

छ और काम

कबीर के पाँच दोहे याद करके अपनी कक्षा में सुनाओ।

☆☆☆

पाठ – 17

चार यार

इस्लामी राज्य के प्रमुख अधिकारी को 'ख़लीफ़ा' कहते हैं। ख़लीफ़ा का अर्थ है नायब
प्रतिनिधि। आम मुसलमानों की सहमति से अपने में से सबसे उत्तम व्यक्ति को ख़लीफ़ा चुना जाता है
हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पश्चात् इस्लामी राज्य के चार प्रमुख ख़लीफ़ा हु
हैं – 1. हज़रत अबू बक्र (रज़ि.), 2. हज़रत उमर (रज़ि.), 3. हज़रत उस्मान (रज़ि.) और 4. हज़
अली (रज़ि.)। इन महापुरुषों ने इस्लामी राज्य का ऐसा आदर्श और कुशल प्रबन्ध किया कि आ
सैकड़ों वर्ष बीतने पर भी दुनिया उन्हें याद करती है। ये अल्लाह के बन्दे तथा हज़रत मुहम्मद (सल्ल
के सच्चे अनुयायी और घनिष्ठ मित्र थे। अत: उन्हें 'चार यार' कहा जाता है।

हज़रत अबू बक्र (रज़ि.) : मर्दों में सबसे पहले आपने ही इस्लाम क़बूल किया अ
अल्लाह के आख़री रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) के परलोक सिधारने के बाद आप ही को सब
पहला ख़लीफ़ा नियुक्त किया गया। हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) ने अपनी बीमारी के दिनों में हज़रत अ
बक्र (रज़ि.) ही को नमाज़ पढ़ाने के लिए इमाम नियुक्त किया। अत: प्यारे रसूल (सल्ल.) के बा
आप ही को सर्वसम्मति से ख़लीफ़ा चुना गया। आप सादा जीवन बिताते। जनता की सुख-सुविधा व
बड़ा ध्यान रखते। आपको इस्लाम के प्रचार-प्रसार की बड़ी चिन्ता रहती। ख़लीफ़ा होने से पहले आ
कपड़े का कारोबार करते थे। शासन का दायित्त्व आ जाने के बाद सहाबा ने आपको कारोबार करने
रोक दिया और 'बैतुलमाल' (सरकारी-कोष) से भरण-पोषण के लिए वज़ीफ़ा निर्धारित कर दिया
आप पूरी-पूरी रात इबादत करते और क़ुरआन पढ़ते। दिन में प्राय: रोज़ा रखते। आपका शासनका
मात्र सवा दो वर्ष (12 रबीउल-अव्वल, सन् 11 हिजरी से 23 जुमादल-उख़रा, सन् 13 हिजरी तक
है।

हज़रत उमर (रज़ि.) : हज़रत अबू बक्र (रज़ि.) के देहान्त के पश्चात् हज़रत उमर (रज़ि.
ख़लीफ़ा हुए। हज़रत उमर (रज़ि.) दस वर्ष छह महीना चार दिन (23 जुमादल-उख़रा सन् 13 हिजर
से एक मुहर्रम सन् 24 हिजरी तक) ख़लीफ़ा रहे। आप की ख़िलाफ़त उत्तम शासन-व्यवस्था के लि
प्रसिद्ध है। ग़ैर-मुसलिम विद्वान भी इसे इतिहास का आदर्शकाल मानते हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) क़ुरैश
क़बीले के अत्यन्त वीर तथा निडर सरदारों में से थे। अरबवासियों पर आपका बड़ा दबदबा था। कुश्त

ने, तीर चलाने तथा घुड़सवारी में आप बहुत दक्ष थे। आप बुराई से बहुत घृणा करते थे।

ख़िलाफ़त का भार सँभालने के पश्चात् आपने दुआ की, "ऐ अल्लाह! मैं कठोर स्वभाव का मुझे कोमल स्वभाववाला बना दे और मुझे क़ुरआन की समझ प्रदान कर।" आप रात-रात भर वेश लकर आबादियों में गश्त लगाते और जनता के दुखों और कष्टों के बारे में जानकारी प्राप्त करते। हें आराम पहुँचाने का तुरन्त उपाय करते। आपके राज्य में जनता बड़ी सुखी थी। आस-पास के जा और नरेश तक आपका नाम सुनकर घबरा जाते। थोड़े ही समय में अनेक देश जैसे– सीरिया, क़, मिस्र, ईरान तथा ख़ुरासान इत्यादि इस्लामी राज्य के अंग बन गए।

हज़रत उमर (रज़ि.) ने न्यायालय, सेना तथा पुलिस के विभाग स्थापित किए। क़िलों का र्माण करवाया। अनाथों, विधवाओं तथा बेसहारा लोगों के भरण-पोषण का प्रबन्ध किया। ठशालाएँ खुलवाईं। सड़कों के किनारे तालाब, नहरें तथा कुएँ ख़ुदवाए और मुसाफ़िरख़ाने बनवाए। लामी ख़लीफ़ा के लिए आपने "अमीरूल मोमीनीन' की उपाधि पसन्द की।

आपका जीवन बड़ा पाकीज़ा तथा सादा था। क़ुरआन का पाठ करते समय इतना रोते कि ाँखें सूज जातीं।

हज़रत उस्मान (रज़ि.) : हज़रत उमर के पश्चात् हज़रत उस्मान (रज़ि.) को ख़लीफ़ा चुना या। आप बड़े विनम्र और लज्जाशील स्वभाव के थे। प्यारे नबी (सल्ल.) की सुपुत्री हज़रत रुक़ैया ज़ि.) के साथ आपका विवाह हुआ था, परन्तु कुछ ही दिनों के पश्चात् उनका देहांत हो गया तो ज़रत मुहम्मद (सल्ल.) ने अपनी दूसरी सुपुत्री उम्मे-कुलसूम (रज़ि.) का विवाह हज़रत उस्मान के थ कर दिया। इसी लिए आपको "ज़ुन्-नूरैन" अर्थात् दो नूरवाला कहा जाता है। आप अत्यन्त दार, नेक और दानशील थे। आप अरब के सुप्रसिद्ध व्यापारी तथा धनवान व्यक्ति थे। बड़े ठाट-बाट ा जीवन बिताते थे, परन्तु ईमान लाने के पश्चात् सारा ऐश व आराम त्याग दिया और अपनी दौलत स्लाम की सेवा में लगा दी।

मुसलमानों की आबादी जब अधिक हो गई तो आपने मस्जिदे-नबवी के आस-पास के कान और ज़मीनें ख़रीदकर मस्जिद का विस्तार करवाया। आपने सड़कों, पुलों और मुसाफ़िरख़ानों ा निर्माण करवाया। सरकारी काम-काज के लिए इमारतें बनवाईं। ख़ैबर की ओर से बाढ़ की ाशंका को दूर करने के लिए एक मज़बूत बांध बनवाया। क़ुरआन का प्रचार-प्रसार करने का उत्तम बंध किया।

आप अपने घर में क़ुरआन का पाठ कर रहे थे, उसी समय कुछ विद्रोही घर में घुस आए ३
आपको शहीद कर दिया। आपका शासनकाल बारह वर्ष (4 मुहर्रम सन् 24 हिजरी से
ज़िलहिज्जा सन् 35 हिजरी तक) था।

हज़रत अली (रज़ि.) : हज़रत अली (रज़ि.) को इस्लामी राज्य का चौथा ख़लीफ़ा चु
गया। हज़रत अली का विवाह हमारे रसूल (सल्ल.) की सबसे छोटी बेटी हज़रत फ़ातिमा ज़हरा (रज़ि
से हुआ था। हज़रत हसन (रज़ि.) और हुसैन (रज़ि.) आप ही के सुपुत्र थे। जब अल्लाह के रस
(सल्ल.) तबूक की लड़ाई के लिए जाने लगे तो हज़रत अली (रज़ि.) को घरवालों की देख-रेख
लिए मदीना में छोड़ दिया और फ़रमाया, "अली! तुम मेरे लिए ऐसे हो जैसे हारून मूसा के लिए थे
प्यारे रसूल फ़रमाते थे, "जिसने अली को मित्र बनाया उसने मुझे मित्र बनाया और जिसने मुझे मि
बनाया उसने अल्लाह को मित्र बनाया।"

हज़रत अली (रज़ि.) पाँच वर्ष (21 ज़िलहिज्जा सन् 35 हिजरी से 20 रमज़ान सन् 4
हिजरी तक) ख़लीफ़ा रहे। आपको भी एक अभागे ने शहीद कर दिया।

इस प्रकार इन चारों महापुरुषों ने शासन-प्रबंध जिस कुशलता और बुद्धिमत्ता के साथ किय
इतिहास में ऐसे आदर्श शासन का उदाहरण नहीं मिलता। इन चारों ख़ुलफ़ा (ख़लीफ़ाओं) के बाद
शासन-कार्य ख़िलाफ़त के नाम से ही चलता रहा, लेकिन बाद के शासक शासन-प्रशासन के माम
में अपनी योग्यता और आदर्श चरित्र प्रस्तुत नहीं कर सके, जिसके कारण वे आदर्श ख़लीफ़ा न रहे।
भौतिकवादी बादशाहों और राजाओं का रंग-ढंग अपनाते चले गए। इस्लामी शासन-प्रणाली
ख़लीफ़ा का चयन जनता द्वारा होता था, परन्तु कालान्तर में बादशाहों का वंशानुगत शासन आरंभ
गया। राज्य-कोष (बैतुलमाल) आम जनता की सम्पत्ति न होकर बादशाह की व्यक्तिगत सम्पत्ति
गई।

शासन-तंत्र में बहुत-सी ख़राबियाँ आ जाने के बावजूद इन बादशाहों में भी अनेक लो
उदार, विद्वान और जनहित के लिए सर्वस्व निछावर करनेवाले हुए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

ख़लीफ़ा	=	प्रतिनिधि	कुशल	=	माहिर
घनिष्ट मित्र	=	गहरा दोस्त	अनुयायी	=	उम्मती, पैरवी करनेवाला
निर्माण	=	तामीर	प्रबंध	=	इन्तिज़ाम

शासन-तंत्र	=	हुकूमत	सर्वस्व	=	सब कुछ
निछावर	=	क़ुरबान	घृणा	=	नफ़रत
दायित्त्व	=	ज़िम्मेदारी	आदर्श	=	मिसाली
दक्ष	=	माहिर	नरेश	=	राजा, सरदार
उदार	=	खुले दिल का	आशंका	=	ड़र, सन्देह
विद्रोही	=	बाग़ी	तत्पश्चात	=	इसके बाद
सुचारु	=	अत्यन्त सुन्दर			

अभ्यास

क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. ख़लीफ़ा किसे कहते हैं ?
2. ख़लीफ़ा का चुनाव कैसे होता है ?
3. चार यार कौन थे ? उनको इस नाम से क्यों पुकारा जाता है ?
3. सबसे पहले ख़लीफ़ा का नाम बताओ ? उन्होंने कितने वर्ष ख़िलाफ़त की ?
4. हज़रत उमर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त के ज़माने की चार विशेषताएँ बताइए।
5. हज़रत उस्मान (रज़ि.) को ज़ुन-नूरैन (दो नूरवाला) क्यों कहा जाता है ?
6. प्यारे नबी (सल्ल.) ने हज़रत अली (रज़ि.) के विषय में क्या फ़रमाया ?

ख) ख़ाली जगहों को भरिए :

1. हज़रत अबू बक्र (रज़ि.) .... के आराम का बड़ा ध्यान रखते थे।
2. ख़लीफ़ा होने से पहले अबू बक्र (रज़ि.)............ का कारोबार करते थे।
3. हज़रत उमर (रज़ि.) .... वर्ष ख़लीफ़ा रहे।
4. हज़रत उमर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त .... व्यवस्था के लिए प्रसिद्ध है।
5. हज़रत उमर (रज़ि.) के राज्य में जनता बड़ी .... थी।
6. हज़रत उस्मान (रज़ि.) अत्यन्त उदार, नेक और .... थे।
7. हज़रत उस्मान (रज़ि.) ने मस्जिदे-नबवी का .... करवाया।
8. हज़रत अली (रज़ि.) .... वर्ष ख़लीफ़ा रहे।

(ग) नीचे कुछ कथन दिए गए हैं। कथन के सामने कहनेवाले का नाम लिखिए :

1. "मुझे क़ुरआन की समझ प्रदान कर दे।" (   )
2. "अली! तुम मेरे लिए ऐसे हो, जैसे हारून मूसा के लिए थे।" (   )
3. "जिसने मुझे मित्र बनाया, उसने अल्लाह को मित्र बनाया।" (   )
4. "मुझे कोमल स्वभाववाला बना दे।" (   )

भाषा-बोध

(क) निम्नलिक्ति वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए :

असलम **धीरे-धीरे** बोला। रहीम **पढ़ते-पढ़ते** सो गया।
घोड़ा **तेज़** दौड़ता है। वे **हँसते-खेलते** जा रहे थे।

उपर्युक्त वाक्यों में क्रमशः 'धीरे-धीरे' 'पढ़ते-पढ़ते', 'तेज़' और 'हँसते-खेलते' शब्द क्रि की विशेषताओं को बता रहे हैं कि क्रिया किस प्रकार हो रही है। क्रिया की विशेष बतलानेवाले शब्दों को **क्रिया-विशेषण** कहते हैं।

क्रिया-विशेषणवाले पाँच वाक्य लिखकर अपने शिक्षक को दिखाइए।

(ख) यदि एक वचन शब्द के अन्त में दीर्घ (बड़ा) 'ऊ' (ू) हो तो उसके बहुवच रूप में ह्रस्व (छोटा) 'उ' (ु) हो जाता है। जैसे : ताऊ – ताउओं, टापू – टापुअ आदि।

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए :

जुगनू = ----------- आँसू = -----------
झाड़ू = ----------- चाकू = -----------
भालू = ----------- प्याऊ = -----------

कुछ और काम

चार यार अर्थात् चारों ख़लीफ़ाओं से सम्बन्धित और अधिक जानकारी अपने शिक्षक माता-पिता या किसी पुस्तक से प्राप्त कीजिए।

☆☆☆

पाठ–18
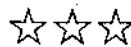
पर्यावरण की सुरक्षा
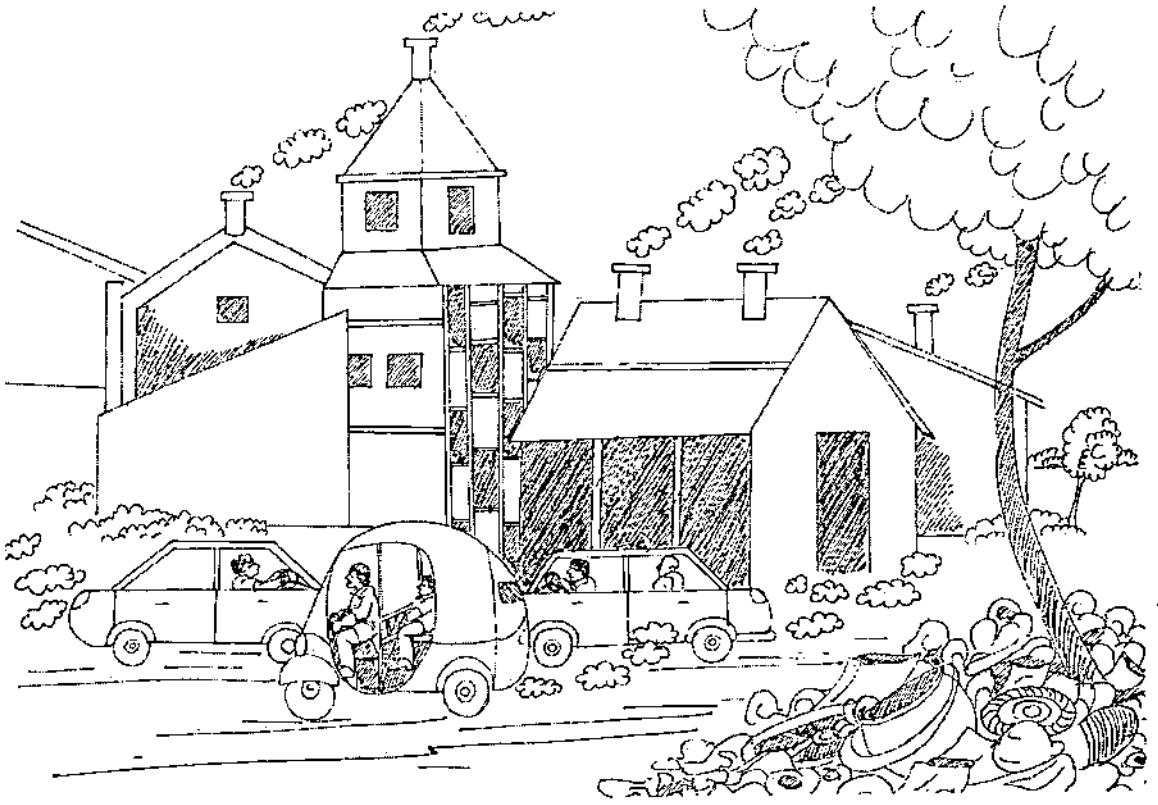
हमारी धरती के चारों ओर वायु की एक मोटी परत है। उसे वायुमंडल या वातावरण कहते हैं। ारे जीव-जन्तु और पेड़-पौधे इसी वायुमंडल में जीवित रहते हैं। अल्लाह ने जीवन के सभी साधन ातावरण से जोड़ दिए हैं। हवा, पानी, धरती, जीव-जन्तु, पेड़-पौधे इत्यादि हमारे जीवन के साधन ैं। इन साधनों में परस्पर गहरा सम्बन्ध है। इनसे वातावरण में संतुलन बना हुआ है। यह संतुलन हमारे ीवन के लिए उपयोगी है।

इनमें से कोई चीज़ हमारे लिए बेकार नहीं है। इनमें प्रत्येक चीज़ के बीच परस्पर अन्योन्याश्रित ंबंध है। इनके इस संबंध को अगर क्षति पहुँचाई जाती है या इनमें से किसी को नष्ट कर दिया जाता है ो सारा संतुलन बिगड़ जाता है। केवल मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े तथा वनस्पति के ीवन के लिए भी संकट उत्पन्न हो जाता है। धरती के आस-पास उपस्थित सारे प्राकृतिक साधनों को

पर्यावरण कहा जाता है। उसकी सुरक्षा करना जीव-जन्तुओं की अस्तित्व-रक्षा के लिए अनिवार्य है।

मानव अपना स्वार्थ साधने के लिए विभिन्न प्रकार से पर्यावरण के संतुलन को बिगाड़ता और पर्यावरण को प्रदूषित या क्षतिग्रस्त करके अपने जीवन के लिए संकट उत्पन्न कर लेता है। य उसके अपने हाथों की कमाई है, जिससे जल और थल में बिगाड़ और फ़साद फैल गया है।

पर्यावरण के प्रदूषित होने के अनेक कारण हैं। एक ओर घरेलू सतह पर अशिक्षा और अज्ञान की प्रमुख भूमिका है तो दूसरी ओर शिक्षित लोगों की स्वार्थपरता और उत्तरदायित्वहीनता भी इसक कारण है। हम सावधानी बरतकर पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचा सकते हैं। प्रायः हम देखते हैं f लोग अपने घरों के आसपास कूड़ा-कचरा डाल देते हैं। फलों के छिलके, सब्ज़ी के डंठल और उपयो में न आनेवाले अन्य पदार्थों के सड़ जाने के कारण उनमें दुर्गंध पैदा होती है और कीड़े पड़ जाते हैं उनपर मक्खियाँ बैठती हैं। वही मक्खियाँ हमारे घरों में आती हैं। उनके साथ रोगाणु हमारे घरों अ भोजन की वस्तुओं तक पहुँच जाते हैं। इससे तरह-तरह के रोग फैलते हैं। दुर्गंध से हवा प्रदूषित हो है। उसी प्रदूषित हवा को हम साँस के द्वारा अपने शरीर के अन्दर ले जाते हैं। इससे हमारा स्वास्थ बिगड़ जाता है। हम नालियों में गन्दगी बहा देते हैं जो प्रायः खुले होते हैं। कुछ लोग उसी में मल-मू भी डाल देते हैं। इससे भी हमारे पास-पड़ोस में गन्दगी फैलती है।

कूड़ा-कचरा फेंकने और नालियों की सफ़ाई की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए। जह सरकार की ओर से कूड़ेदान, पक्की नालियाँ और सफ़ाई की व्यवस्था नहीं है, वहाँ स्थानीय निवासिय को पारस्परिक सहयोग से इन चीज़ों की व्यवस्था करनी चाहिए। जनसाधारण को भी सफ़ाई क प्रशिक्षण देकर उनको जागरूक बनाना चाहिए, ताकि वे अपनी.असावधानी से गन्दगी न फैलाएँ।

कल-कारख़ाने, मोटर गाड़ियाँ, रेल गाड़ियाँ, हवाई जहाज़ इत्यादि के धुएँ और उनक आवाज़ों से भी प्रदूषण फैलता है। उनसे निकलनेवाली आवाज़ों से वायु में तीव्र कम्पन उत्पन्न होता है इसी प्रकार लाउड स्पीकर और तरह-तरह के बाजे, ढोल-धमाके, पटाख़े इत्यादि से भी वातावरण ं ध्वनि प्रदूषण फैलता है। धुएँ और रासायनिक ईंधनों से उत्पन्न विषैली गैसें हवा को दूषित करती हैं। ं सारी चीज़ें मनुष्यों, अन्य जीव-जन्तुओं तथा वनस्पतियों के लिए भी हानिकारक होती हैं। इसके कारण अनेक प्रकार के जीव-जन्तुओं की नस्लें समाप्त होने के कगार पर हैं और कोमल पेड़-पौधे कुम्हला र हैं। वायु-प्रदूषण के कारण श्वास-रोग, हृदय रोग, दृष्टिहीनता इत्यादि होते हैं।

कल-कारख़ानों के रासायनिक कचरों को नालियों द्वारा नदियों में बहा दिया जाता है। इससे नदियों का जल विषाक्त हो जाता है। वह मनुष्य के उपयोग के लायक़ नहीं रहता। मछलियाँ और अन्य

ीय जीव मर जाते हैं। विषाक्त जल पेड़-पौधों के लिए भी हानिकारक होता है। अतः कल-रख़ानों को आबादी से दूर स्थापित करने और उनसे उत्पन्न कचरों को नदियों के बजाय दूसरी जगह लने का उपाय किया जाना चाहिए। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की रिपोर्ट के अनुसार, मनुष्य में लनेवाले 90 प्रतिशत रोगों का कारण जल-प्रदूषण ही होता है। पेट की बीमारियाँ, रक्तचाप, रोग, आँख, गले और छाती के अधिकतर रोग प्रदूषित जल के कारण ही होते हैं।

जंगलों का क्षेत्रफल दिन-प्रतिदिन कम होता जा रहा है, क्योंकि कृषि-भूमि, गृह-निर्माण और न के लिए पेड़-पौधे काटे जा रहे हैं। इस कारण वायु में कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य हानिकारक तों का अनुपात बढ़ रहा है। धूप और गरमी में वृद्धि तथा वर्षा में कमी हो रही है। जंगली जानवरों । अनेक प्रजातियों का विनाश हो रहा है। इससे धरती के सारे जीव-जन्तुओं पर बुरा प्रभाव पड़ रहा । धरती की उर्वरा-शक्ति क्षीण हो रही है। उपजाऊ भूमि के बंजर और रेगिस्तान बन जाने का ख़तरा ढ़ गया है। फलतः वातावरण में असंतुलन उत्पन्न हो गया है।

अतः नए जंगल आबाद करने तथा ज़्यादा से ज़्यादा पेड़-पौधे लगाए जाने चाहिएँ। क्षारोपण-अभियान में हम सबको शामिल होना चाहिए। यह हर्ष का विषय है कि वृक्षारोपण के प्रति ा जागरूक हो गए हैं। हर वर्ष सामाजिक संस्थाओं और सरकारी योजनाओं के अन्तर्गत बड़े पैमाने वृक्षारोपण-अभियान चलाया जाता है। हमें भी आगे बढ़कर उसमें भाग लेना चाहिए। जीव-न्तुओं की नस्लों की सुरक्षा के भी उपाय किए जा रहे हैं। धनवानों की विलासितापूर्ण ज़िन्दगी भी र्यावरण को क्षति पहुँचाती है। वातानुकूलित कमरों और होटलों की अनावश्यक वृद्धि से जल-संपदा कमी होती है। एक कमरे को ठण्डा करने के लिए जितने पानी का उपयोग होता है उतने पानी से कड़ों लोगों की प्यास बुझ सकती है। सारा पानी धरती के अन्दर से निकाला जाता है। इसलिए धरती अन्दर पानी की सतह नीची हो रही है। कुएँ सूख रहे हैं। मनुष्य और पशुओं के लिए जल-आपूर्त्ति ी समस्या विकराल रूप धारण कर रही है।

विकसित देशों ने अपने आणविक परीक्षणों और आयुधों की तैयारी के कार्यक्रम से महासागरों ौर वायुमंडलीय ओज़ोन परतों को भारी क्षति पहुँचाई है। सूर्य की विषैली किरणों के रिसाव के कारण र्षा का जल दूषित हो रहा है और धरती के जीव-जन्तु और मिट्टी तथा वनस्पतियाँ रुग्ण और मृतप्राय रही हैं। विश्व के वैज्ञानिकों की चीख़-पुकार के बावजूद इस प्राणघाती आपदा को टालने की कोई ारगर व्यवस्था नहीं हो पा रही है। महाशक्तियाँ अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए लगातार अपनी माणु शक्तियों में दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि कर रही हैं। इससे आणविक ताप के विकिरण में वृद्धि हो ी है है। स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। अपंग शिशुओं के जन्म में वृद्धि आदि इसी के दुष्परिणाम ।

जब तक मानव के अन्दर अपने रब के प्रति उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न नहीं होगी, त तक मनुष्य अपने स्वार्थ और हानिकारक क्रिया-कलापों का त्याग नहीं कर सकता। बाहरी उपायों साथ-साथ मानव के मन की भावना को बदलने की भी आवश्यकता है।

विश्व के साधनों का मालिक मनुष्य नहीं बल्कि अल्लाह है। लेकिन अज्ञानतावश मनुष्य स्व को मालिक समझकर अपनी इच्छा से बिना रोक-टोक उसका दुरुपयोग करता है। इससे प्रकृति असंतुलन उत्पन्न होता है और विभिन्न प्रकार की विकृतियाँ फैलती हैं। अल्लाह की बनाई-सँवारी इस दुनिया को इनसान अपने हाथों से बिगाड़ रहा है। दुनिया का मालिक इसे पसन्द नहीं करता है उसकी दुनिया में फ़साद और बिगाड़ फैले।

अतः प्रकृति में गड़बड़ी पैदा करने और प्राकृतिक साधनों का अनुचित उपयोग करने आख़िरी पैग़म्बर और मानव-जाति के शुभचिन्तक हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) ने लोगों को रोका साधनों को सुरक्षित रखने, उनके विकास में योगदान देने और उनसे सबको लाभ पहुँचाने की शिक्षा है। ऐसा करने पर हम उन संपदाओं से स्वयं भी लाभ उठाएँगे और दूसरों को भी लाभ उठाने का अव देंगे, क्योंकि रब की पैदा की हुई हर चीज़ पर सबका समान अधिकार है। सिर्फ़ अपने हित के लिए ह दूसरों का अधिकार नहीं छीनेंगे। जब यह भावना मनुष्य में पैदा होगी तभी दुनिया में सुख-चैन व स्थापना हो सकती है, पर्यावरण में फैल रहे प्रदूषण पर नियंत्रण किया जा सकता है।

आज पर्यावरण के प्रदूषण का मुख्य कारण न सिर्फ़ अशिक्षा और अज्ञानता है, बल्कि ज़्यादा ज़्यादा धन कमाने की होड़ में प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन भी है।

शब्दार्थ और टिप्पणी

संतुलन	=	ठीक तालमेल, ठीक हालत में	संकट	=	मुसीबत
कीटाणु	=	जरासीम, अत्यन्त सूक्ष्म कीड़े	प्रदूषण	=	गन्दगी, आलूदगी
तीव्र	=	तेज़	दृष्टिहीनता	=	अन्धापन
विषाक्त	=	ज़हरीला	आणविक	=	एटमी, जौहरी
आयुध	=	लड़ाई के औज़ार, हथियार	रुग्ण	=	रोगी, बीमार
मृतप्राय	=	मरे हुए जैसा	अपंग	=	विकलांग, अपाहिज
प्रजनन	=	पैदाइश	उत्तरदायित्व	=	ज़िम्मेदारी
योगदान	=	मदद, सहायता	अन्योन्याश्रित	=	एक दूसरे पर आश्रित

स्तित्व-रक्षा	=	वुजूद की हिफ़ाज़त	क्षतिग्रस्त	=	नुक़सान पहुँचाया हुआ
ार्थपरता	=	ख़ुदग़र्ज़ी	समुचित	=	मुनासिब
़स्परिक	=	आपसी	क्षीण	=	कमज़ोर
लासितापूर्ण	=	ऐश-मस्ती से भरपूर	वातानुकूलित	=	माहौल के मुताबिक़
ादा	=	दौलत	विकराल	=	बहुत बड़ा, ख़ौफ़नाक
ापदा	=	मुसीबत, संकट	विकिरण	=	ताप
युमण्डल	=	पृथ्वी के चारों ओर फैली वायु की परत	वातावरण	=	पृथ्वी के चारों ओर की वायु
			उर्वरा-शक्ति	=	उपज-शक्ति, उपजाऊपन
ास्पति	=	पेड़-पौधे	भूमिका	=	हिस्सा, योगदान
ावरण	=	वातावरण, परिस्थिति	उत्तरदायित्वहीनता	=	ग़ैर ज़िम्मेदारी
ाणु	=	रोग के किटाणु	प्रशिक्षण	=	तरबियत, ट्रेनिंग
ागरूक	=	सजग, जाग्रत	रक्त-चाप	=	ब्लड प्रेशर
र्म-रोग	=	चमड़े की बीमारी	प्रजातियाँ	=	नस्लें

अभ्यास

क) एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. वायुमंडल किसे कहते हैं ?
2. पर्यावरण की सुरक्षा से क्या तात्पर्य है ?
3. वायु-प्रदूषण क्या है ?
4. हमारे पास-पड़ोस में गन्दगी कैसे फैलती है ?
5. वृक्षारोपण-अभियान क्यों चलाया जाता है ?

ख) संक्षेप में उत्तर लिखिए :

1. जल-प्रदूषण से कौन-कौन से रोग फैलते हैं ?
2. ध्वनि-प्रदूषण कैसे फैलता है ?
3. जंगल तेज़ी से क्यों समाप्त हो रहे हैं ?
4. जंगली जानवरों की अनेक प्रजातियों का विनाश क्यों हो रहा है ?

5. वातावरण का संतुलन किन-किन साधनों पर निर्भर करता है ?
6. वातावरण का संतुलन किन कारणों से बिगड़ रहा है ?
7. पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति हमारा क्या दायित्व है?

(ग) ख़ाली जगहों को भरो :

1. हम .... बरतकर पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचा सकते हैं।
2. .... जल पेड़-पौधों के लिए भी हानिकारक होता है।
3. रब की पैदा की हुई हर चीज़ पर सबका समान .... है।
4. पर्यावरण में फैल रहे ....पर नियंत्रण किया जा सकता है।
5. इस दुनिया को ....अपने हाथों से बिगाड़ रहा है।

भाषा-बोध

(क) किसी शब्द के अन्त में कुछ वर्ण, शब्दांश या शब्द जोड़कर एक नया शब्द बनाया जाता है अन्त में जोड़े जानेवाले शब्दांश को **प्रत्यय** कहते हैं, जैसे: संसार + इक = सांसारिक।

निम्नलिखित शब्दों में 'इक' प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाएँ। ध्यान रहे कि इक प्रत्यय लग से शब्द के प्रथम अक्षर में 'आ' की मात्रा बढ़ जाती है।

व्यवहार	+	इक	=	व्यावहारिक
परस्पर	+	इक	=	————
मर्म	+	इक	=	————
धर्म	+	इक	=	————
कल्पना	+	इक	=	————
लक्षण	+	इक	=	————
अणु	+	इक	=	————

? और काम

1. अपने शिक्षक की सहायता से पर्यावरण की सुरक्षा से सम्बंधित प्यारे रसूल (स्ल्ल.) की शिक्षाओं को अपनी कॉपी में संकलित कीजिए।

2. विश्व के स्रष्टा ने पर्यावरण को संतुलित बनाया है, लेकिन मनुष्यों ने उसमें असंतुलन पैदा कर दिया है। संतुलित पर्यावरण से होनेवाले दो लाभों को एक तालिका में और असंतुलित पर्यावरण से होनेवाली दो हानियों को दूसरी तालिका में लिखिए।

3. पर्यावरण के सम्बन्ध में प्यारे रसूल (सल्ल.) की कुछ हदीसें अपने शिक्षक से पूछकर कॉपी में लिखिए।

पाठ – 19

मचा है क्यों जग में अंधेर?

गया है फैल अनीश्वरवाद, भेड़िये फिरते हैं आज़ाद।
छोड़कर एकेश्वरवाद, गढ़ लिए नए बहुत-से वाद॥

भा गए सबको खट्टे बेर।
इसी कारण है यह अंधेर॥

सिखाता है नवीन विज्ञान, सताएँ निर्बल को बलवान।
बने हैं जग-नेता अज्ञान, चलाते हैं मनगढ़ंत विधान॥

देवता बने हैं धनी कुबेर।
मचा है इस कारण अंधेर॥

जगत्-जन हैं इतने अनभिज्ञ, धूर्त को कहते हैं नीतिज्ञ।
छल-कपट पर निर्भर वाणिज्य, छली का नाम निपुण और विज्ञ॥

लोमड़ी कहलाती है शेर।
तभी तो मचा है यह अंधेर॥

कामना है मेरी भगवान, सुनाऊँ मैं सबको क़ुरआन।
जगत् में फ़ैले सच्चा ज्ञान, विधाता तेरा चले विधान॥

प्रभु! संयमियों के दिन फेर।
मिटे दुनिया का सब अंधेर॥

— संकलि

ब्दार्थ और टिप्पणी

अनीश्वरवाद	=	नास्तिकता	अनभिज्ञ	=	बेख़बर, अनजान
छली	=	धोखेबाज़	संयमी	=	मुत्तक़ी, परहेज़गार
कामना	=	इच्छा, तमन्ना	निर्भर	=	आश्रित
विधान	=	नियम	वाद	=	मत, विचारधारा
कुबेर	=	धन के देवता	धूर्त	=	मक्कार, फ़रेबी
नीतिज्ञ	=	नीति (अख़लाक़) का जाननेवाला	वाणिज्य	=	व्यापार, तिजारत
निपुण	=	माहिर, दक्ष	विज्ञ	=	बहुत ज्ञानी
एकेश्वरवाद	=	तौहीद, यह मत कि जगत् का स्रष्टा और संहारक एक ही है	विधाता	=	बनानेवाला

अभ्यास

क) एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. भेड़िये आज़ाद क्यों फिरते हैं ?
2. विज्ञान क्या सिखाता है ?
3. छल-कपट पर कौन-कौन-सी बातें आश्रित हो गई हैं ?
4. कवि की क्या कामना है ?
5. कवि ने दुनिया का अंधेर मिटाने के लिए अपने प्रभु से क्या प्रार्थना की है ?

ख) निम्नलिखित वाक्यों में से सही वाक्यों के सामने सही (✓) का निशान और ग़लत वाक्यों के सामने ग़लत (✗) का निशान लगाइए :

1. अनीश्वरवाद के फैलने से भेड़िये आज़ाद फिरते हैं ( )
2. सबको खट्टे बेर भा गए, इसी कारण अंधेर फैला है। ( )
3. नवीन विज्ञान बलवानों को यह नहीं सिखाता कि निर्बलों को सताएँ। ( )
4. जगत् के नेता ज्ञानी लोग ही बने हैं। ( )
5. सारे कारोबार छल-कपट पर निर्भर हैं। ( )

(ग) निम्नलिखित पंक्तियों के रिक्त स्थानों में उचित शब्द लिखिए :

(1) छल-कपट पर निर्भर वाणिज्य, छली का नाम .... और विज्ञ।।
(2) जगत् में फैले .... ज्ञान, विधाता तेरा चले विधान।।
(3) प्रभु! संयमियों के दिन फेर, मिटे दुनिया का सब ....।।

भाषा-बोध

(क) नीचे कुछ शब्द और उनके विलोम दिए गए हैं। इन्हें ख़ूब अच्छी तरह पढ़िए अ समझिए तथा इसी तरह के पाँच नए शब्द लिखकर उनके विलोम शब्द लिखिए अ अपने शिक्षक को दिखाइए :

उदाहरण :

निर्बल	=	बलवान	अनभिज्ञ	=	भिज्ञ
उचित	=	अनुचित	आशा	=	निराशा
उदय	=	अस्त	अज्ञान	=	ज्ञान

(ख) स्तम्भ 'क' के शब्दों के समानार्थी शब्द स्तम्भ 'ख' में दिए गए हैं। सही जो लगाइए :

स्तम्भ 'क'	**स्तम्भ 'ख'**
निर्बल	चन्द्रिका
कामना	विश्व
जगत्	फूल
पुष्प	कमज़ोर
चाँदनी	इच्छा

☆☆☆

पाठ – 20
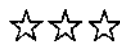
प्यारे नबी (सल्ल.) का देश

हमारे देश के पश्चिम में अरब देश है। इसी देश के 'मक्का' नगर में मानवता के उद्धारक, ंतिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पैदा हुए। उनके द्वारा लाई हुई ईश्वरीय योति के द्वारा संपूर्ण संसार से अज्ञानता का अंधकार दूर हुआ। इसी नगर में ईश्वरोपासना का पहला र 'काबा' है, जिसकी ओर मुँह करके सारे संसार के मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं। हर वर्ष 'हज' करने सार के कोने-कोने से लाखों नर-नारियाँ वहाँ जाते हैं और अपने प्रभु के प्रति अपनी अपार श्रद्धा और क्ति दर्शाते हैं।

अरब संसार का सबसे बड़ा प्रायद्वीप है। इसका क्षेत्रफल लगभग 8,65,000 वर्गमील है। सके उत्तर में कुवैत, इराक़ और जॉर्डन हैं, दक्षिण में यमन गणराज्य और ओमान हैं; पूर्व में संयुक्त रब इमारात, क़तर और बहरैन हैं और पश्चिम में लाल सागर लहराता है।

अरब के अधिकतर भाग में रेत के बड़े-बड़े मैदान हैं। रेत के इन मैदानों को 'रेगिस्तान' या मरुभूमि' कहते हैं। उत्तर-दक्षिण में पर्वत शृंखला है, जिससे जगह-जगह झरने और जलस्रोत फूटते हैं। न झरनों के आस-पास गाँव बस गए हैं। यहाँ खजूर के पेड़ और हरियाली पाई जाती है। रेगिस्तान का ह भाग 'नख़लिस्तान' या 'मरुद्यान' कहलाता है। कर्क रेखा अरब के मध्य भाग से गुज़रती है। अतः हाँ अप्रैल से जुलाई तक बहुत तेज़ गर्मी पड़ती है। रेगिस्तान में बड़े-बड़े तूफ़ान आते हैं। वर्षा होने पर गिस्तान के बड़े भाग में घास उग आती है। इन मैदानों में वहाँ के देहाती बद्दू अपने मवेशियों को चराते ैं।

अरब के लगभग सभी भागों की जलवायु शुष्क है। अतः वहाँ गर्मियों में तेज़ गर्मी और जाड़े में कड़ाके की सर्दी पड़ती है। दिन और रात के तापमान में भी काफ़ी अन्तर होता है। ऐसी जलवायु में ्री-भरी खेतियाँ संभव नहीं। वहाँ तो दूर-दूर तक हरे-भरे पेड़-पौधों का नामो-निशान नहीं मिलता। कँटीली झाड़ियाँ और लम्बी घास पाई जाती हैं। जिन क्षेत्रों में वर्षा होती है या कुओं और जलाशयों से सिंचाई की जाती है, वहाँ हरियाली पाई जाती है। फलों के बाग़ हैं, लेकिन अरबवासियों का मुख्य धन्धा नख़लिस्तानों में खेती करना, चरागाहों में भेड़, बकरी, ऊँट, ख़च्चर आदि का पालना और व्यवसाय रहा है।

यहाँ ऊँट का बड़ा महत्त्व है क्योंकि वह बिना चारे और पानी के कई दिनों तक ताज़ा दम रह सकता है। अपने पैरों की विशिष्ट बनावट के कारण वह बालू पर सरलता से तेज़ चलता है। रेगिस्तानी

प्यारे नबी का देश
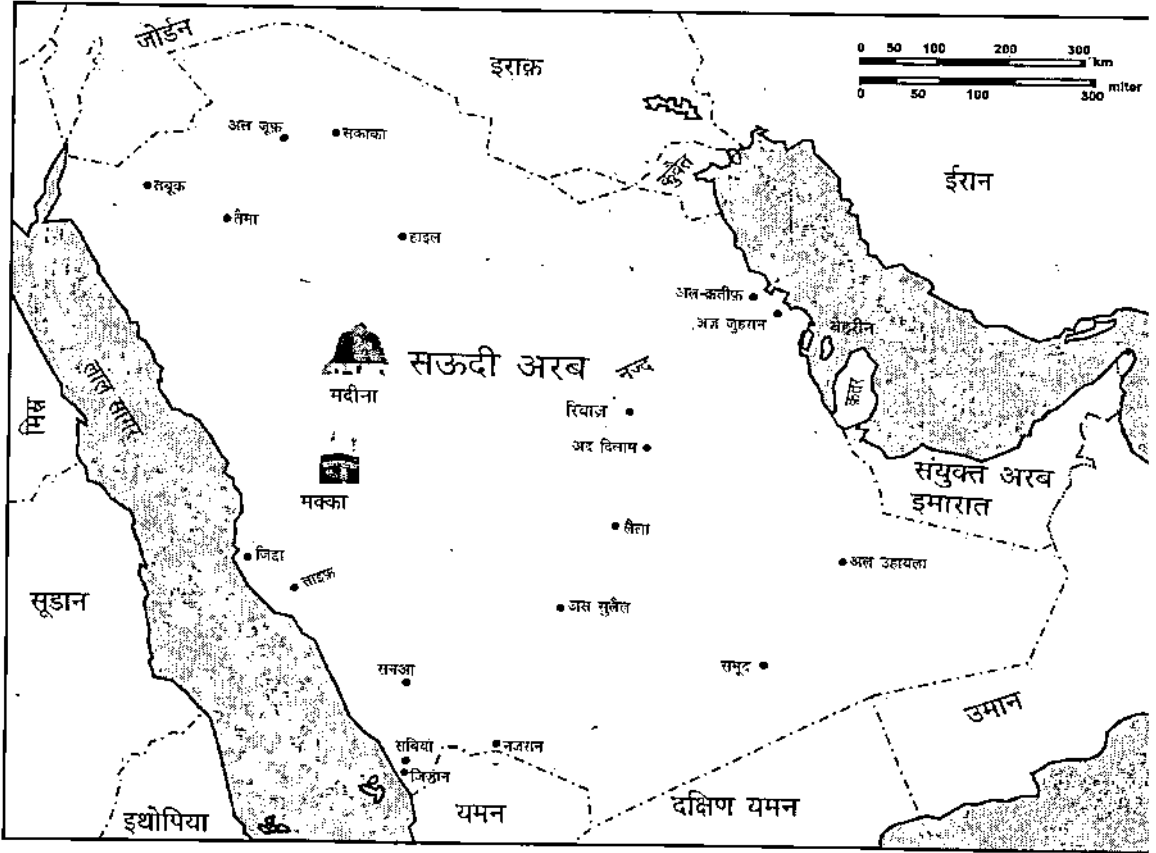
क्षेत्रों में यात्रा करने और सामान ढोने में वह बड़ा सहायक है। इसी कारण उसे 'रेगिस्तान का जहाज़ कहा जाता है। घोड़ा, गधा और ख़च्चर भी वहाँ पाले जाते हैं। अरब का घोड़ा अत्यन्त सुन्दर होता और स्वामी-भक्ति के लिए संसार भर में प्रसिद्ध है। पक्षियों में गरूड़, गिद्ध, शिकड़े, हुदहुद, कबूत और कौए मुख्य रूप से पाए जाते हैं। रेगिस्तानी इलाक़ों में टिड्डियाँ बहुत होती हैं। कुछ भागों में तेंदुआ भेड़िया, लोमड़ी, गोह और विभिन्न प्रकार के विषैले सर्प भी पाए जाते हैं।

अरब अत्यंत प्राचीन और महत्त्वपूर्ण देश है। विश्व के मानचित्र में अरब का स्थान आबादी वाले बड़े भू-भागों के मध्य में है। प्राचीन काल से ही संसार की सबसे घनी आबादी इसी के आस-पास रही है। ऐसा माना जाता है कि आरंभिक मानव की आबादी इसी के आस-पास के क्षेत्र तक सीमित थी। विकास के साथ-साथ यह आबादी दूर तक फैलती चली गई। मेसोपोटामिया, मिस्र यूनान, रोम, ईरान, भारत और चीन—ये प्राचीन सभ्यताओं के केन्द्र रहे हैं जो अरब के चतुर्दिक फैले हुए हैं। अति प्राचीन काल से ही अरबवासियों का सम्बन्ध बाहरी संसार से रहा है। यह वह भू-भाग है जिसके आस-पास ईश्वर के सबसे अधिक सन्देष्टा (पैग़म्बर) आए। यहाँ से सारी मानव-जाति के

त्र का सन्देश पहुँचाया गया। अल्लाह ने अपने अंतिम पैग़म्बर के लिए भी इसी पवित्र भू-भाग का
ान किया। प्राचीनकाल से ही हज़रत इबराहीम द्वारा निर्मित 'काबा' एक सर्वशक्तिमान ईश्वर के
त्तों का केन्द्र था। ईश्वर ने फिर से उसे सारी मानवता का केन्द्र बना दिया।

आज से लगभग डेढ़ हज़ार साल पूर्व अरब में प्यारे नबी (सल्ल.) द्वारा इस्लाम की पुनर्स्थापना
। हज़रत इबराहीम की इस्लामी शिक्षा को लोग भुला बैठे थे। अल्लाह की इबादत करने के
तिरिक्त बहुत-से बुतों को पूजने लगे थे। चारों ओर अज्ञान और अन्याय का राज्य स्थापित हो गया
। आबादी क़बीलों में बँट गई थी। क़बीलों के सरदार अपनी इच्छा के अनुसार अपने क़बीलों पर
सन करते थे। दूसरे क़बीलों से मतभेद होने पर युद्ध होते रहते थे। प्रतिशोध की भावना से वे निरंतर
ड़ते रहते थे। वे अत्यन्त बहादुर और निडर थे। उनमें जनसेवा और अतिथि-सत्कार की प्रबल भावना
थी। उनमें पढ़ने-लिखने का रिवाज बहुत कम था।

अंतिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) ने अल्लाह के आदेश से लोगों तक सत्य का सन्देश
ंचाया। इस्लाम का प्रचार किया। आरंभ में थोड़े-से लोगों के सिवा अधिकांश लोगों ने उनका
ोध किया। उन्हें यातनाएँ दी गईं। प्यारे नबी इन विरोधों और अत्याचारों के बीच सत्य और न्याय
सन्देश लोगों को देते रहे। ईश्वर की कृपा से थोड़े ही दिनों में अरब में इस्लाम फैल गया। इस्लाम
द्वारा अरब में सर्वप्रथम क़ानून की सत्ता स्थापित हुई। मानव-अधिकार और नैतिक आचार
निश्चित किए गए। क़ुरआन के द्वारा शिक्षा-दीक्षा का उत्तम प्रबन्ध किया गया। लिखने-पढ़ने का
ाज आम हो गया। लोगों के रहन-सहन और विचारों में नया बदलाव आया। न्याय, क़ानून,
ानता, भाईचारा और स्वतंत्रता का स्वर्णिम युग आया। संपूर्ण विश्व पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ा।
रे-धीरे इस्लाम संसार के लगभग सभी देशों में फैल गया और अपने विशिष्ट गुणों और सरलता के
रण आज भी फैल रहा है।

वर्त्तमान अरब प्रायद्वीप में सऊदी अरब के अतिरिक्त अनेक छोटे-छोटे स्वतंत्र मुस्लिम
राज्य हैं। सऊदी अरब सबसे बड़ा है और अरब प्रायद्वीप के 80 प्रतिशत भू-भाग पर फैला हुआ
सन् 1902 ई. में शाह सऊद परिवार के एक साहसी व्यक्ति अब्दुल अज़ीज़ अल-सऊद ने वर्तमान
रब सल्तनत की स्थापना की। सन् 1932 ई. में अपने वंश के नाम पर अपनी सल्तनत का नाम
मलिकते-सऊदी अरबिया' रखा।

शासन की दृष्टि से आज देश चार प्रांतों में विभाजित है। पश्चिमी भाग 'हिजाज़' है। इसका
चीन नाम फ़ारान था। इसी प्रांत में मक्का और मदीना नामक प्रमुख और पवित्र नगर हैं। मध्यवर्ती
ग 'नज्द' कहलाता है। दक्षिण-पश्चिम भाग का नाम 'असीर' है। पूर्वी प्रांत 'हस्सा' है। इसके
तिरिक्त दक्षिण-पश्चिम में 'नजरान', 'बिशा' और इमारात तथा उत्तर में उत्तरी सीमांत प्रांत हैं।

मरुभूमि होने के बावजूद अरब देश का बहुत तेज़ी से विकास हुआ है।

अरब प्राकृतिक सम्पदाओं से सम्पन्न देश है। सन् 1940 ई. के आस-पास 'हस्सा' प्रांत तेल (पेट्रोलियम) के भंडार का पता चला था। बाद में अन्य भागों में भी खनिज तेल के भंडार मिले सऊदी अरब में खनिज तेल और प्राकृतिक गैस के बड़े-बड़े भंडार हैं। इसके अतिरिक्त सोना, चाँ जस्ता, सीसा, ताँबा आदि के भी विशाल भंडार मिले हैं। इन खनिजों के द्वारा बहुत-से पेट्रो-रसा उद्योगों की स्थापना हुई है। देश की आय का बड़ा भाग इन्हीं खनिज-सम्पदाओं के निर्यात से प्राप्त हो है। वहाँ दिन दुना रात चौगुना आर्थिक विकास हो रहा है। वहाँ अब उत्तम कोटि के भव अस्पतालों, स्कूलों, सड़कों आदि का निर्माण हो गया है। दम्माम, होफ़ुफ़, हील, जीसरान और ज विशिष्ट औद्योगिक और व्यापारिक केन्द्रों में से हैं। जद्दा प्राचीन नगर और प्रमुख बन्दरगाह है। दम्मा जुबैल और यम्बूअ भी यहाँ के प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं। यहाँ से सारे संसार को तेल और दूसरी वस्तुएँ भे जाती हैं।

सऊदी अरब की राजधानी 'रियाज़' है। यह एक आधुनिक नगर है। इसका विकास बड़ी ते से हुआ है। यहाँ शिक्षण-प्रशिक्षण केन्द्र और लघु उद्योगों की अनेक इकाइयाँ स्थापित की गई हैं।

मक्का अरब का प्रमुख नगर है। यहीं प्यारे नबी पैदा हुए थे। इसी नगर में चार हज़ार वर्ष हज़रत इबराहीम (अलैहि.) द्वारा निर्मित मसजिदे-हराम 'काबा' है। यह मुसलमानों का क़िब्ला अर्थात इसी की ओर मुँह करके मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं। हज में इसी काबा का तवाफ़ (परिक्रम करते हैं। धार्मिक और पवित्र नगर होने के कारण यहाँ आबादी में तेज़ी से वृद्धि हुई है। मक्का नगर नव निर्माण करके सुख-सुविधाओं के साधनों से सम्पन्न आधुनिक नगर के रूप में इसे विकसित कि गया है। मदीना दूसरा पवित्र नगर है। यहीं प्यारे नबी (सल्ल.) की क़ब्र है। हर वर्ष लाखों हाजी हज पहले या बाद में प्यारे नबी (सल्ल.) के रौज़े की ज़ियारत करने आते हैं।

सन् 1970 ई. के बाद सऊदी अरब में कृषि का भी बहुत विकास हुआ है। रासायनिक खा उत्तम बीज, सिंचाई और मिट्टी की जाँच के आधुनिक प्रबंध किए गए हैं। सन् 1984 ई. तक देश के उत्पादन में आत्मनिर्भर हो गया। अब वहाँ से गेहूँ, खजूर, दूध, मक्खन, सब्ज़ी, अंडे, मछल आदि का निर्यात किया जाता है।

आधुनिक विकास का काम अमरीकी और यूरोपीय कम्पनियों के द्वारा सम्पन्न हुआ इसलिए विदेशी सभ्यता के कुछ दूषित प्रभाव भी वहाँ पड़े हैं। शासन की चौकसी और धर्मपराय मुस्लिम समाज के प्रयासों से बहुत-सी बुराइयों पर प्रतिबंध है। वहाँ की सरकार शराब, जुआ, लॉ और इसी तरह के दूसरे निषिद्ध कामों का ठेका (लाइसेंस) नहीं देती।

अरब समाज में आज भी अनेक प्रकार की विशेषताएँ पाई जाती हैं। चोरी, धोखा, ग़बन अ

ाम चीज़ों से बचना, सत्य बोलना, पाक-साफ़ रहना, दूसरों की सेवा करना — ये अरबों की क्तिगत तथा जातिगत विशेषताएँ हैं।

सऊदी अरब की पूरी आबादी मुस्लिम है। बाहर से नौकरी के लिए आए कुछ ईसाई, यहूदी, न्दू, सिख और अन्य धर्मों के लोग भी वहाँ रहते हैं। देश का शासन और क़ानून प्रायः इस्लाम धर्म के द्धान्तों पर आधारित है। इस्लाम से पूर्व वहाँ के लोगों में विभिन्न प्रकार के गुण और दुर्गुण पाए जाते । लेकिन इस्लाम ने अरबों के जीवन की काया पलट दी। आज डेढ़ हज़ार साल बाद भी वहाँ के ीवन में इस्लाम की शिक्षाएँ संचरित हैं। अल्लाह ने उस भूमि को अपनी विशेष कृपा और बरकत से ालामाल किया है।

ब्दार्थ और टिप्पणी

द्धारक	=	मुक्तिदाता	प्रतिशोध	=	बदला
ीमित	=	सीमा के अन्दर, थोड़ा	विकास	=	तरक़्क़ी
नस्थापित करना	=	फिर से क़ायम करना	अतिथि	=	मेहमान
ंचरित	=	जारी	उपासना	=	इबादत
ात्मनिर्भर	=	अपने ऊपर निर्भर	गणराज्य	=	जम्हूरियत, लोकतंत्र
ृंखला	=	सिलसिला, कड़ी	जलाशय	=	तालाब
विशिष्ट	=	ख़ास	कीर्तिमान	=	इज़्ज़त, ऊँचा नाम
यापक	=	फैला हुआ, विस्तृत	निर्यात	=	बाहर भेजना
ायद्वीप	=	वह स्थान जो तीन ओर जल और एक ओर स्थल से जुड़ा हो			
र्मपरायण	=	धर्म में विश्वास करने और उसपर चलनेवाले लोग			
कर्क रेखा	=	काल्पनिक रेखा जो भूमध्य रेखा (0° अक्षांश) से उत्तर की ओर $23 1/2^\circ$ अक्षांश पर है।			

अभ्यास

क) उत्तर लिखिए :

1. अरब देश किस जगह अवस्थित है और उसकी चौहद्दी क्या है ?
2. अरब देश में ऊँट का बड़ा महत्त्व है। क्यों ?
3. काबा का क्या महत्त्व है ? उसे किसने बनाया ?

4. अरब में कौन-कौन सी प्राकृतिक सम्पदाएँ हैं ?
5. मरुद्यान किसे कहते हैं ?
6. प्यारे नबी (सल्ल.) से पहले अरब के निवासियों का क्या हाल था ?

(ख) सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाइए :

1. हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) कहाँ पैदा हुए ? (मक्का, मदीना, बग़दाद
2. हज़रत इबराहीम (अलैहि.) कौन थे ? (राजा, पैग़म्बर, व्यापारी
3. इस्लाम धर्म में किसकी इबादत की जाती है ? (पैग़म्बर की, अल्लाह की, ख़लीफ़ा की
4. हज़रत इबराहीम (अलैहि.) का धर्म क्या था? (यहूदियत, ईसाइयत, इस्लाम
5. अन्तिम पैग़म्बर कौन थे ? (हज़रत मूसा, हज़रत ईसा, हज़रत मुहम्मद

(ग) ख़ाली जगहों को कोष्ठक में दिए गए उचित शब्दों से भरिए :

1. हमारे देश के .... में अरब देश है। (दक्षिण, पश्चिम)
2. अरब के लगभग सभी भागों की जलवायु .... है। (शुष्क, आर्द्र)
3. इस्लाम अपने विशिष्ट गुणों और सरलता के कारण आज भी .... रहा है। (स्थिर, फैल)
4. जद्दा प्राचीन नगर और प्रमुख .... है। (बन्दरगाह, इबादतगाह)
5. अरब देश की राजधानी .... है। (मक्का, रियाज़)
6. इस्लाम ने अरबों के जीवन की .... पलट दी। (काया, छाया)

भाषा-बोध

(क) इन शब्दों के पुल्लिंग रूप लिखिए :

माता	=	पिता	रानी	=	---------
बहन	=	---------	अध्यापिका	=	---------
शिष्या	=	---------	नायिका	=	---------
पत्नी	=	---------	कवयित्री	=	---------
लड़की	=	---------	नानी	=	---------

☆☆☆

पाठ – 21

नदियाँ
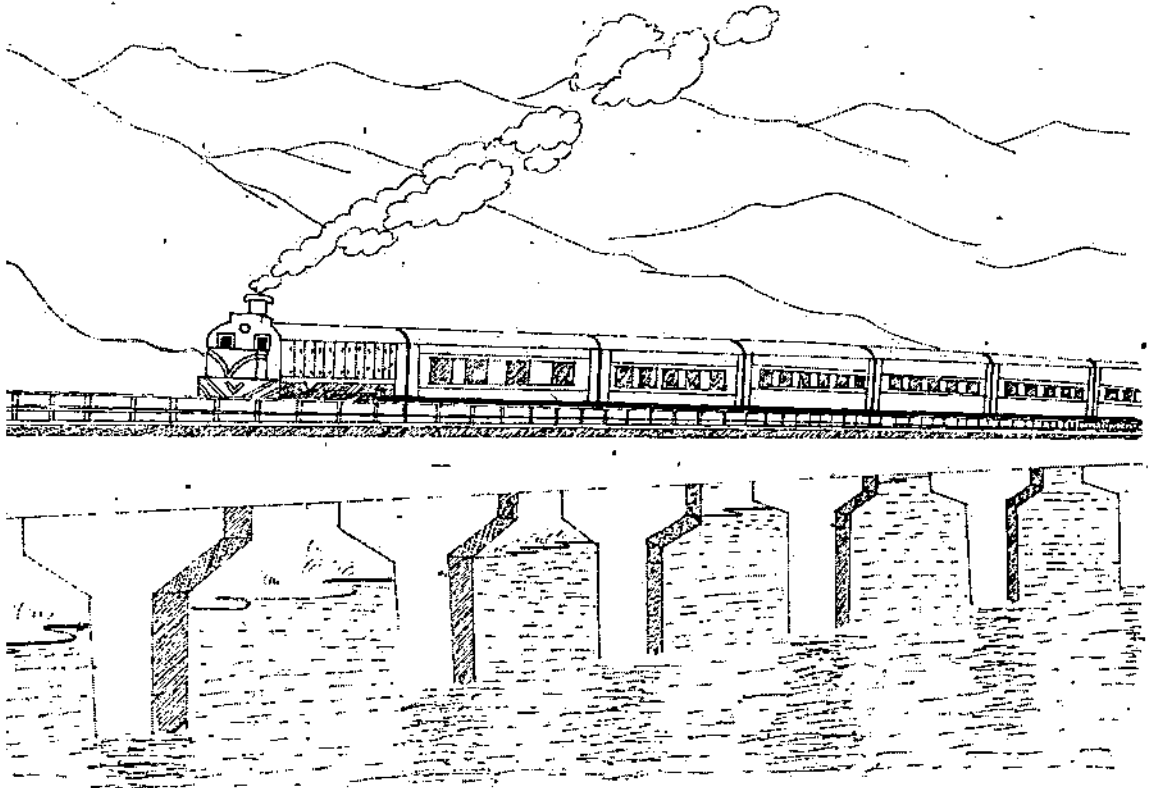
हमीद और मजीद दोनों भाई अपने पिताजी के साथ रेलयात्रा कर रहे थे। रेलगाड़ी सीटी ाजाती, तेज़ भागती जा रही थी। दोनों भाई हिचकोले खाते, हँसते-खेलते जा रहे थे। वे कभी खिड़की h पास जाकर बाहर खड़े बिजली के खम्भों, वृक्षों, मकानों इत्यादि को तेज़ी से पीछे भागते देखते, hभी पिताजी से तरह-तरह के प्रश्न करते। गाड़ी एक बड़े पुल पर से गुज़रने लगी। बच्चे खिड़की से ाहर झाँककर देखने लगे। पुल के नीचे पानी तेज़ी से बह रहा था।

हमीद ने पूछा, "पिताजी! नदियों में इतना ढेर सारा पानी कहाँ से आता है?" मजीद भला कब चुप रहनेवाला था। उसने भी पूछा, "इतना पानी बह जाने के बाद भी नदी का पानी समाप्त क्यों ाहीं होता?" पिताजी ने कहा, "अच्छा, तो ध्यान से सुनो, तुम्हारी समझ में सब कुछ आ जाएगा।"

"फिर तो हमें झटपट सुनाइए ना पिताजी", दोनों भाई उत्सुकता से एक साथ बोले।

पिताजी ने कहा, "तुम लोगों ने पढ़ा ही है कि धरती पर पानी का विशाल भंडार समुद्र है। य भी जानते हो कि पानी तीन अवस्थाओं में पाया जाता है—ठोस, द्रव और वाष्प। जब वह जमकर ठो रूप ले लेता है तो उसे बर्फ़ कहते हैं। जब वह तरल रहता है तो पानी कहलाता है और जब वह बहु गर्म होकर गैस बनकर हवा में मिल जाता है तो वाष्प कहलाता है। वाष्प को भाप भी कहते हैं।"

बच्चों ने सिर हिलाकर 'हाँ' में जवाब दिया। पिताजी अपनी बात आगे बढ़ाते हुए बोले, "ज सूर्य की तेज़ किरणें समुद्र पर पड़ती हैं तो पानी गर्म होकर भाप बन जाता है। यही भाप वायुमंडल जाकर बादल बन जाता है। हवा उन बादलों को उड़ाकर दूर पहाड़ों तक ले जाती है। वायुमंडल व ठण्ड के कारण बादल का कुछ पानी तो वर्षा की बूँदों के रूप में धरती पर आ जाता है। कुछ पहाड़ व चोटियों पर जमकर बर्फ़ बन जाता है। यही बर्फ़ गर्मी से पिघलकर फिर पानी बन जाता है। यह पान झरनों और नदियों के रूप में धरती पर बहने लगता है। अब तुमने समझ लिया होगा कि नदियों में पान वर्षा पड़ने और बर्फ़ पिघलने से आता है।

कुछ छोटी नदियाँ पानी कम होने के कारण गरमी में सूख जाती हैं। बरसात के दिनों में वर्षा वे पानी से फिर बहने लगती हैं। कुछ बड़ी नदियाँ पूरे साल बहती रहती हैं। नदियों में बहनेवाला पान समुद्र में जाकर मिलता है। सूरज की गर्मी के कारण समुद्र का वाष्पीकरण पुनः शुरू हो जाता है वाष्पीकरण की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। भाप पहले की तरह वर्षा और बर्फ़ के रूप में परिवर्ति होकर नदियों में आ जाती है। यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। यही कारण है कि नदियों का पान समाप्त नहीं होता।"

मजीद ने मुस्कुराते हुए कहा, "तो समुद्र का पानी आकाश मार्ग से यात्रा करके आता है औ धरती पर नदियों के द्वारा पैदल चलकर समुद्र तक जाता है।"

"वाह भाई वाह! उसको न तो हवाई जहाज़ की ज़रूरत है, और न ही रेलगाड़ी की", हमीद ने हवा में हाथ हिलाते हुए कहा। उसकी बातें सुनकर सब हँस पड़े।

पिता जी ने कहा, "अल्लाह ने हमारे लाभ के लिए कितनी अच्छी व्यवस्था की है। यह सब हमारे किसी प्रयास के बिना अपने आप होता रहता है। अच्छा, अब यह बताओ कि नदियों से हमें क्या-क्या लाभ होते हैं?"

बच्चों को चुप देखकर पिताजी स्वयं बताने लगे, "नदियों से हमें अनगिनत लाभ मिलते हैं

क जल को पीने, कपड़े धोने, खेतों को सींचने इत्यादि कामों में लाया जाता है। इनसे हमें मछलियाँ मिलती हैं। नदियों में नावों तथा जलपोतों के द्वारा यात्रा भी की जाती है और सामान भी ढोया जाता नदियों पर बाँध बनाकर उनसे नहरें निकाली जाती हैं। फिर उन नहरों से खेतों की सिंचाई होती है। ों के पानी से बिजली भी तैयार की जाती है। नदियों के किनारे बहुत-से कल-कारख़ाने हैं।

नदियाँ अपनी तेज़ धाराओं से पहाड़ों की चट्टानों को काटकर बारीक मिट्टी बनाती हैं। फिर उस ी को मैदानी इलाक़ों में लाकर पाट देती हैं। इससे मैदानी इलाक़ा काफ़ी उपजाऊ हो जाता है।

कितना मेहरबान है हमारा रब! जिसने सूर्य, हवा, पहाड़, ज़मीन इत्यादि को हमारी सेवा में ा रखा है। फिर क्यों न हमारा सिर उसके आगे एहसान से झुक जाए!''

पिताजी की बात समाप्त हुई। इतने में गाड़ी सोनपुर स्टेशन पर आकर रुकी। यहीं पर उन्हें रना था। झटपट सबने अपने सामान गिनकर उतारे और घर की राह ली।

ब्दार्थ और टिप्पणी

विशाल	=	बहुत बड़ा	चोटी	=	पहाड़ का ऊपरी भाग
भण्डार	=	कोष, ख़ज़ाना	व्यवस्था	=	इन्तिज़ाम
परिवर्तित	=	बदला हुआ	दयालु	=	रहम करनेवाला
उत्सुकता	=	जानने की इच्छा	अवस्था	=	हालत
तरल पदार्थ	=	बहनेवाला पदार्थ	प्रयास	=	कोशिश
जलपोत	=	पानी का जहाज़, नाव आदि			

अभ्यास

क) उत्तर लिखिए :

1. पानी कितनी अवस्थाओं में पाया जाता है? उनके नाम लिखिए।
2. नदियों में पानी कहाँ से आता है और कहाँ जाता है ?
3. नदियों से हमें कौन-कौन से लाभ होते हैं ? किन्हीं चार लाभों को लिखिए।
4. नदियों को हमारी सेवा में किसने लगाया ?
5. ईश्वर के प्रति हमारा क्या कर्तव्य है ?

(ख) बताइए किसने कहा :

1. "तो समुद्र का पानी आकाश मार्ग से यात्रा कर के आता है और धरती पर नदियों के द्व पैदल चलकर समुद्र तक जाता है।"
2. "वाह भई वाह ! उसको न तो हवाई जहाज़ की ज़रूरत है और न ही रेलगाड़ी की।"
3. "हमारे प्रयास के बिना यह सब अपने आप होता रहता है।"

(ग) ख़ाली जगहों को कोष्ठक में दिए गए उचित शब्दों से भरिए :

1. पुल के .... पानी तेज़ी से बह रहा था। (ऊपर, नीचे)
2. धरती पर पानी का विशाल भंडार .... है। (समुद्र, नदियाँ)
3. नदियों के किनारे बहुत-से......................... हैं। (पेड़-पौधे, कल-कारख़ाने)
4. नदियाँ बारीक मिट्टी को............... इलाक़ों में लाकर पाट देती हैं। (पहाड़ी, मैदानी

भाषा-बोध

(क) शिक्षक छात्रों को दीर्घ ईकार (ी) वाले शब्दों के बहुवचन रूप बनाने के नियम बताएँ कि शब्द के अंत का 'ई' या उसकी मात्रा (ी) बहुवचन होने पर 'इ' या उस की मात्रा (ि) में बदल जाती है तथा ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में 'याँ' लगाकर ईकारान्त ई (ी) को इ (ि) में बदल दिया जाता है। जैसे— नदी– नदियाँ; गाड़ी–गाड़ियाँ; लड़ाई–लड़ाइयाँ।

निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए :

पहाड़ी	–	-----------	झाड़ी	–	-----------
मछली	–	-----------	शादी	–	-----------
स्त्री	–	-----------	लड़की	–	-----------
दवाई	–	-----------	बकरी	–	-----------

(ख) निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए :

पिता जी ने पूछा, "तुम लोग क्या कर रहे हो ?" हमीद ने कहा, "मैं पढ़ रहा हूँ।"
"अच्छा, तो ध्यान से सुनो।"
"भाप ऊपर जाकर बादल बन जाती है", पिताजी ने कहा।

उपर्युक्त वाक्यों में " " **चिह्न** का प्रयोग किया गया है। इन्हें **दुहरा उद्धरण-चिह्न** nverted Commas) कहते हैं। जहाँ किसी बात और किसी लेखक या पुस्तक के कथन को थों-का-त्यों उद्धृत करना हो, वहाँ दुहरे उद्धरण-चिह्न (" ") का प्रयोग किया जाता है।

निम्नलिखित वाक्यों में दुहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग कीजिए :

ऐ अल्लाह! हमें सीधे मार्ग पर चला। (पवित्र क़ुरआन, 1:5)
वह बोला, मैं कल घर जाऊँगा।
इन्साफ़ के साथ पूरा-पूरा नापो और तौलो। (पवित्र क़ुरआन, 6:152)
और कहो, ऐ रब! मुझे और अधिक ज्ञान प्रदान कर! (पवित्र क़ुरआन, 20:114)
जो व्यक्ति ज्ञान का मार्ग अपनाएगा, अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत का मार्ग सुगम कर देगा। (हज़रत मुहम्मद सल्ल.)

☆☆☆

पाठ – 22

नटखट हाथी

हाथी स्वभावत: शांत प्रवृत्ति का पशु है। जंगलों में झुण्ड बनाकर रहना उसे पसन्द है। उस सहयोग की भावना बहुत होती है। वह झुण्ड में ही चलकर अपने चारे की खोज करता है। कभी-कभ तितर-बितर होकर भी चलता है। वह शाकाहारी होता है। पेड़ों के पत्ते, गन्ने और खेतों में उगी हु फ़सलें बड़े चाव से खाता है। वह बहुत भारी-भरकम और शक्तिशाली जानवर होता है। कभी-कभ वह शरारत भी करता है।

कल्लू चाचा अपने खेत की रखवाली करते थे। खेतों के निकट एक जंगल था। जंगल मे बहुत-से हिंसक पशु रहते थे। वे रात में चरने के लिए खेतों की ओर निकल आते थे। कल्लू चाचा खेत में बने एक टाँड के ऊपर रात में सोते थे, ताकि जंगली पशुओं से अपनी रक्षा तथा खेत की रखवाली कर सकें।

रात बड़ी सुहानी थी। पूर्णिमा का चाँद अपने पूर्ण प्रकाश के साथ चमक रहा था। चारों ओर ीतल चाँदनी की धवल किरणें लहरा रही थीं। आधी रात होते ही कल्लू चाचा की आँखें लग गईं। ीतल चाँदनी ने थपकंकर उन्हें गहरी नींद सुला दिया।

दुर्भाग्य से खेत की ओर एक जंगली हाथी निकल आया। हाथी बड़ा मदमत्त और नटखट था। सने फ़सलें चरकर पहले अपनी भूख मिटाई। फिर टाँड को देखकर उसे एक शरारत सूझी। वह टाँड के ड़े-बड़े खूँटों के बीच घुस गया। अँगड़ाई लेते हुए ज़ोर से धक्का मारा। टाँड के खूँटे उखड़ गए। खूँटे ास-पास थे और काफ़ी मज़बूती से बँधे हुए थे, इसलिए वे हाथी के भारी भरकम शरीर में दोनों ओर अटक गए। वह टाँड को पीठ पर लिए तेज़ी से भागा।

कल्लू चाचा के तो जैसे प्राण ही सूख गए। अब वे कर ही क्या सकते थे। हाथी व्याकुल हो ठा। वह दोनों ओर से मानो शिकंजे में कसा हुआ था। वह तेज़ी से भाग रहा था और कल्लू चाचा को ोई उपाय नहीं सूझ रहा था। वे अल्लाह से अपने प्राण की भीख माँगने लगे। अल्लाह ने उनकी ेनती सुन ली। सौभाग्य से हाथी एक पेड़ के नीचे से गुज़रा। कल्लू चाचा ने टाँड से ऊपर उछलकर ड़ की एक मोटी डाल पकड़ ली और पेड़ पर चढ़ गए। हाथी चिंघाड़ता हुआ सरपट दौड़ा जा रहा था। ाँड के ऊपर कल्लू चाचा की खाट थी। खाट पर बिस्तर लगा था। खाट के पास ही एक अंगीठी बँधी ी। अंगीठी में आग की चिंगारी दबी थी। हाथी के दौड़ने से अंगीठी हिली और उलट गई। अंगीठी की चेंगारी खाट पर गिरी। जल्द ही खाट, बिस्तर और टाँड के छप्पर में आग लग गई।

हाथी बहुत घबराया। वह और तेज़ी से भागने लगा। वह जितना तेज़ भागता, आग उतनी ही अधिक भड़कती। हाथी और अधिक ज़ोरों से चिंघाड़ता, किन्तु छुटकारे का कोई उपाय न था। उसकी चेंघाड़ सुनकर जंगल के बहुत-से हाथी उसकी सहायता के लिए लपके। लेकिन धधकती ज्वाला से डरकर वे दूर ही रहे। धीरे-धीरे हाथी की पीठ झुलसने लगी। हाथी पूर्णतः विवश था। वह अपनी ही शरारत के जाल में बुरी तरह फँस चुका था। अब अपने कर्मों का फल उसे भोगना ही था।

सहसा टाँड के खूँटों के बंधन जल गए। जलता हुआ टाँड हाथी की पीठ से नीचे गिर गया। वह बुरी तरह झुलस चुका था। जंगल में पहुँचकर पीड़ा से कराहता रहा और बहुत दिनों तक अपनी करनी का फल भुगतता रहा।

शब्दार्थ और टिप्पणी

प्रवृत्ति	= स्वभाव	झुण्ड	= समूह, गरोह
तितर-बितर होना	= इधर-उधर हो जाना, बिखर जाना	शाकाहारी	= सब्ज़ी खानेवाला
		निकट	= नज़दीक
हिंसक	= हिंसा करनेवाला, तकलीफ़ पहुंचानेवाला	टाँड	= मचान
		धवल	= उजला
मदमत्त	= मतवाला, मस्ती में चूर	व्याकुल	= बेचैन
चिंघाड़	= हाथी के चिल्लाने की आवाज़	अंगीठी	= आग रखने का बर्तन, बोरसी
		करनी	= करतूत
पूर्णिमा	= चाँद का पूरा गोल होना	शीतल	= ठण्डा
दुर्भाग्य	= बदक़िस्मती	पूर्णत:	= पूरी तरह
सहसा	= अचानक	ज्वाला	= आग की लपट
विवश	= मजबूर		

अभ्यास

(क) उत्तर लिखिए :

1. हाथी का मुख्य चारा क्या है ?
2. कल्लू चाचा रात में कहाँ सोते थे और क्यों ?
3. टाँड किस तरह हाथी की पीठ पर अटक गया ?
4. कल्लू चाचा ने अपनी जान कैसे बचाई ?
5. हाथी की पीठ पर अटके टाँड में आग कैसे लगी ?
6. हाथी को अपनी शरारत का क्या फल मिला ?

(ख) उचित शब्दों का चयन करके वाक्य पूरे कीजिए :

(हिंसक, शान्त, टाँड, करनी, विनती)

1. हाथी स्वभावत: .... प्रवृत्ति का पशु है।
2. जंगल में बहुत-से .... पशु रहते थे।

3. अब .... को पीठ पर लिए तेज़ी से भागा।
4. अल्लाह ने कल्लू चाचा की .... सुन ली।
5. नटखट हाथी बहुत दिनों तक अपनी .... का फल भुगतता रहा।

ाषा-बोध

क) निम्नलिखित मुहावरों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

तितर-बितर होना, प्राण की भीख माँगना, जाल में फँस जाना,
चाव से खाना, करनी का फल भुगतना

ख) निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए :

रात बड़ी सुहानी थी।
यह मेरी किताब है।
खाट पर बिस्तर लगा था।
अज़ान हो रही है।

इस प्रकार के वाक्यों को **साधारण वाक्य** कहते हैं। यह वाक्य **प्रधान वाक्य** होता है। इसमें ोई आश्रित वाक्य नहीं होता। साधारण वाक्य को **सरल वाक्य** भी कहते हैं।

पाँच सरल वाक्य अपनी कॉपी में लिखिए और अपने शिक्षक को दिखाइए।

☆☆☆

पाठ – 23
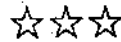
सब हैं एक समान

इस धरती पर बसनेवाले, हैं जितने इनसान
रक्त सभी का एक रंग है, सब रखते हैं जान
जिसने सबको जन्म दिया है, बड़ी उसी की शान

दूजा नहीं महान रे मूरख! दूजा नहीं महान!

हरिजन, पण्डित, शूद्र, ब्राह्मण, सैयद, शैख़, पठान
सब हैं एक ईश के बन्दे, आदम की सन्तान
रंग, नस्ल, कुल, जाति, वंश तो हैं केवल पहचान

सब हैं एक समान रे मूरख! सब हैं एक समान।

एक दिन आख़िर साँसों की, यह डोर जाएगी टूट
धन-दौलत और महल-दुमहले, यहीं जाएँगे छूट
तेरा सब कुछ, तेरे ही घरवाले लेंगे लूट

काहे पर अभिमान रे मूरख! काहे पर अभिमान।

नफ़रत की दीवार गिरा दें, मिलकर गाएँ गीत
आपस के मतभेद मिटाकर, बन जाएँ सब मीत
मानव बनकर करें 'मुजाहिद', मानवता से प्रीत

सब जन हैं इनसान रे मूरख! सब जन हैं इनसान।
सब हैं एक समान॥

— मुजाहिद लखीमपुरी

ाब्दार्थ और टिप्पणी

दूजा	=	दूसरा	रक्त	=	ख़ून, लहू
ईश	=	ईश्वर	कुल	=	वंश
मतभेद	=	विचारों में अंतर	प्रीत	=	प्यार
अभिमान	=	गर्व, घमंड	मीत	=	मित्र
मूरख	=	मूर्ख, बेवक़ूफ़	जन	=	व्यक्ति

अभ्यास

(क) केवल एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. कौन महान है ?
2. रंग, नस्ल, जाति, कुल अल्लाह ने क्यों बनाए ?
3. सब मित्र कैसे बन सकते हैं ?

(ख) संक्षेप में उत्तर लिखिए :

1. सब इनसान एक समान किस प्रकार हैं ?
2. आदम की सन्तान और ईश के बंदे कौन हैं ?
3. साँसों की डोर टूटने पर क्या होगा ?
4. इस कविता में कवि ने क्या संदेश दिया है ?

(ग) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. जिसने सबको .... दिया है, बड़ी उसी की शान।
2. सब हैं एक ...., आदम की सन्तान।
3. ...., तेरे ही घरवाले लेंगे लूट।
4. आपस के मतभेद मिटाकर, बन जाएँ सब ....।

भाषा-बोध

(क) इन वाक्यों को ध्यान से पढ़िए :

सलमा **रोटी** खाती है।

नदीम **किताब** पढ़ता है।

इन दोनों वाक्यों में 'खाती है' और 'पढ़ता है' **सकर्मक क्रियाएँ** हैं। जिस क्रिया का फल क
पर पड़े उसे 'सकर्मक क्रिया' कहते हैं। ऊपर के वाक्यों में 'रोटी' और 'किताब' शब्द कर्म हैं और जि
वाक्य में कर्म हो उस वाक्य की क्रिया सकर्मक क्रिया कहलाती है।। उसमें 'क्या', 'किसे' या 'कितने
लगाकर प्रश्न पूछने पर अगर कुछ उत्तर मिले तो समझना चाहिए कि क्रिया सकर्मक है। जैसे :

सलमा क्या खाती है ? रोटी।

नदीम क्या पढ़ता है ? किताब।

यहाँ सलमा के खाने का फल 'रोटी' और नदीम के पढ़ने का फल 'किताब' अर्थात कर्म प
पड़ रहा है। अत: 'खाना' और 'पढ़ना' क्रियाएँ सकर्मक हैं।

सकर्मक क्रियावाले पाँच वाक्य लिखकर अपने शिक्षक को दिखाइए।

(ख) इन वाक्यों को ध्यान से पढ़िए :

मोहन सोता है।

राजा हँस्ता है।

इन दोनों वाक्यों में क्रमश: 'सोना', 'हँसना' अक्रमक क्रियाएँ हैं। पहले वाक्य में मोहन कर्त्त
है, सोने की क्रिया उसी के द्वारा पूरी होती है। अत: क्रिया का फल उसी पर पड़ता है। इसलिए सोन
क्रिया अकर्मक है।

निष्कर्ष यह कि जिन क्रियाओं के व्यापार का फल कर्त्ता पर पड़े वे अकर्मक क्रियाएँ कहलात
हैं। अकर्मक क्रियाओं में 'कर्म' नहीं होता, क्रिया का व्यापार और फल दूसरे पर न पड़कर कर्त्ता प
पड़ता है।

☆☆☆

पाठ – 24

अन्धी भिखारिन

ग्रीष्म ऋतु की दोपहर थी। भीषण गरमी पड़ रही थी। सभी प्राणी व्याकुल थे। सड़क के किनारे विशाल वृक्ष था। बहुत-से लोग गरमी और धूप से बचने के लिए उसकी छाया में बैठे हुए थे। वहाँ ख़ोनचेवाला भी था। लोग उससे खाने की चीज़ें ख़रीद-ख़रीदकर खा रहे थे। एक पुलिसवाला भी ाँ मौजूद था।

चिलचिलाती धूप, तपती रेत तथा गरम हवा में एक अंधी बुढ़िया लाठी के सहारे हाँफ़ती, ख़ड़ाती हुई पेड़ की ओर लपकी चली आ रही थी। उसके शरीर पर फटे-पुराने कपड़ों की धज्जियाँ क रही थीं। बाल-बिखरे हुए थे। कानों में नीम के डण्ठल पड़े हुए थे। वह गरमी और धूप की ाह किए बिना पेट की आग बुझाने के लिए इधर-उधर मारी-मारी फिरती थी।
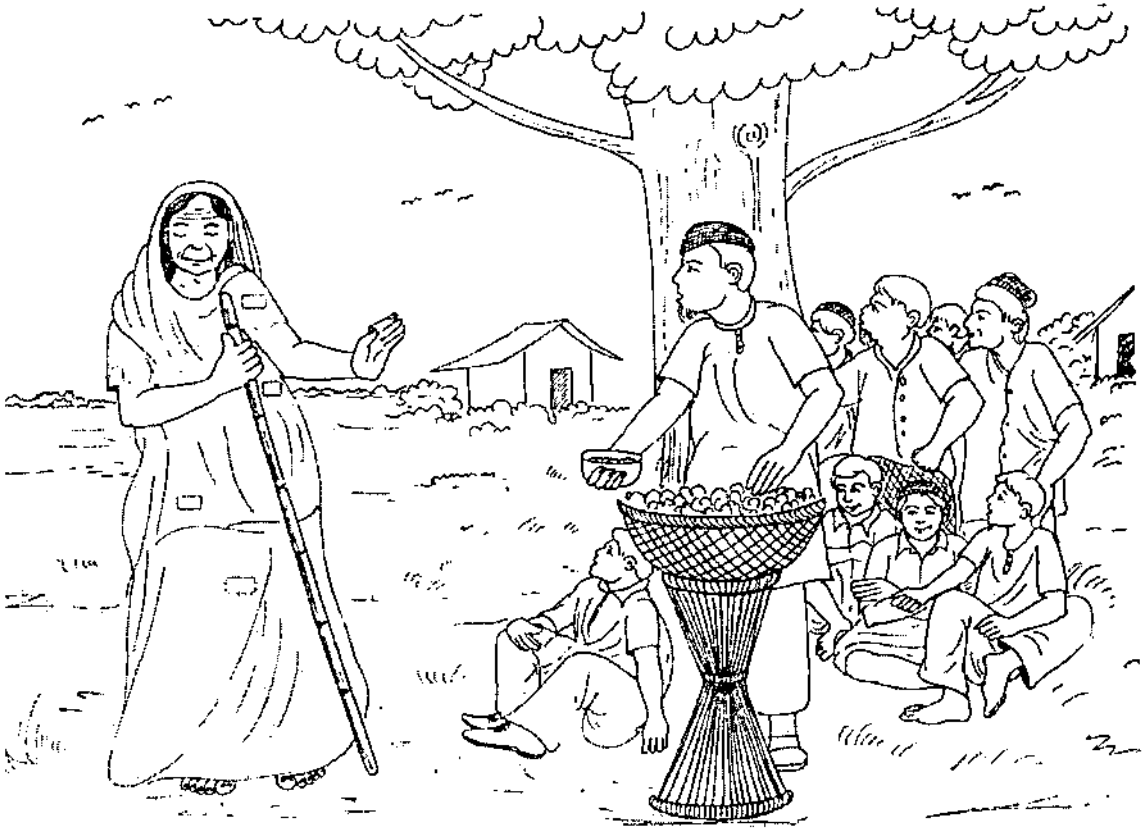
वह वृक्ष के नीचे बचती-बचाती, टटोल-टटोलकर अपना मार्ग खोजती धीरे-धीरे आगे ब
उसे डर था कि किसी से टकरा न जाए। अत: वह लाठी को इधर-उधर टेकती, आगे बढ़ती, रु
तथा एक ही रट लगाए जाती, "दे ख़ुदा के नाम पर, दिलवा ख़ुदा के नाम पर!"

अब वह थक चुकी थी। अत: सड़क के किनारे उसी वृक्ष के नीचे एक ख़ाली स्थान टटोल
बैठ गई।

अभी वह सुस्ता भी न पाई थी कि एक सिपाही ने चिल्लाते हुए कहा, "ऐ बुढ़िया! यह स
-है, तेरा घर नहीं है जो तू यहाँ जमकर बैठ गई।"

यह आवाज़ सुनकर बुढ़िया विचलित हो गई और मन-ही-मन सोचने लगी, "आह,
कितनी अभागिन हूँ! मेरा सड़क के किनारे बैठना भी लोगों को सहन नहीं। काश, मेरा भी व
सहायक होता जो मेरी सहायता करता!"

वहीं उसके निकट ही खड़ा एक युवक दुकानदार से कह रहा था, "देखो! ये पुलिसवाले
दीन-दुखियों को किस प्रकार अपमानित करते हैं। यहाँ सभी बैठे हैं तो कोई बात नहीं, बुढ़िया बैठ
तो आफ़त टूट पड़ी। बुढ़िया की विवशता का भी इन्हें ख़्याल नहीं। कैसा ज़माना है।"

बुढ़िया ने युवक की बातें सुनकर अनुमान लगा लिया कि उसे डाँटनेवाला एक सिपाही
अत: वह अपनी लाठी टेककर कराहते हुए उठ खड़ी हुई और बोली, "सिपाही जी! क्षमा कीजिए
अभी जाती हूँ। अब आपके रास्ते पर नहीं बैठूँगी। अपना ग़ुस्सा थूक दीजिए। मैं तो एक अभा
भिखारिन हूँ!"

भिखारिन अपनी लाठी से टटोलते हुए आगे बढ़ी। बच-बचाकर चलने का प्रयास करने
बावजूद उसका पैर फिसल गया। वह लड़खड़ाई और ख़ोनचे से टकराकर गिर गई।

झनझनाहट की आवाज़ के साथ ख़ोनचा नीचे गिरा। साथ ही दही-बड़े, आलू, सोंठ का पा
नमक, मिर्च इत्यादि सारी चीज़ें धरती पर बिखर गईं। ख़ोनचेवाला हक्का-बक्का रह गया और
ज़ोर से चिल्लाया, "हाय, मेरा ख़ोनचा! मेरी सारी पूँजी धूल में मिल गई। ओ अंधी! तूने यह व
किया?" (हाथ मलते हुए) "अब मैं क्या करूँ?"

ख़ोनचेवाले की गुहार सुनकर लोग उसकी ओर दौड़ पड़े और क्षणभर में भीड़ लग गई। म
कोई खेल-तमाशा हो रहा हो। लोग तरह-तरह की बातें कर रहे थे। कोई अंधी भिखारिन के प्र

ानुभूति प्रकट कर रहा था तो कोई ख़ोनचेवाले के प्रति। कोई कह रहा था कि इस ख़ोनचेवाले का
ृत नुक़सान हो गया, तो कोई कह रहा था कि इस अंधी का क्या दोष है।

भिखारिन की दशा बड़ी दयनीय थी। वह भय से थर-थर काँप रही थी। कुछ कहते न बन रहा
।

इतने में पुलिसवाला निकट आया।

ख़ोनचेवाले ने सारी बात कह सुनाई। घबराहट के कारण वह अटक-अटककर बोल रहा था।
ाकी सारी चीज़ें यथावत बिखरी पड़ी थीं। उसका नुक़सान सबके सामने था।

ख़ोनचेवाले की दशा देखकर सिपाही आपे से बाहर हो गया और अपनी विशेष भाषा में
लियाँ देने लगा।

युवक विनम्रतापूर्वक बोला, "सिपाही जी ! इस बूढ़ी का क्या दोष है ? यह तो अंधी है।"

सिपाही (बड़े घमण्ड के साथ) बोला , "हम पुलिसवाले हैं। हमें सब मालूम है । यह भिखारिन
हे को है, यह तो पक्की कुलटा है। दिन भर भीख माँगती है, रात को नशा करती है।"

यह कहते हुए पुलिसवाले ने डंडा सँभाला और अंधी भिखारिन पर बरसाना शुरू कर दिया।
ारी बुढ़िया धरती पर मछली के समान तड़पने लगी। बिलखते हुए गुहार कर रही थी, "मैं अंधी हूँ,
। ख़ुद से नहीं गिराया। हाय ! मुझपर दया करो।"

युवक से न रहा गया। उसने आगे बढ़कर पुलिसवाले से बड़े दु:खी स्वर में कहा, "सिपाही
! यह अंधी निर्दोष है। इसे छोड़ दीजिए। क्या आपके हृदय में दया नहीं है ?"

यह कहकर युवक बुढ़िया और सिपाही के बीच में आ गया। सिपाही जी ने हाथ रोक लिया।

इसके बाद युवक बोला, "भाइयो, मैं आप लोगों से कुछ बातें कहना चाहता हूँ।"

"कहिए, कहिए ! ज़रूर कहिए।" एक साथ अनेक लोगों की आवाज़ें आईं।

युवक बोलने लगा, "आज डंडे और डॉलर का ज़माना है। लोग डंडे से डरते और डॉलर पर
ते हैं। संसार की सत्ता इन्हीं दो ध्रुवों के बीच चक्कर काट रही है और निरीह जनता इन्हीं दो पाटों के
च पिस रही है , कराह रही है। अन्याय, अत्याचार और असमानता के चक्र में फँसी जनता त्राहिमाम

त्राहिमाम कर रही है। कोई उसका करुण-चीत्कार सुननेवाला नहीं।"

युवक फिर बोला, "शासक और शासित, राजा और प्रजा तथा धनी और निर्धन के बीच र बढ़ती जा रही है, सम्पन्नता की कोख से विपन्नता जन्म ले रही है, चिराग़ तले अंधेरा फैल रहा क्या आपने इस पर कभी विचार किया है कि ऐसा क्यों हो रहा है?"

युवक ने स्वयं उत्तर देते हुए कहा, "यह ईश्वरविहीन सत्ता की देन है। इस व्यवस्था में मजब कमज़ोरों, दीन-दुखियों की यही दुर्दशा होती है।"

युवक अंधी भिखारिन के पास गया जो दर्द से कराह रही थी। फिर लोगों का ध्यान अपनी ः आकृष्ट करते हुए बोला, "हमें शोभा नहीं देता कि इन जैसों का अपमान करें। बल्कि हमारा फ़र्ज़ ब है कि ग़रीबों, लाचारों, बेसहारा लोगों और अनाथों की सहायता करें।

एक दिन हम सबको ईश्वर के पास जाना और हर एक को अपने कर्मों का हिसाब देना हो अतः हमें किसी पर अन्याय नहीं करना चाहिए और हर समय ईश्वर से डरते रहना चाहिए।"

युवक की बात सुनकर सभी ने अत्याचार से लड़ने और जनकल्याण के कामों में सहायता व और योगदान देने का संकल्प लिया।

शब्दार्थ और टिप्पणी

अपमानित	=	बेइज़्ज़त	अनुमान	=	अंदाज़ा
प्रयास	=	कोशिश	सहानुभूति	=	हमदर्दी
निर्दोष	=	बेक़सूर	निर्दयता	=	बेरहमी
दुर्गति	=	बुरा हाल	निस्सहाय	=	बेसहारा
व्याकुल	=	बेचैन	ख़ोनचा	=	फेरी लगाने का पात्र
निरन्तर	=	लगातार	विचलित	=	भटक जाना
अभागिन	=	बुरे भाग्यवाली, बदक़िस्मत	क्षण भर में	=	पल भर में, जल्द ही
दयनीय	=	दया के योग्य	यथावत्	=	पहले जैसा
नम्रतापूर्वक	=	नरमी से			

अभ्यास

़) उत्तर लिखिए :

1. लोग कहाँ और क्यों बैठे थे ?
2. बुढ़िया ने वृक्ष के नीचे पहुँचते ही क्या आवाज़ लगाई ?
3. भिखारिन कैसे गिरी ?
4. भिखारिन मछली के समान क्यों तड़पने लगी ?
5. अन्याय और असमानता किसकी देन है ?
6. इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है?

ा) उचित शब्दों का चयन करके रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(सहायक, अन्याय, दशा, दया, अपमानित, भिखारिन)

1. काश, मेरा भी कोई .... होता !
2. ये पुलिसवाले दीन-दुखियों को किस प्रकार .... करते हैं।
3. यह तो बड़ा .... है।
4. मैं तो एक अभागिन .... हूँ।
5. भिखारिन की .... बड़ी दयनीय थी।
6. क्या आपके हृदय में .... नहीं है ?

षा-बोध

') प्रस्तुत पाठ में अन्याय, असमानता आदि शब्द आए हैं। इन शब्दों में 'अ' उपसर्ग जुड़ा हुआ है। **उपसर्ग** उस शब्दांश को कहते हैं, जो मूल (रूढ़) शब्दों (संज्ञा, विशेषण आदि) के पहले जुड़कर शब्दों के अर्थ में विशेषता या परिवर्तन उत्पन्न कर देता है।

'अ' उपसर्ग से बने कुछ और शब्द देखिए :

		उपसर्ग शब्द	उपसर्गयुक्त शब्द
अ	अभाव तथा	अ + ज्ञान	= अज्ञान
	नकारात्मक भाव	अ + थाह	= अथाह
	का द्योतक	अ + न्याय	= अन्याय
		अ + समानता	= असमानता

'अ' उपसर्गवाले पाँच शब्द लिखिए और अपने शिक्षक को दिखाइए।

कुछ और काम

अपने शिक्षक के मार्गदर्शन में एक बाल-समिति का गठन कीजिए और स्कूल की सफ़ खेल-कूद आदि के बारे में चर्चा कीजिए।

☆☆☆

पाठ – 25

जीवन के अंधियारे पथ में

सत्य धर्म अपनाओ बन्धु, सत्य धर्म अपनाओ।
मानवता के प्रेमी बनकर, मानव तुम कहलाओ॥

भूले-भटके इनसानों को, सत्य मार्ग दिखलाओ।
जीवन के अंधियारे पथ में, मार्गदीप बन जाओ॥

एक ईश्वर की करो वन्दना, उसके ही गुण गाओ।
उसके ही मार्ग पर चलकर, जीवन सफल बनाओ॥

जन-जन की सेवा करके, अपना जीवन सफल बनाओ।
जीवन के अंधियारे पथ में, मार्गदीप बन जाओ॥

चहुँदिश हाहाकार मचा है, पीड़ित है जनता सारी।
सबको है मतलब से यारी, क्या नौकर क्या व्यापारी॥

अत्याचार मिटाओ जग से, एक सभी हो जाओ।
जीवन के अंधियारे पथ में, मार्गदीप बन जाओ॥

उठो 'मुजाहिद', मिल-जुलकर, अब ऐसा चक्र चलाओ।
नव निर्माण करो, पृथ्वी को स्वर्ग बनाओ॥

ईश्वर का सन्देश, जगत् के घर-घर में पहुँचाओ।
जीवन के अंधियारे पथ में, मार्गदीप बन जाओ।

– संकलित

शब्दार्थ और टिप्पणी

बन्धु	=	भाई, दोस्त	मानवता	=	इनसानियत
सत्य मार्ग	=	सच्चा रास्ता	मार्गदीप	=	रास्ते का चिराग़
वन्दना	=	इबादत	पथ	=	रास्ता
जग	=	दुनिया	चहुँदिश	=	चारों ओर
चक्र	=	चक्का, गोल पहिया	नव निर्माण	=	नई तामीर, नई रचना

अभ्यास

(क) उत्तर लिखिए :

1. हम जीवन की अँधेरी राह में रौशनी का चिराग़ कैसे बन सकते हैं ?
2. हमें किसकी वन्दना करनी चाहिए ?
3. इस कविता में पृथ्वी को क्या बनाने के लिए कहा गया है ?
4. हमें ईश्वर का सन्देश कहाँ पहुँचाना है ?
5. कवि ने कौन-सा धर्म अपनाने के लिए कहा है ?
6. मानव को किसका प्रेमी बनना चाहिए ?
7. कवि ने किसकी सेवा करने के लिए कहा है ?

(ख) खाली जगहों को भरिए :

(i) ...., उसके ही गुण गाओ।
उसके ही मार्ग पर चलकर, जीवन सफल बनाओ॥

(ii) ...., एक सभी हो जाओ।
जीवन के अँधियारे पथ में, मार्गदीप बन जाओ॥

(iii) ईश्वर का सन्देश जगत् के ....में पहुँचाओ।
जीवन के अंधियारे पथ में, मार्गदीप बन जाओ॥

☆☆☆

पाठ – 26

हिमालय से परे

हमारे देश के उत्तर में हिमालय पर्वत है। हिमालय का अर्थ है—बर्फ़ का घर। इस पर्वत की गगनचुम्बी चोटियाँ सदैव बर्फ़ से ढकी रहती हैं, इसी लिए इसका नाम हिमालय पड़ा। इसकी अनेक ऊँची-ऊँची चोटियाँ हैं। 'माउंट एवरेस्ट' संसार की सबसे ऊँची चोटी है। हिमालय हमारे देश की उत्तरी सीमा पर दूर-दूर तक फैला हुआ है। हिमालय के उस पार चीन है। चीन बहुत विशाल देश है। यहाँ संसार की सर्वाधिक जनसंख्या रहती है। हिमालय के उत्तरी ढलान पर चीन का एक प्रांत है, तिब्बत। तिब्बत पहले एक स्वतंत्र देश था। बाद में उसे चीन में सम्मिलित कर दिया गया। तिब्बत के निवासी अपने देश को 'बोदयुल' कहते हैं।

तिब्बत संसार का सबसे ऊँचा प्रदेश है। वहाँ तक पहुँचना बच्चों का खेल नहीं; लोहे के चने चबाने पड़ते हैं। बड़ी कठिन चढ़ाई है। पहाड़ों पर चढ़ने के मार्ग अत्यन्त दुर्गम हैं। कहीं ऊँचाई, तो कहीं गहरी खाई। टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडियों से उन्हें पार करना होता है। वहाँ की सड़कें चौड़ी-चौड़ी नहीं हैं। रेल, मोटर, ताँगा इत्यादि सवारियों का वहाँ गुज़र नहीं। अत: तिब्बती लोग सारे संसार से प्रायः अलग-थलग रहते हैं। पर्वत पर बसे इस प्रदेश तक पहुँचने का मार्ग कठिन ही नहीं, भयावह भी है। यात्री यदि तनिक भी असावधान हो जाए तो फिसलकर गहरे गड्ढे में जा गिरे। ये गड्ढे इतने गहरे हैं कि गिरनेवालों की हड्डी-पसली का भी पता नहीं चलता। कठिन चढ़ाई में यात्रियों की साँसें फूलने लगती हैं। कान बजने का रोग हो जाता है। अत: यहाँ के निवासी प्राय: कहीं बाहर नहीं जाते और न ही दूसरे लोग उनके पास जाने का साहस करते हैं।
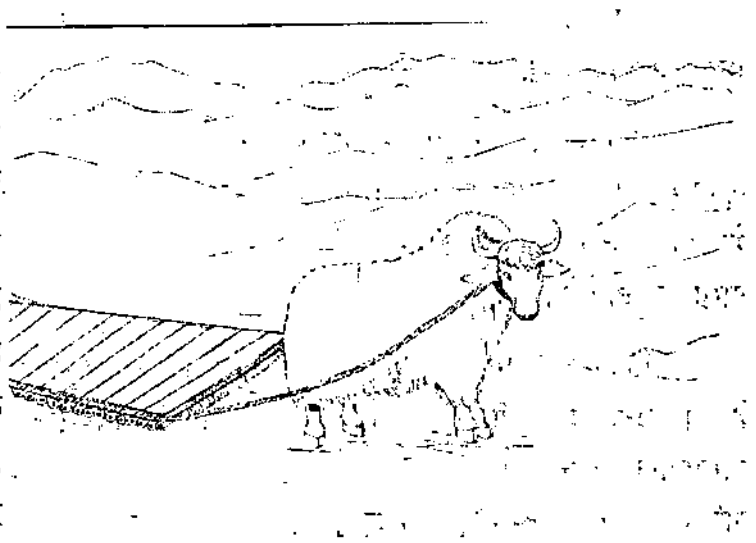
तिब्बत की भूमि बंजर और पथरीली है। वर्षा भी नाम-मात्र को होती है। उपयुक्त मिट्टी और

वर्षा के अभाव तथा अनुकूल मौसम न होने के कारण यहाँ अन्न की उपज बहुत कम होती है। कु पौधे उगते भी हैं तो बर्फ़ीली हवा के कारण मुरझा जाते हैं। कहीं-कहीं थोड़ा जौ, ज्वार, बाजरा इत्यादि उगाए जाते हैं। लोगों को पर्याप्त अन्न नहीं मिलता। पेट पालने के लिए बड़ा कष्ट उठाना पड़ता है अधिकतर लोग पशु पालते हैं। पानी, चारे की खोज में इधर-उधर घूमते रहते हैं। याक, भेड़, बकरी ख़च्चर इत्यादि यहाँ के प्रमुख पशु हैं। तिब्बती लोग प्रायः ख़ेमों में रहते हैं। दूध, दही, मक्खन, पनी तथा पशुओं का मांस उनका मुख्य भोजन है। भूख से पीड़ित लोग कई-कई दिन का बासी मांस कच्चा खा जाते हैं।.

याक यहाँ का सबसे महत्त्वपूर्ण पशु है। यह बैल के सदृश होता है। इसके शरीर पर बड़े-बड़े बाल होते हैं। तिब्बत के निवासियों के लिए याक बहुत उपयोगी है। वे इसका दूध पीते, मांस खाते खाल से ख़ेमे और ऊन से वस्त्र बनाते हैं। सामान ढोने और पहाड़ी मार्ग पर यातायात का साधन भी यही है। इसके बड़े-बड़े घने बाल इसे पहाड़ी सर्दी से सुरक्षित रखते हैं।

यहाँ के निवासी चाय बहुत अधिक पीते हैं। वे चाय में दूध, मक्खन तथा जौ का आटा मिलाकर बहुत गाढ़ी कर लेते हैं।

यहाँ शिशिर ऋतु अत्यन्त भीषण होती है। बर्फ़ीली हवाओं के झोंके चलते हैं। यहाँ के निवासी ख़ेमों में आग जलाकर रहते हैं और ऊनी वस्त्र पहनकर सर्दियों से बचते हैं। ख़ेमों से बाहर याक और भेड़ें प्रायः ठंडक से ठिठुरकर मर जाती हैं। ये चरवाहे जिनकी सारी संपत्ति ये पशु ही होते हैं, क्षण भर में दरिद्र बन जाते हैं।

तिब्बत में योगी तथा संन्यासी बहुत अधिक हैं। ये लोग 'लामा' कहलाते हैं और मठों में रहते हैं। पूरे प्रदेश में इन्हीं का राज्य है। ग्रामीण लोग प्रायः इन्हीं के कहने पर चलते तथा इन्हीं का आज्ञापालन करते हैं। प्रत्येक क्षेत्र में इनके मठ होते हैं। ये आम तौर पर बौद्ध धर्मावलम्बी होते हैं। लेकिन इनका धर्म दूसरे देशों के बौद्धों से भिन्न और निराला है। अधिकांश लोग अनपढ़ होते हैं। अतः लामा जिस मार्ग पर चाहते हैं, उन्हें ले जाते हैं। अज्ञानता के कारण वे अंधविश्वास में जकड़े हुए हैं। ये लामाओं के जंत्र-मंत्र और टोने-टोटके से बहुत डरते हैं। इनकी भाषा 'भोट' कहलाती है। इस भाषा में बौद्ध धर्म के ग्रंथ सुरक्षित हैं। प्राचीन काल में भारत में बौद्धों की बड़ी संख्या थी। भारत से ही भोट भाषा में अनूदित बौद्ध धर्मग्रंथ तिब्बत पहुँचे। कुछ वर्षों पहले बौद्ध धर्म के ग्रंथों को तिब्बत से ख़च्चरों पर लादकर भारत लाया गया। महापंडित राहुल सांकृत्यायन का इसमें बड़ा योगदान रहा। उन्होंने अथक परिश्रम से उन पहाड़ी दुर्गम मार्गों को पार किया। उन्होंने उन ग्रंथों का पालि और अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया।

तिब्बत की राजधानी ल्हासा नगर है। यहाँ का शासक 'दलाई लामा' कहलाता था। उसके हने के लिए ल्हासा नगर में पहाड़ी पर सुन्दर भवन होते थे। वहाँ के निवासी दलाई लामा को ईश्वर का अवतार और उसी को शासन का अधिकारी मानते थे। जब एक दलाई लामा की मृत्यु हो जाती है तो उसके स्थान पर दूसरे का चुनाव बड़े रोचक ढंग से होता है। उनका विश्वास है कि दलाई लामा कभी नहीं मरता है। वह केवल शरीर बदलता है। उसकी आत्मा एक शरीर से निकलकर दूसरे शरीर में प्रवेश कर जाती है। वही आत्मा नवजात शिशु के रूप में पुनः जन्म लेती है। अतएव ऐसे शिशु के कुछ लक्षण सुनिश्चित कर लिए गए। दलाई लामा की मुत्यु के पश्चात लामाओं का एक समूह उसे ढूँढने निकलता है। तत्काल जन्मे किसी बच्चे में अपने निर्धारित लक्षण देखकर उसे दलाई लामा घोषित कर देता है। महल में रखकर उसका विशेष ढंग से पालन-पोषण किया जाता है। द्वितीय विश्व-युद्ध के आरंभ से कुछ पहले तत्कालीन दलाई लामा की मूत्यु हो गई तो उसकी गद्दी पर बिठाने के लिए तीन वर्ष की निरंतर खोज के बाद अभीष्ट शिशु मिला था, जिसे दलाई लामा घोषित किया गया। यह परम्परा अब भी जारी है।

अब तिब्बत पर चीन का अधिकार हो जाने से स्थिति बदल गई है। वहाँ लामाओं पर बड़े अत्याचार हुए। लामाओं के शासन का अंत हो गया। अतः दलाई लामा और उनके बहुत-से साथी भारत में निर्वासित जीवन बिता रहे हैं। वहाँ के नागरिक इस परिवर्तित परिस्थिति में भी शिक्षा प्राप्त करके आगे बढ़ने का प्रयास कर रहे हैं। अन्य क्षेत्रों में विकास कर रहे हैं। उनपर अब प्राचीनता का प्रभाव बहुत कम है। धार्मिक प्रवृति के लोग अपने निजी जीवन में धर्म का अनुकरण करते हैं।

शब्दार्थ और टिप्पणी

गगनचुम्बी	=	बहुत ऊँची	सदैव	=	हमेशा
दुर्गम	=	जहाँ जाना कठिन हो	भयावह	=	ख़ौफ़नाक, डरावना
अभाव	=	कमी	पर्याप्त	=	काफ़ी, यथेष्ट
दुर्गंध	=	बदबू	भीषण	=	सख़्त, भयानक, डरावना
धर्मावलम्बी	=	धर्म को माननेवाला	रोचक	=	दिलचस्प
आत्मा	=	रूह	लक्षण	=	अलामत, संकेत
घोषित	=	एलान किया हुआ	अभीष्ट	=	मतलूब, इच्छित
लोहे के चने चबाना	=	कड़ी मेहनत करना	सदृश	=	समान

दरिद्र	= ग़रीब	मठ	= साधुओं के रहने का स्थान
नवजात	= नया जन्मा हुआ	निर्वासित	= देश निकाला

अभ्यास

(क) इन प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

1. हिमालय शब्द का क्या अर्थ है ?
2. संसार की सबसे ऊँची चोटी का क्या नाम है ?
3. तिब्बत के निवासी अपने देश को क्या कहते हैं ?
4. कठिन चढ़ाई में क्या होता है?
5. तिब्बत में कौन-कौन-से पशु पाए जाते हैं ?

(ख) संक्षेप में उत्तर लिखिए :

1. तिब्बत कहाँ है ? तिब्बत के निवासी सारे संसार से अलग-थलग क्यों हैं ?
2. याक तिब्बत का सबसे महत्त्वपूर्ण पशु क्यों माना जाता है ?
3. तिब्बत में अन्न की उपज बहुत कम क्यों होती है ?
4. दलाई लामा किसे कहते हैं? उसका चुनाव कैसे होता है ?
5. तिब्बत के चरवाहे दरिद्र कैसे हो जाते हैं ?

(ग) कोष्ठक में दिए गए सही शब्दों पर सही (✓) का निशान लगाइए :

1. संसार का सबसे ऊँचा प्रदेश कौन-सा है। (चीन, तिब्बत, लद्दाख)
2. तिब्बत के निवासी सबसे अधिक क्या पीते हैं ? (दूध, शरबत, चाय,)
3. तिब्बत के लोग किस धर्म को मानते हैं ? (ईसाई धर्म, इस्लाम धर्म, बौद्ध धर्म)
4. तिब्बत के लोगों की भाषा क्या कहलाती है ? (नेपाली, चीनी, भोट)
5. कौन-सा नगर तिब्बत की राजधानी है ? (शिलांग, काठमांडू, ल्हासा)

षा-बोध

ऽ) इन मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

बच्चों का खेल, लोहे के चने चबाना, साँस फूलना,
गाल बजाना, हवा से बातें करना।

त्र) निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए :

बादल घिर आए और मयूर नाचने लगे।
तिब्बत के धर्मगुरु 'लामा' कहलाते हैं और वे मठों में रहते हैं।

उपर्युक्त दोनों वाक्य **संयुक्त वाक्य** हैं। जिस वाक्य में दो या दो से अधिक साधारण वाक्य ग्यय से जुड़े हों, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं। जैसे, बादल घिर आए। मयूर नाचने लगे। ये दोनों ग्य साधारण वाक्य हैं और इन्हें 'और' अव्यय जोड़कर संयुक्त वाक्य बना दिया गया है। इसी प्रकार ब्बत के धर्मगुरु 'लामा' कहलाते हैं। वे मठों में रहते हैं। ये दोनों वाक्य भी साधारण वाक्य हैं। इनमें ौर' अव्यय जोड़ने पर संयुक्त वाक्य बन गया।

पाँच संयुक्त वाक्य अपनी कॉपी पर लिखकर अपने शिक्षक को दिखाइए।

छ और काम

भारत में छह ऋतुएँ होती हैं। हर ऋतु दो माह की होती है। इन्हें याद कर लो —

1. चैत्र-वैशाख —— वसन्त ऋतु
2. ज्येष्ठ-आषाढ़ —— ग्रीष्म ऋतु
3. सावन-भादो —— वर्षा ऋतु
4. आश्विन-कार्तिक —— शरद ऋतु
5. अगहन-पूस —— हेमन्त ऋतु
6. माघ-फाल्गुन —— शिशिर ऋतु

अपने शिक्षक से मालूम कीजिए कि प्रत्येक ऋतु में मौसम कैसा होता है।

☆☆☆

पाठ – 27

मौलाना मुहम्मद अली 'जौहर'

संसार में जीने के लिए तो सभी आते हैं। मगर कुछ लोग अपने जीवन में सत्य और निष्ठा की प्रति मूर्ति बनकर मानवता की सेवा करते हैं। असत्य के सामने कभी नहीं झुकते। अपने मूल सिद्धान्तों से कभी समझौता नहीं करते। समय आने पर अपने प्राणों की आहुति देने से भी नहीं चूकते। ऐसे लोग मरकर भी अमर हो जाते हैं। इतिहास में इनके नाम स्वर्णाक्षरों में लिखे जाते हैं। ऐसे ही व्यक्तियों में मौलाना मुहम्मद अली 'जौहर' का नाम अग्रगण्य है।

हमारा देश भारत उस समय अंग्रेज़ों की गुलामी की ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ था। देशवासी अपमानित जीवन व्यतीत करने को विवश थे। देश की सारी सम्पत्ति लूटकर विदेश पहुँचाई जाती थी। देश की जनता अभाव की ज़िन्दगी जीने को वि‹ कर दी गई थी। अत: देशवासियों ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी। स्वतंत्रता की ल‹ तो अंग्रेज़ों के आने के बाद ही शुरू हो चुकी थी। लेकिन समय बीतने के साथ उसमें और अ‹ तीव्रता आती गई। स्वतंत्रता के इस महासमर में गाँधी जी के आगमन से पूर्व पूरे देश में दो व्यक्ति‹ की तूती बोलती थी। वे थे—शौकत अली और मुहम्मद अली। दोनों सगे भाई थे, इसलिए ‹ 'अली बिरादरान' या 'अली ब्रदर्स' कहा जाता था।

मुहम्मद अली का जन्म रामपुर के एक प्रतिष्ठित परिवार में 10 दिसम्बर 1878 ई. को हुअ‹ उनके पिता अब्दुल अली ख़ाँ रियासत रामपुर के एक फ़ौजी रिसाले के जमादार थे। 20 अग‹ 1880 ई. को हैज़ा रोग से उनका आकस्मिक निधन हो गया। मुहम्मद अली अपने पाँच भाइयों ‹ एक बहन में सबसे छोटे थे। अभी दो साल के भी नहीं हुए थे कि पिता का साया सर से उठ गया औ‹ अनाथ हो गए।

उनकी माँ का नाम आबादी बेगम था। आदर से लोग उन्हें 'बी अम्माँ' कहते थे। अद्वा

ोया इस विधवा माँ ने बड़े धैर्य और यत्न से छह बच्चों के लालन-पालन का बोझ अपने कंधों पर । लिया। उन्होंने बच्चों की शिक्षा-दीक्षा के लिए आभूषण भी बेच डाले। उन्होंने स्वतंत्रता संघर्ष में अपने बेटों के साथ बड़ा सहयोग किया। देश के सारे महान नेता उन्हें 'राष्ट्रमाता' के रूप में आदर थे।

प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान जब मुहम्मद अली जेल में थे तो उनकी माँ ने उनकी पत्नी को साथ कर पूरे देश में भ्रमण किया और चालीस लाख रुपये आन्दोलन के लिए एकत्र किए। वे बड़ी-बड़ी ाओं में जाकर भाषण भी देती थीं। उनसे बड़े-बड़े नेताओं को भी हौसला मिलता था।

पंडित सुन्दरलाल ने अपने एक लेख में लिखा है –

"1919 ई. में मुरादाबाद में सूबे की पोलिटिकल कांफ्रेंस डॉ. भगवान दास की अध्यक्षता में आयोजित हुई। मैंने 'असहयोग' का प्रस्ताव रखा। गाँधी जी मौजूद थे। पुराने नेताओं ने विरोध किया। बी अम्माँ आईं। उन्होंने तक़रीर की और प्रस्ताव पास हो गया। डॉ. भगवान दास ने कहा कि जब स्वयं 'भारत माता' समर्थन कर रही हैं तो मैं भी समर्थन करता हूँ।"

ऐसी माँ की गोद में पलकर मुहम्मद अली जवान हुए थे। वे स्वयं गवाही देते हैं कि मैंने जो छ पाया है अपनी माँ से पाया है। बी अम्माँ एक निष्ठावान मुसलिम महिला थीं। उन्होंने हज भी किया । माँ ने अपने बेटे का चरित्र-निर्माण इस तरह किया था कि वे जनता के दिलों के बादशाह और ़ाम के सच्चे सिपाही बन गए थे।

मुहम्मद अली की प्राथमिक शिक्षा रामपुर के स्कूल में हुई। क़ुरआन मजीद और मकतब की सी तालीम पूरी होने के बाद रामपुर के एक अंग्रेज़ी स्कूल में उनका नाम लिखवाया गया। कुछ ने उसमें पढ़ने के बाद उसी वर्ष 1888 ई. में अपने भाई शौकत अली के पास बरेली चले गए। ाई 1888 ई. से बरेली हाई स्कूल में उनकी शिक्षा शुरू हुई। बरेली में दो साल पढ़ने के बाद वे ीगढ़ के 'मदरसतुल-उलूम' में पढ़ने चले गए। वहाँ अंग्रेज़ी शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध था। यही लेज आगे चलकर 'अलीगढ़ मुसलिम विश्वविद्यालय' बना। अलीगढ़ में उनके बड़े भाई ाफ़िक़ार अली ख़ाँ पहले से मौजूद थे। 1890 ई. में मुहम्मद अली, शौकत अली और नवाज़िश ी — ये तीनों भाई भी अलीगढ़ में दाख़िल हो गए।

मुहम्मद अली 1898 ई. में अलीगढ़ से बी. ए. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए और विश्वविद्यालय प्रथम स्थान प्राप्त किया। उस समय अलीगढ़ कॉलेज इलाहाबाद विश्वविद्यालय में था। इसलिए

इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने उन्हें 1899 ई. में बी. ए. की डिग्री प्रदान की। अलीगढ़ से बी.ए. व के बाद 1899 ई. में ही उनके भाई ने क़र्ज़ लेकर उच्च शिक्षा के लिए उन्हें लन्दन भेज दिया। उ समय 'बी अम्माँ' ने मुहम्मद अली को गले लगाया और नसीहत की – "बेटा! इस्लाम और ख़ान की इज़्ज़त पर धब्बा न लगाना। जाओ, ख़ुदा हाफ़िज़!"

नवम्बर 1899 ई. में उन्होंने ऑक्सफ़ोर्ड में प्रवेश पाकर सिविल सर्विस की तैयारी शुरू व लेकिन इसमें उन्हें सफलता नहीं मिली। ऑक्सफ़ोर्ड में रहते हुए उन्होंने लैटिन, जर्मन और अरबी भ सीखी। मुहम्मद अली ऑक्सफ़ोर्ड (लन्दन) में भी तुर्की टोपी पहनते और रमज़ान शरीफ़ के पूरे र रखते और नियमित रूप से नमाज़ भी पढ़ते थे।

मुहम्मद अली 12 दिसम्बर 1901 ई. में स्वदेश लौट आए। रियासत रामपुर में 14 जन 1902 ई. में शिक्षा विभाग में स्कूल इंस्पेक्टर के पद पर 300 रुपये मासिक वेतन के साथ उन नियुक्ति हुई। 5 फ़रवरी 1902 ई. में रामपुर में ही अमजदी बेगम से उनका विवाह हुआ। कुछ स बाद सेवा से छुट्टी लेकर बी. ए. ऑनर्स की परीक्षा देने वे लन्दन चले गए। मॉडर्न हिस्ट्री से 1902 ई. ऑनर्स किया और 28 जुलाई 1902 में स्वदेश लौट गए। रामपुर की सेवा में आंतरिक बाधा उत्प होने के कारण 1903 ई. में वहाँ से सेवानिवृत्त होकर इटावा में शौकत अली के साथ रहने लगे उ वहीं वकालत की परीक्षा की तैयारी शुरू की। बहुत कम समय की तैयारी के कारण वे उत्तीर्ण न सके। वे नौकरी की तलाश में लगे रहे।

कुँवर फ़तह सिंह—बड़ौदा रियासत के युवराज—से लन्दन में मौलाना के गहरे सम्बन्ध उनकी सिफ़ारिश पर महाराजा गायकवाड़ बड़ौदा ने उनको सिविल सर्विस में उच्च पद पर नियु किया। उनकी योग्यता और कर्मठता से महाराजा को बड़ा लाभ पहुँचा। मौलाना को अन्य रियासतों से भी उच्च पद के लिए आमंत्रण मिले। लेकिन देश-विदेश की तत्कालीन राजनीति परिस्थिति को देखते हुए देश-सेवा हेतु उन्होंने नौकरी न करने का निश्चय किया और 1910 ई. अन्त में उन्होंने बड़ौदा की नौकरी छोड़ दी।

1910 से 1913 तक यूरोपीय देश मुसलिम देशों पर लगातार आक्रमण कर रहे थे। मौलाना इस अन्याय का खुलकर विरोध किया और इंगलैण्ड की सरकार पर दबाव डालते रहे कि वह ऐसा करे। उन्होंने अपनी आवाज़ जनता तक पहुँचाने के लिए भारत की तत्कालीन राजधानी कलकत्ता एक अंग्रेज़ी साप्ताहिक पत्र 'कॉमरेड' निकाला। 'कॉमरेड', का पहला अंक 14 जनवरी 1911 ई. प्रकाशित हुआ। शीघ्र ही देशभर में उनकी धूम मच गई। राजधानी दिल्ली स्थानांतरित होने के ब 1913 ई. में कॉमरेड का दफ़्तर भी दिल्ली आ गया और उसी वर्ष से उर्दू में भी दैनिक 'हमद

कालना शुरू किया। उनकी अंग्रेज़ी भाषा इतनी अच्छी थी कि अंग्रेज़ भी अपना सिर धुनते थे। मरेड की फाइलें वे अपने पास सुरक्षित रखते थे। उर्दू में लेख लिखने के अतिरिक्त बड़ी उम्दा शायरी करते थे।

उनके वक्तव्यों, भाषणों और लेखों से जनता में नई चेतना का संचार होता था। इसलिए उनको ए-बार नज़रबन्द किया गया और जेलों में डाला गया। कॉमरेड की ज़मानत भी ज़ब्त की गई। फिर झुके बिना वे सारी कठिनाइयाँ झेलते रहे।

तुर्की की ख़िलाफ़त मुसलमानों की अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक और राजनीतिक संस्था थी। अंग्रेज़ों ने ा समाप्त करने की योजना बनाई। मुसलमानों में बड़ी बेचैनी पैदा हुई। ख़िलाफ़त की रक्षा के लिए ख़लाफ़त कमेटी' बनाई गई। ख़िलाफ़त कमेटी ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध ज़ोरदार आन्दोलन चलाया। सन् 19 ई. में जेल से रिहा होते ही मुहम्मद अली घर न जाकर सीधे अमृतसर गए। वहाँ कांग्रेस का धिवेशन चल रहा था। वहीं पहली बार कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की। ख़िलाफ़त आन्दोलन से देश अंग्रेज़ों के विरुद्ध एक नई जागृति पैदा हुई। अंग्रेज़ी सरकार के विरुद्ध असहयोग का आन्दोलन भी ना। देश की युवा पीढ़ी को आत्मनिर्भरता की शिक्षा देने के लिए जामिआ मिल्लिया कॉलेज की ापना 1920 ई. में की गई। मुहम्मद अली ने उसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वहाँ उन्होंने एक नई क्षा-नीति की बुनियाद रखी।

1923 ई. के बाद दोनों आन्दोलन असफल हो चुके थे। अंग्रेज़ों ने हिन्दू-मुसलिम एकता भंग ने का षड्यंत्र रचा। शुद्धि-संगठन और कुछ अन्य संगठनों ने मुसलिम-विरोधी कार्रवाइयाँ तेज़ कर । निराशा के घटाटोप अंधेरे में उन्होंने देशवासियों का मार्गदर्शन किया। हिन्दू-मुसलिम एकता को उन ों बड़ा आघात पहुँचा था। उन्होंने एकता पैदा करने का अथक प्रयास किया। लगातार बीमार रहने कारण उनका स्वास्थ्य बहुत गिर चुका था। वे जेल में थे कि उनकी बेटी आमिना बहुत बीमार हो । बचने की उम्मीद भी कम हो गई। जेल में होने के कारण वे विवश थे। उन्होंने अल्लाह पर भरोसा या और दुआ की। उनकी दुआ का अंतिम पद (शेर) यह है –

"तेरी सेहत हमें मतलूब है लेकिन उसको,
नहीं मंज़ूर तो फिर हमको भी मंज़ूर नहीं।"

भारतीय नेताओं की माँगों पर विचार करने के लिए अंग्रेज़ी सरकार ने लन्दन में 1930 ई. में लमेज़ कांफ्रेंस बुलाई। मौलाना मुहम्मद अली बीमार होने के बावजूद उसमें भाग लेने के लिए तैयार गए। अपने एक मित्र को उन्होंने पत्र लिखा– "गोलमेज़ कांफ्रेंस में साम्प्रदायिक समझौते की शिश करूँगा और चाहूँगा कि भारत के मुसलमानों की जायज़ माँगें क़ानूनी तौर पर स्वीकार कर ली

जाएँ। अगर इसमें सफलता मिल गई तो आज़ादी की मंज़िल तक पहुँचने के लिए जो संघर्ष होगा उर सबसे पहला व्यक्ति मैं होऊँगा। मैं मुसलमानों को और अपने आपको जंगे-आज़ादी में आगे-अ रखूँगा।'' वे आज़ादी को मौलिक अधिकार समझते थे।

मौलाना मुहम्मद अली ने गोलमेज़ कांफ्रेंस में भाग लिया। उन्होंने अपने अंतिम भाषण कहा –

> ''मैं इस समय एक उद्देश्य से यहाँ आया हूँ। मैं अपने देश सिर्फ़ उसी हालत में वापस जाऊँ जबकि आज़ादी का परवाना मेरे हाथ में हो। मैं एक ग़ैर मुल्क में मरने को प्राथमिकता दूँ जबतक कि वह स्वतंत्र देश है। अगर आप मुझे आज़ादी नहीं देंगे तो फिर आपको यहाँ मु क़ब्र के लिए जगह देनी होगी।''

उनकी यह बात सत्य सिद्ध हुई। 14 जनवरी 1931 ई. को लंदन ही में उनका देहांत हो गय अरब नेताओं के आग्रह पर उनके शव को फ़िलस्तीन में दफ़नाया गया। देश-विदेश के बड़े-ब राजनेताओं ने उनको श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं।

शब्दार्थ और टिप्पणी

निष्ठा	= श्रद्धा, विश्वास	प्रतिमूर्ति	= प्रतिमा
आहुति	= क़ुरबानी, बलिदान	अग्रगण्य	= प्रधान, श्रेष्ठ
सम्पदा	= दौलत	जागृत	= जागा हुआ
साम्प्रदायिक	= फ़िरक़ावाराना	तीव्रता	= तेज़ी
समर	= युद्ध	आकस्मिक	= अचानक
उत्तीर्ण	= कामयाब, पास	दयनीय	= क़ाबिले-रहम, दया के योग्य
अधिवेशन	= इजलास	यत्न	= कोशिश
आभूषण	= ज़ेवर	प्रस्ताव	= क़रारदाद, इच्छा प्रकट करन
निष्ठावान	= मुख़लिस	नियमित रूप से	= नियम के मुताबिक़ बाज़ाब्ता
सेवानिवृत्त	= नौकरी से छुट्टी	कर्मठता	= काम में लगन और दक्षता
तत्कालीन	= उस समय का	योजना	= मंसूबा
आघात	= चोट	मौलिक	= बुनियादी
तरजीह	= प्राथमिकता	श्रद्धांजलि अर्पित करना	= श्रद्धा प्रकट करना

अभ्यास

क) निम्नलिखित प्रश्नों का एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. स्वतंत्रता के महासमर में गाँधी जी के आगमन से पूर्व किन दो व्यक्तियों की तूती बोलती थी ?
2. मुहम्मद अली जौहर का जन्म कब और कहाँ हुआ ?
3. लोग 'बी अम्मा' और 'राष्ट्रमाता' किसे कहते थे ?
4. अंग्रेज़ों के विरुद्ध देश में नई जागृति किस आन्दोलन से पैदा हुई ?
5. हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए मुहम्मद अली जौहर ने क्या किया ?

ख) संक्षेप में उत्तर लिखिए :

1. मुहम्मद अली जौहर की प्रारंभिक शिक्षा कहाँ हुई ?
2. उनकी माँ का उनकी शिक्षा-दीक्षा में क्या योगदान रहा ?
3. मुहम्मद अली जौहर ने अंग्रेज़ी भाषा में कौन-सा अख़बार निकाला और क्यों ?
4. मौलाना जौहर का देहान्त कब और कहाँ हुआ ?
5. मुहम्मद अली को कहाँ और किसके आग्रह पर दफ़नाया गया ?

ग) कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर ख़ाली जगहों को भरिए :

(हमर्दद, धब्बा, अंग्रेज़, नेता, आज़ादी, क़ब्र, भारतमाता, साम्प्रदायिक, परवाना)

1. जब स्वयं .... समर्थन कर रही हैं, तो मैं भी समर्थन करता हूँ।
2. देश के सारे महान .... उन्हें राष्ट्रमाता के रूप में आदर देते थे।
3. इस्लाम और ख़ानदान की इज़्ज़त पर .... न लगाना।
4. मुहम्मद अली जौहर ने उर्दू में भी एक दैनिक .... निकाला।
5. मुहम्मद अली जौहर की अंग्रेज़ी भाषा इतनी अच्छी थी कि .... भी अपना सिर धुनते थे।
6. गोलमेज़ कांफ़्रेंस में .... समझौते की कोशिश करूँगा।
7. अगर इसमें सफलता मिल गई तो .... की मंज़िल तक पहुँचने के लिए जो संघर्ष होगा उसमें सबसे पहला व्यक्ति मैं होऊँगा।

8. मैं अपने देश सिर्फ़ उसी हालत में वापस जाऊँगा, जबकि आज़ादी का .... हाथ में हो।

9. अगर आप मुझे आज़ादी नहीं देंगे तो फिर आपको यहाँ मुझे .... के लिए जग देनी होगी।

भाषा-बोध

(क) निम्नलिखित मुहावरों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

प्राणों की आहूति देना, तूती बोलना, स्वर्णाक्षरों में लिखा जाना,
सिर से साया उठ जाना, इज़्ज़त पर धब्बा लगना।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में से सकर्मक और अकर्मक क्रियाएँ छाँटकर अपन कॉपी में लिखिए :

सलीम आम खाता है।
नईमा क़ुरआन पढ़ती है।
सलीम ने मस्जिद की सफ़ाई की।
नबील लिख रहा है।
रज़िया आती है।
अब्दुर-रहीम क्रिकेट खेलता है।
ताहिरा नमाज़ पढ़ती है।
साबिरा खाना पकाती है।

☆☆☆